श्रीविजयराघवखण्ड आल्हा

सुन्दरकाण्ड

जिसमें

श्रीहनुमान्जीका लङ्कागमन, जानकीमिलाप व वार्त्तालाप तथा वाटिकाभञ्जन व लङ्कादहनादि कथा आल्हाकी रीतिपर छन्दप्रबन्ध में वर्णित है ॥

जिसको

श्रीमान् भार्गवकुलाम्बुजप्रकाशक मार्त्तण्ड मुंशीनवलकिशोरजी के पुत्र श्रीमुंशीप्रयागनारायण की आज्ञानुसार उन्नाम प्रदेशान्तर्गत मसवासीग्रामनिवासी पण्डित बन्दीदीन दीक्षितने श्रीरामरसरसिक व आल्हाके उत्सुक पुरुषोंके अवलोकनार्थ निर्मित किया ॥

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९२१ ई० ॥

दूसरीबार

154

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ विज्ञापन ।

रामबाम दिशि बाम जानकी शोभा धाम रूपगुणवान ।
लषण दाहिनी दिशिराजत शुचि जनकल्यान करनयह ध्यान ॥
ध्याय गजानन गुरुगोविंद पद शेश महेश सिद्धि आगार ।
बन्दि अनंदित वह गावत कहि ज्यहिविधि भयोग्रंथ अवतार ॥
सुयश उजागर गुण नागर वर विदित जहान मध्य मतिधाम ।
सुखद भार्गवकुल भाकर इव नवलकिशोर नाम अभिराम ॥
शहर लखनऊ के बासी शुचि शील प्रताप तेजकी खानि ।
जक्क विदित है यंत्रालय ज्यहि लक्ष्मी अप्रमान अधिकानि ॥
इक दिन समया लगि आई असि जमक्यो महासघन दरबार ।
सचिव सलाही सतराही सब बैठे निकट बुद्धि आगार ॥
वर्षा ऋतुको रह औसर वह नभ घन घटा छटा रहि छाय ।
वही मुहल्ला महँ समया वहि आल्हारह्यो एक जन गाय ॥
कान शब्द सो पर्‍यो सबन के तब अस लगे फेरि बतलान ।
अब रुचि पुरुषन की आल्हा पर है बहु परत बात यह जान ॥
जो यहु आल्हा जन गावत हैं ताको ना कछु ठीक ठिकान ।
लिख्यो न कतहूँ क्यहु ग्रंथनमहँ नाकछु मिलत ठीक परमान ॥
छाँड़ि नरायण यश नरयश को गावब सुनब नीक कछु नाहिं ।
इतको स्वारथ परमारथ उत कछु न दिखाय परत यहिमाहिं ॥
यतन चाहिये अस याकी अब होवै यही भांति को गान ।
पै यश होवै नारायण को जासे दुहूं ओर कल्यान ॥
अस विचारि कै उर मुंशी जी कीन्ह्यो क्षणक हृदय महँ ध्यान ।
पुनि तदनंतर वहि औसर पर हँसि अस उचित बातबतलान ॥
एक बार्ता हम शोची चित जो कहुँ अस उपाय बनिजाय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तौ यहि आल्हाको गावब फिरि जगसे सहज माहिं उठिजाय ॥
इतको स्वारथ परमारथ उत गावत सुनत माहिं अभिराम ।
लोक सिधरिहैं दूउ नीकी विधि ह्वैहै एक पंथ दुइ काम ॥
कथा मनोहर रामायणकी तुलसी दास कीनि निर्मान ।
जा महँ उत्तम यश रघुबर को जग को करन हार कल्यान ॥
जौने ढँग पर यहु आल्हा है सोई छंद बनाई जाय ।
फिरि मुद्रित ह्वै यंत्रालय महँ जाहिर कीन जाय जग भाय ॥
सुनै सुनावै अरु गावै सब होवै जगत केर उपकार ।
यहि उपाय ते बढ़ि दूसर अरु कोई देखि परत नहिंयार ॥
मुंशीजी को यह सम्मत शुभ सबको हृदय माहिं प्रियलाग ।
तब वहि औसर पर मुंशीजी मोसन कह्यो सहित अनुराग ॥
यहि रामायण को विरचौ तुम आल्हा रीति प्रीति सरसाय ।
यहिके बदले महँ तुम कहँ हम मुद्रा देब पांच शत भाय ॥
यह अनुशासन श्रीमुंशीको मैं स्वइ लीन शीश पर धार ।
लग्यो बनावन रामायण को अपने ज्ञान बुद्धि अनुसार ॥
भयो न पूरण यह आल्हा सब बीचहि हाल कीन असराम ।
स्वजन सुखारी उपकारी पर नवलकिशोर गये सुरधाम ॥
पुनि तदनंतर श्रीमुंशी के पूत सपूत बुद्धि आगार ।
सत मत पूरे द्युति रूरे अति सज्जन गुणिन मानदातार ॥
क्षमा छबीले युत शीले बहु दायक संत द्विजहि सत्कार ।
मान सरोवर श्री भार्गव कुल तामहँ अमल कमल अवतार ॥
प्रागनरायन सुखदायन अति तिन वह पूर कीन सबकाम ।
जस अभिलाषा रह मुंशीकी तैसे भयो सकल इतमाम ॥
सप्तकाण्ड शुचि रामायण स्वइ पूरण यथायोग्य बनवाय ।
निज यंत्रालय महँ मुद्रित करि दीन्ह्यों जगत रामयश छाय ॥
मति समभाष्यों यह रघुपति यश जस कछुहती चित्तकीसाध ।
सुनैं सुनावैं जन गावैं जे ते मम क्षमा करैं अपराध ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सवैया । जानत काव्य न एकहु अंग न ढंग है छंद प्रबंध बनाइबो ।
है बल बुद्धि विवेक नहीं विधि जानत नाहिं न लोक रिझाइबो ॥
संग लह्यो न कहूं गुणियान को बंदिनचातुरी को दरशाइबो ।
राह बताय दई गुरु एक यथा मति गोबिंद को गुण गाइबो ॥

(कविवंशतथानामग्रामवर्णन)

छंदककुभा

अवध देश महँ शुचि प्रदेश जाहिर उन्नामा । त्यहि अन्तर्गत बसत लसत मसवासी ग्रामा ।
चारि वर्ण मति रास बास जहँ करत घनेरा । धर्म धुरी शुभ कुरी शिव पुरी सम द्युति हेरा ॥

सवैया । दक्षिण में सुर आपग राजत धारसो नाशत भार धराका ।
पूरब कोण तड़ाग तटस्थ अनंदित मंदिर श्री दुरगाका ॥
पश्चिम नंद अधीश औ उत्तर गोकुलनाथ धरे वर नाका ।
मंदिर मंजु रमापति को सुलसै बिलसै मधि ग्राम के बांका ॥

दोहा । तौन ग्राम अभिराम में बनो सोरहू धाम ।
पुरिखन तहँ वर बास लिय जानि सुथल अभिराम ॥

छंदककुभा

ललऊ नाम ललाम अहै प्रपितामहँ केरो । रामदीन मति बीन पितामह श्री शिवचेरो ॥
भागूलाल बिशाल अहै मम पितुकर नामा । चंदीदीन प्रबीन मोर पितृव्य ललामा ॥
अग्रगण्य जे भये मनीषिन महँ त्यहि पुरमें । श्रीमद्रामप्रसाद बिबुध एकहि बुध कुरमें ॥
तिनसे विद्या लह्यो अनूपम गुरू बनायो । श्रीमद्रामप्रसाद सुयश उज्ज्वल तहँ छायो ॥
बंदीदीन सुनाम धरयो गुरु मोर बिचारी । विप्रवंश अवतंश दीक्षितास्पद अधिकारी ॥
शिवनारायण गुरू मोर त्यहि थल विख्याता । संभव वंश त्रिपाठि विप्रकुल प्रवर कहाता ॥
चारि वेद षट शास्त्र कथनमहँ जिन अतिशक्ती । जन अनंद ब्रजचंद चरणकी हियबहुभक्ती ॥
अष्टादशहु पुराण जासु जिह्वा पर छाजैं । काव्यमाहिं जनु कालिदास अस दूसर राजैं ॥
गान विधान निधान चित्र एकही बनावैं । कथाकहनके समय द्वितिय व्यासहि समभावैं ॥
तिन दिय विद्यादान चरणसेवक शिशुजानी । परमोदार अपार बुद्धि श्री गुरु विज्ञानी ॥
यह रामायण रची तासु पद पंकज दाया । भाषा छंद प्रबंध माहिं रघुपति यश गाया ॥
भूल चूक लखि क्षमहिं दोष मतिमान सुजाना । हौं मैं अति निर्बुद्धि नहीं कविता कर ज्ञाना ॥

दोहरा । संवत् शशि शर नंद चंद में भयो ग्रंथ अवतार ।
पुनि गुण शायक नन्द चन्द में भई पूर्णता यार ॥

मत्तसवैया

याको पिंगल महँ भाषत कहि मात्रिक मत्त सवैया नाम ।
मात्रा इकतिस को इकपद है जानत छंद विज्ञ मति धाम ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रीति यथावत लहि आल्हाकी वहि धारणा माहिं कियगान।
जासे गावहिं सब सज्जन जन करिकै साज बाज को ठान॥
यह रामायण संपूरण करि जस मति दई शारदा माय।
प्रागनरायण की अनुमति लहि बंदीदीन बखान्यो गाय॥
श्रीरघुनंदन की कीरति यह जो कोउ पढ़ै सुनै मन लाय।
कलिमल नाशै परकाशै बुधि ऋधि सिधि बसैभौनत्यहिआय॥
पर्वपर्व महँ शुचि मानुष जो करि है श्रवण याहि धरि ध्यान।
पाप नशैहै सुर पुर पैहै ह्वैहै सदा तासु कल्यान॥
पितृ श्राद्धमहँ जो सुनिहै यहि करि एकाग्र चित्त मतिमान।
मुक्ति होइहै त्यहि पितृन की बसिहैं जाय अमर अस्थान॥
तन मन इन्द्रिन को पावन करि दिन महँ करै जौन यहिगान।
दिन कृत पातक त्यहि मानुषके विनशैं अवशि सत्यपरमान॥
करै निशामहँ जो पातक नर औ यहि श्रवण करै मन लाय।
देर न लागै अघ भागै त्यहि प्रापत होय सिद्धि कर आय॥
विप्र जो बांचै यहि मंशाकरि होवै महा ज्ञान आगार।
सुनै जो भूपतियहि चितहितकरि लहैसो बिजययुद्धअधिकार॥
नारि गर्भिणी जो सुनिहै यहि पैहै तनय सुष्ठु मतिमान।
स्वर्ग मँगइया स्वर्गौ पैहैं जैहैं हर्षि देव अस्थान॥
कन्या सुनिकै पति पैहै शुभ बंध्या अवशि पाइहै बाल।
संपति अर्थी संपति पैहैं गैहै याहि जौन सब काल॥
बुध पारायण जो बँचिहैं यहि वक्ता होयँ ज्ञान की खानि।
जो कोउ सुनि है यह राघव यश होइ है महा द्रव्य को दानि॥
कामधेनु कहि यहि भाषत सब याके पढ़े होय अति ज्ञान।
कीरति बाढ़ै त्यहि दुनियां महँ होवै सब प्रकार कल्यान॥

इति

(मसवासी निवासी परिडत
बंदीदीन कवि)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ श्रीविजयराघवखंड ।

सुन्दरकाण्ड प्रारम्भ ॥

गणपतिफणपति पदबन्दनकरि शुकसनकादिआदिकबिध्याय ।
बुद्धिबिशारद श्रीशारद भजि भाषत राम सुयश शुभगाय ॥
मैं पदबंदौं हरिबाहिनिके दाहिनि सदा दास हित जान ।
सिधि उतसाहिनि अनुकंपाकर गाहिनि कर कृपान बरसान ॥
दुर्गतिनाशिनि परकाशिनि बुधि बिद्याबर बिबेक बिज्ञान ।
मोदबिलासिनि गिरिबासिनि बिभु भासिनि सर्बकाल कल्यान ॥
स० शुभ्रकला कुशला सब काल कृपाल सदा त्रयकाल कि ज्ञाता ।
ज्योति अनादि न आदिलहै कोउ सेवत सिद्ध सुरेश बिधाता ॥
स्वेच्छावतारिणि धारिणि रूप अनूप अजाबिरजा गिरिजाता ।
बंदि अनंदित ध्यावतहै त्यहि जोबिधि अण्ड अखण्ड किमाता ॥
सबिधिमनावों गुणगावों तुव ध्यावों चरण शरण सुखदान ।
पावों उत्तम सिधि बिद्या बुधि दे बरदान बीर हनुमान ॥
स० अंजनिपूत अकूतबली बहुबूत महामजबूत सुअंगी ।
राघवदूत प्रभातन पूत महामति नूत न सेवक संगी ॥
धीर गँभीर मनोजव बीर समीर सो बेग प्लवंग कलंगी ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होहु सहाय दया उरलाय बनायकै बंदि बिनै बजरंगी॥
लैकरमुन्दर सत्त्वसमुन्दर लंघिसमुन्दर एक फलंकै।
सीय निहारिकै शत्रुसँहारिकै बागउजारिकै जारिकै लंकै॥
बोधदै बामहिं शोधदै रामहिं कैप्रभुकाम लियो यश अंकै।
ध्यावत तासुबली निरशंकै सदा अकलंकै सुबानर बंकै॥

बंदि शुभंकर शिवशंकर पद बोलीं शिवा सबिधि हरषाय।
कथा मनोहर किष्किन्धाकी प्रभु हम सुनी गुनी मनलाय॥
आनँद उमग्यो बहुहिरदय महँ भ्रमतम भग्यो जग्यो शुभभास।
लग्यो लालची चितचाखन महँ रघुपति चरित सुधा सुखरास॥
श्रवण अघाने नहिं सुनि सुनि यश सुंदर सियारमण को स्वामि।
लगी लालसा स्वइ सुनिबे महँ बर्णन करहु तौन बृषगामि॥
सुनि असबानी शिवरानी की मानी महा मोद मनमाहिं।
बहु सन्मानी कहि बानी मृदु तुम सम प्रिया धन्य कोउ नाहिं॥
तुम रुचि आनी धनुपानी के शुभयश सुनन माहिं मनलाय।
परम सयानी अबजानी मैं तुव हिय उदय भये बरभाय॥
प्रश्न सुहानी म्वहिं नीकी बिधि पूंछ्यो प्रभु चरित्र सुखसार।
धन्य भवानी मति तेरी कहँ ज्ञानी परम बुद्धि आगार॥
जस अभिलाषा तुम ठानी हिय सानी रामभक्ति रसमाहिं।
तस आनन्दित मैं भषिहौं सब रखिहौं तनिक गोय कछुनाहिं॥
यहि भवसागर भ्रम बागर महँ नाहिंन अन्य पदारथ सार।
जीव उधारन अरुतारन हित जस कछु रामचरित आधार॥

स० पाय मनुष्य शरीर न जैं रघुबीरको धीर चरित्र बखानो।
भक्ति समीर भखो न हृदय न कखो हरि तीरथ तीरपयानो॥
धीर धखो न हखो परपीर पखो भवभीर बिषय रससानो।
मानो सही सकआनो नहीं नर सो खर कूकर शूकर जानो॥

यहि बिधि कहि शिव शिवरानी ते बानी परम सुधारस सार।
करि धनुपानीको सुमिरण उर भाषण लगे चरित्र उदार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनुप्रिय आनँद सों रघुबरकी उत्तम कथा यथा मतिभाषि।
तोहिं सुनैहौं सुखपैहौं उर गैहौं स्वामि चरित अभिलाषि॥
याज्ञवल्क मुनि भरद्वाज प्रति भाष्यो यथा गरुड़सन काग।
अवध पुरन्दर को सुन्दर यश कहिहौं स्वई सहित अनुराग॥
प्रथम सुनाई शिशुक्रीड़ा पुनि गाई सबिधि ब्याह उत्साह।
फिरि बतलाई राजतिलककी जसकछु क्रिया कीनि नरनाह॥
गवनभवनते बन भाषा पुनि राखा कछु दुराय हम नाहिं।
पुनि अभिलाषा सह भाषा वह जो प्रभुचरित कीन बनमाहिं॥
हरण जानकी को बरणा पुनि हरणा हतन कीन जिमि राम।
बिरह बेदना कहिगाई पुनि खग संग्राम गमन सुर धाम॥
सिय बियोग महँ रघुनंदन कर बर्णन कीन बिरह सबिधान।
मिलब सुनावा कपिनायक कर बालिसुकण्ठ युद्ध घमसान॥

कु० भाष्यो राम सुजान जिमि गह्यो शरासनबान।
किष्किन्धाधिप बालिकर किह्यो प्रान अवसानं॥
किह्यो प्रान अवसान ज्ञान ताराकहँ दीन्ह्यो।
अमर स्थान पठाय बालि नृप सुगलहि कीन्ह्यो॥
रघुपति बिपतिनिहारि लषणजिमि कपिपर माख्यो।
तुव रुचि करि प्रतिपाल हालसो सब हम भाख्यो॥

गये बँदरवा सिय ढूंढ़न जिमि बरण्यो चरित तौन सब भांति।
तिया तपस्विनि पुनि भेंटे जिमि कीन्ह्यो मुलाकाति संपाति॥
कछु न दुरावा सब गावा हम गिरिजा तुव प्रसन्नता हेतु।
अति सुख छावा बहिरयावा दुख पावा फेरिकहन कर नेतु॥
सुनो अगारी अब भारी यश करिचित सावधान धरि ध्यान।
सुन्दर सुन्दरको कौतुक जिमि लंक निशंक गये हनुमान॥
जामवंतकी सुनि बानी बर आनी हृदय मोद हनुमान।
करि धनुपानी को सुमिरण उर लगे अशंक बंक बतलान॥
मैं अब गमनत हौं लंका को भाइउ सुनौ हमारी बात।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जनि अकुलायो भयलायो कोउ रह्यो सचेत सजग दिनरात ॥
जबलगि लौटौं नहिं लंकाते मैं अवलोकि सबिधि सिय माय ।
तबलगि परख्यो रहिसागर तट दुख सहिकंद मूल फलखाय ॥
आवत आवत मुद मोरे मन लावत यही हृदय अनुमान ।
अवशि पाइहौं सुधि सीताकी कीन्हे लंक मध्य प्रस्थान ॥
शुभ्र महूरत है अवसर यहि शकुनौ नीक नीक दरशायँ ।
असकहि सबके पदबंदन करि ह्वैगे फूलि बैल की नायँ ॥
रामचंद्र पदहिय धारणाकरि गमने मन अनंद सरसाय ।
मारि कुदक्का यक लक्कासम पर्बत उपरगये चढ़ि धाय ॥
पाउँ टिकावत वहि पर्बत की अद्भुत दशा भई खगराज ।
हालन लाग्यो चौंगिर्दा ते मानहुँ परी इन्द्रकी गाज ॥
अगणित पादप गिरि गिरिपरगे झरिफल फूलगये बहुपाटि ।
लागीं बहिबे जलधारैं बहु जड़ लगगई दरारैं फाटि ॥
अंदरकंदरके बासी सब चिघरन लगे जीव बिकराल ।
त्रिपति अकारण यह आईकिमि जानततनक नाहिंकोउहाल ॥
अमित तपस्वी अरु बिद्याधर गंधर्बादि सिद्ध समुदाय ।
करैं बसेरा जे पर्बत पर तिन उर गई सनाका छाय ॥
अस अनुमान्यो तिन सबहिन ने फाटो चहत धराधर आज ।
प्रान जानलै ते भागे सब त्यागे करनहार जे काज ॥
तोंबी तोंबा ह्वइँ छाँड़े सब सोंटा लँगोटा दीन बहाय ।
आसन बासन बिसराये सब धाये महा हृदय भयलाय ॥
भूलि सुमिरनी का फेरबु गा माला धरी रही नहिं हाथ ।
क्यहिक्का जपु तपु गपुआने से ताने चले धारि नभपाथ ॥
कौतुक जान्यो जब हनुमत कर तब कछु धीर धरी मनमाहिं ।
तबौं न भागा भय हिरदयते धकधकि मिटी एक क्षननाहिं ॥
लगे निहारन टिकि अंबर ते बिकृत बात जात कर गात ।
मेरु मंहेन्द्रौते दूनातन जात पताल लगत गिरिलात ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देव कन्यका गंधर्बिनि गण बिद्याधरी किन्नरी बृन्द।
मारुतनंदन को बंदन करि निरखैं गगन मगन आनन्द॥
लगी बतावन फिरि आपस महँ बहिना सुनो हाल इनक्यार।
येहैं पायक रघुनायक के अति बल खंभु शंभु अवतार॥
देह जगमग... गजगमगसमलगभगनभग ज्योति मिलिजात।
कंचन खंभा सम जंघा द्वउ रंभा खंभ सरिस द्वउ हाथ॥
अति मति मंदर तन बंदर सम हनुमत नाम पराक्रम धाम।
जात अशंका पुरलंका कहँ हेरन राम बाम के काम॥
चाहत लंघन ये समुद्र अस जैसे क्षुद्र तलैया ताल।
हाल निहारो अब इनकर तुम डारौ हृदयजनित भय ख्याल॥
यहि बिधि बातैं करि आपुस महँ रोकें निज निज यान बिमान।
लखैं दृगनते मगन गगन ते जो कछु चरित करत हनुमान॥
त्यही समइया के अवसर महँ रोम कँपाय बीर बरियार।
गर्जे बादर सम उच्चस्वर कादर भगे हजारन यार॥
पूंछ हिलायो बिस्तारित करि जस धरि गरुड़ हिलावे सांप।
उछलन चाह्यो पुनि पर्बतते अतिबल बेशुमार परताप॥
दुःखनिकंदन रघुनंदन के बंदन कीन अमल द्वउ पायँ।
उड़े सड़ाका भरि पर्बत ते जस नभ नभग बेग गति जायँ॥
जौने पर्वत पर धारैं पद सो धँसि तुरत जाय पाताल।
पूंछ घुमायो धरि बंगीसम जंगी बीर पवन के लाल॥
उछलत बेरा भुज कीन्ह्यो दृढ़ परिघाकार दीन फैलाय।
पायँ सिकोरे करिहायें लग तड़के जलधि ओर हहराय॥
गहि नभ रस्ता मन मस्ता करि चले अपार पार हहकारि।
त्रिया पराक्रम वह हनुमतकर नहिं कहि सकैं जासु मुख चारि॥
स० गोला हवाई कि गाई यथा गति आई न कैस्यहु भाई समानमें।
पाई न सो समताई क्यहू बिधि राम सुजानके बान पयानमें॥
यानमें भानमें भान हयानमें प्रान अपानमें ब्यान उदानमें।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देव बिमानमें जानन जो गति सोगति वा क्षन श्री हनुमानमें ॥
जो मनमें घनमें बनमें नहिं ओलन गोलन में नदधार में ।
नारमें मारमें ना शिशुमारमें नेत्र पसारन मारुत हारमें ॥
तार कतार न चाक कुम्हारमें खाँड़े दुधारमें ना तलवार में ।
थार तमारमें ना उरगार में बेग अपार जो बायु कुमार में ॥
बाजमें गाजमें बाजि समाजमें ना गजराजमें ना मृगमालमें ।
काल करालमें ब्रह्म मरालमें ना शशिभालके बैल बिशालमें ॥
भूत बितालमें तालमें ना कहुँ है खग जाल न बोहित पालमें ।
लंक निशंक पधारतके क्षन चाल उताल जो अंजनि लालमें ॥

हवाके झोंका महँ अगणित तरु जड़ते उखरि २ अनयास ।
साथै लागे कपिनायक के जात उड़ात गगन महँ खास ॥
जात सिपाही गण साथै जस जब कोउ कतौं जात नरनाथ ।
तैसे अगणित तरु अंबर महँ धाये जात पवनसुत साथ ॥
नभ पथ गमनत वहि समयापर कपिकी छटा कही नहिं जाय ।
मनहुँ महेन्द्राचल पर्बत नभ बिस्तृत कीन आपनी काय ॥
भुजा भयंकर फैलाये द्वउ यहि बिधि गगन माहिं दरशाय ।
मानहुँ निकले गिरिकंदर ते ये पँचमुहा सांप द्वउ आय ॥
बिज्जु आब सम चष पीले द्वउ मानहुँ आफताब महताब ।
लाल नासिका अरु लालो मुख संध्या यथा अरुण रबि दाब ॥
पूँछ पसारी जनु इन्द्रध्वज सज धज कछू कही नहिं जाय ।
जानै नीकी बिधि वाही जन जैंकोहुँ लखा होय दृग लाय ॥
सिद्धि गंधरब सुर बिद्याधर नभमहँ खड़े करत गुणगान ।
धन्य तुम्हारे पितु माताको सब बिधि तुम्हैं धन्य हनुमान ॥
अबतक निरखो नहिं साहस अस नर सुर असुर चराचर माहिं ।
पर उपकारी अब इनकी सम दूसर तिहूंलोक महँ नाहिं ॥
होत बतकही यह ऐसी इत उत अब सुनो समुद कर हाल ।
जात बिलोक्यो नभ मारगमहँ चाल उताल पवन के लाल ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लग्यो बिचारन मन अपने महँ जस कछु धर्म सज्जनन क्यार।
ये सुखदायक रघुनायक के पायक अति पियार बलभार॥
पार पधारन ये चाहत म्वहिं खोजन राम बाम के काम।
परम परिश्रम अनुमाना इन जाना चहत अगम अति ठाम॥
उतपति हमरिउ इक्ष्वाकुइते वे इक्ष्वाकु बंश शिरताज।
तिन रघुनायक को पायक यह जायक चहत पार म्वहिं आज॥
करब सहारा यहि अवसर यहि वाजिब अहै मोहिं सब भांति।
नतरु कृतघ्नि की गणनामहँ ह्वइहै प्रथम नाम मम ख्याति॥
नागर सागर गुनि सम्मत अस अरु सुस्तान हेत कपि जात।
टेरि सुहाँकै मैनाकै तब लाग्यो कहन यथारथ बात॥
अहिपुर बासी खल दैत्यन को रोंकनहेत द्वार आगार।
तुमकहँ थाप्यो इत सुरपतिने करिकै मनहुँ परिघ आकार॥
ऊंचे नीचे और तिरीछे तुम सब भांति सकौ बढ़ि भाय।
ताते तुमका समुझाइतहै यहि क्षण करो एक मनुसाय॥
उत्तम पायक रघुनायक के ये हनुमान पराक्रम धाम।
चहत उलंघन करि जावा म्वहिं करिबे हेत राम को काम॥
कर्म भयंकर यह कीन्हा इन दीन्हा देह दुःख बिसराय।
जन्म धरेको फल लीन्हा कर चीन्हा हृदय राम रघुराय॥
उठौ झड़ाका तुम पानी ते नभदिशि बढ़ौ उच्चकरि काय।
जामहँ तुम पर ह्वै ठाढ़े कपि थोड़िक देर लेयँ सुस्ताय॥
बानि सयानी सुनि समुद्र की देर न कीनि मेर मैनाक।
उठे समंदर के अंदरते बंदर जात लीन नभ ताक॥
देर न लागी प्रलयागी सम करि उत्तंग शृंग बिस्तार।
लागे बढ़िकै नभमण्डल महँ बर्ण सुबर्ण बर्ण अनुसार॥
महा भयंकर उन शृंगन पर बैठे रंग रंग के साँप।
छाय उजेरिया गइ अंबर महँ मानहुँ उदय भये शनि बाप॥
पर्बत बाढ़ो लखि मारग महँ ठाढ़ो अग्र देखि हनुमान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लगे बिचारन मन अपनेमहँ करि उर बिबिध भांति अनुमान ॥
काढ़िकै बारिधि ते बढ़िकै यह आगे भयो बिघ्न कछु ठाढ़।
रोंक्यो रस्ता बरिआई ते अब सब भांति भयो दुख गाढ़ ॥
करिकै चिंतन इमि बानरबर धरिकै हृदय रामको ध्यान।
चले अगारी किलकारी दै भारी बल निधान हनुमान ॥
पहुँचि भड़ाका लग पर्बत के ताका दृग पसारि रिसधारि।
पक्का धक्का दै छातीकर नीचे मेरु दीन बैठारि ॥
देखि पराक्रम अस हनुमतकर अतिशै खुशी भये मैनाक।
धारि तुरंतै तन मानुषकर बोलत भये मनोहर बाक ॥
हे रघुनायक के पायकबर लायक सर्ब भांति बलधाम।
दास सहायक सुखदायक कपि है तुव पगन माहिं परणाम ॥
कर्म अकारित अनुमाना तुम ठाना करब रामको काम।
पूरण ह्वैहै मन माना सब जैहै छाय जगत महँ नाम ॥
है म्वहिं अज्ञा यह समुद्र की बढ़िकै लगौं गगन महँ जाय।
जामहँ पायक रघुनायक को ह्वै थित तनिक लेय सुस्ताय ॥
अर्जी गर्जी स्वइ सेवककी करि स्वीकार यार बलधाम।
मर्जी आवै मन भावै तौ करिये ठहरि क्षणक बिश्राम ॥
सुनि बरबानी गिरि ज्ञानी की मानी हृदय मोद हनुमान।
बचन सयानी के भाषण करि गिरि प्रति लगे फेरि बतलान ॥
धर्म सज्जनन को चीन्हा तुम कीन्हा करन योग्य जो काम।
राम काम के करि आये बिन मोहिं हराम करब बिसराम ॥

स० लंघन पूर पयोधि किये बिन नाम न कूरन में धरवैया।
शोधि लिये बिन राम कि बामहिं ठामहिंठामहिं जानकि मैया ॥
बोधि लिये बिनरामके बामहिं नामहिं गामहिं धाम धरैया।
रामको काम तमाम किये बिन मोहिं बिराम हरामहै भैया ॥

यहि बिधि कहिकै वहि पर्बतते लहिकै हिय अनंद हनुमान।
गहिकै नभमगमे गमनत पुनि चाहिकै रामचन्द्रपद ध्यान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

षट्पदछंद ॥

जात बातद्रुति देखि बातजातहि बल ब्रातहि।
यतसुपर्ब गंधर्ब सर्ब शोचे यहि बातहि॥
यहि बल जानब चही सही अनुमानब गातहि।
अस समुझाय बुझाय पठै दीन्ह्यो अहि मातहि॥
पवनसुतहि रोंकहु द्रुतहि उतहि जाय प्रगटाय छल।
ज्यहि दृढ़ाय कपिकायकर भटसुभाय ब्यवसायबल॥

कह्यो देवतन जब सुरसाते यहि बिधि मंत्र परस्पर ठानि।
चली नागिनी तब तहँवा ते आय समुद्र मध्य प्रगटानि॥
रूपराकसी दरशावति भै अति बिकराल द्वितिय जनु काल।
रोंकि गगन मग भै ठाढ़ी तहँ बाढ़ी मनहुँ महा बिषज्वाल॥
लख्यो समुंदर के अंदरते नभमग बातजात को जात।
बोलन लागी हनूमानते सुनु बलवान हमारी बात॥
तुम्हैं पठायो इत ब्रह्माने हमरे देन हेत आहार।
अवशि अघैहौं अरु खैहौं त्वहिं लैहौं बे प्रयास मुख डार॥
अस कहि बायो फैलायो मुख आयो मनो भयंकर काल।
नेक न लायो भय हिरदय महँ खलदलकाल अंजनी लाल॥
हाल बतायो हँसि सुरसाते सुनिये नागमात मम बात।
भूप अयोध्याधिप दशरथ के द्वै सुत राम लक्ष्मण भ्रात॥
पितु बचपालनको आये बन लाये संग नारि सुकुमारि।
बसे अनंदित नदगोदातट कूटी पंचबटी महँ डारि॥
छल बल कैकै तहँ रावण खल लै मारीच नीचको साथ।
अनरथ कैगा हरिलैगा सिय दैगा प्रभुहि महा दुख गाथ॥
उन रघुनायक के पायक हम जायक चहत जानकी पास।
तुमहूं रय्यतिहौ उनहिंनकी करौ निवास राज्य महँ खास॥
ताते तुमकहँ है वाजिब अस यहि क्षण सुनौ अहिनकी माय।
खाय हमारे की आशा तजि करौ सहाय दया उर लाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यदि रुचि हमरे खैबेहीकी जागी हृदय तुम्हारे माहिं।
तौ सुधि लैकै हम सीता की आतुर रामचन्द्र ढिग जाहिं॥
सीय सँदेशा कहि रघुपति ते आवत पलटि तुम्हारे पास।
जस रुचि आवै तस कीन्ह्यो तब इतना करो बचन बिश्वास॥
सुनि अस बानी हनूमान की सुरसा लगी फेरि बतलान।
जाय न पावै मम सन्मुख ते कौनो जीव जियत लै प्रान॥
सदा सर्बदा की करणी यह ब्रह्मै यही दीन बरदान।
ताते तुमका हम भक्षब अब जीवत जान न पैहौ जान॥
कहि अस हनुमत ते सुरसा फिरि आगे ठाढ़ भई मुख बाय।
रिस कराल करि पवनलाल तब बोले बीर रूप दरशाय॥
काह बिचारे मन दुष्टा तैं कबते रही बृथा बर्राय।
जल्दी उतना मुख चौड़ा करु जामहँ मम सुकाय समिआय॥
इतना सुनतै मुख सुरसा कर भुरसा हृदय गई रिसछाय।
देर न कीन्ह्यसि मुख दीन्ह्यसि नभ चालिस कोस मध्य फैलाय॥
कोस चालिसक के कपिहू भे मेघाकार परे दिखराय।
दूनी बाढ़ी कपि देही लखि गाढ़ी खुनस कीनि अहिमाय॥
कीन्ह्यसि आनन नख योजन को मानहुँ मेरु कन्दरा आय।
योजन तीसकको बानर भो सबदिन ज्यहि सहाय रघुराय॥
चालिस योजन लग फैलो मुख पहुँचो कपि पचास महँ जाय।
साठिते सत्तर अरु अस्सी इमि बाढ़त जाय एक अधिकाय॥
यहि बिधि बाढ़ो सौ योजन लग मुख नागिनी केर जब भाय।
छोट रूप करि कपिनायक तब घुसिगे तासु मध्य हरषाय॥
गहरु न लागी बड़भागी सम निकसे कान डगर हनुमान।
जनु गिरि कंदरके अंदरते राम कमान बान बहिरान॥
अथवा मानहुँ सब देहीते कीन पयान प्रान अनुमान।
अथवा भेदन करि उदयागिरि मानहुँ कढ़े बढ़े बर भान॥
ठाढ़े ह्वैकै अंतरिक्ष महँ सुरसै सबिधि कीन परणाम।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनि करसंपुट करि बोलतभे हनुमत धीर बीर बलधाम ॥
हे अहिमाता तुव आनन महँ पैठिकै निकसि भये हम पार।
देहु आज्ञा अब जैबेकी है त्वहिं नमस्कार शत बार ॥
ज्ञानी बानरकी बानी इमि सुनि भै मुदित अहिनकी माय।
लगी मनोहर बच बोलै तब जो लै चुकी परीक्षा भाय ॥
ज्यहि लगि देवन म्वहिं पठवा इत सो सब मर्म ली‍ मैं पाय।
धन्य तुम्हारे पुरुषारथको जो नहिं कबहुँ अकारथ जाय ॥
जाहु अनंदित अब लंका कहँ शंका सकल देहु बिसराय।
प्रभु सुजान की प्रीय प्रानकी लै जानकी मिलावहु आय ॥
कौनौ कारज नहिं जगमा अस तुमका कठिन परै जो जानि।
सदा दाहिने रघुनायक त्वहिं त्यहि को कहै लहै हित हानि ॥
तुव बलथाहै कहँ चाहै जो सोजन महा मूढ़ अज्ञान।
पवनौ समता करि पैहैं ना गैहैं सकल सुयश को गान ॥
यहि बिधि आशिष दै सुरसा पुनि गमनत भई आपने धाम।
हर्षित चलिभे हनुमंतौ तब लैकै रामचंद्र को नाम ॥
नभ मग पग धरि करि मारुत गति मारुत सुवन चले फहराय।
भयो अगारी अब कौतुक जो सो सब सुनौ प्रिया मन लाय ॥
स० मेरु प्रमान अमान बली हनुमान पयान कियो नभ माहीं।
भान बिमान कि क्या समता भगवान के बान समानमें नाहीं ॥
ज्ञाननिधान सुजान महा गुण जासु जबान ते ना कहि जाहीं।
ताहि निदानहिं खानहिं खातिर सिंहिकाने पकरी परछाहीं ॥
बड़ उमाहते छांह खींचि कै लागी करन हृदय अस चाह।
सूखी भूँखी बहु दिवसन ते मैं जरि रहिउँ क्षुधा की दाह ॥
आजु बिधाता ने दीन्ह्यों यह मो कहँ अनायास आहार।
है नहिं छोटो बहु मोटो तन दरशत अंग अंग बिकरार ॥
भक्षण कीन्हे ते जीवहि यहि ह्वैहै उदर पूर मम आज।
भूंख बुझैहै कछु दिवसन लग भगवत कर्‌यो नीक यह काज ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इतै सिंहिका अस सोच्यो मन उत अब सुनौ पवनसुत हाल ।
छाया निश्चरि के खींचेते जब परि गई धीमि कछु चाल ॥
लग्यो बिचारन मन बानर तब भो उतपात अकारन काह ।
पंगु पराक्रम करि दीन्ह्यों कै कीन्ह्यों भंग अंग उत्साह ॥
बड़ी गैर भै परमेश्वर यह पैर न परै अगारी म्वार ।
लगे सामुहें जस बैहरि के चलै न पाव नाव नदधार ॥
अस बिचारि कै कपिनायक पुनि इत उत लख्यो दृष्टि फैलाय ।
जीव भयंकर यक बारिधि महँ बड़ मुख बाय रह्यो उतराय ॥
चिंतन लागे तब हनुमत मन मोसन कह्यो रहे कपिराय ।
दक्षिण बारिधि महँ निवसै इक अति भयमान जीव है भाय ॥
उड़त बिलोकै ज्यहि नभ मा वह जल महँ पाय तासु परछाय ।
देर न लागै धरि खींचहि त्यहि निश्चय वही जीव यह आय ॥
यहि ते उबरब अब मुश्किल है अस अनुमानि बीर हनुमान ।
देह बढ़ावंत भे पर्बत सम करि उर रामचंद्रको ध्यान ॥
लख्यो सिंहिका जब बानरकर बीर शरीर बढ़ा बिकराल ।
मुख फैलावा तब वाहूने काहूके कहन योग नहिं हाल ॥
ओंठ ऊपरी नभ लाग्यो मिलि नीचे ओंठ लग्यो पाताल ।
गर्जत दौरी त्वर बौरीसी मानहुँ प्रलय काल कर काल ॥
देखि तमाशा यह अंजनि सुत क्षण इक रहे मौन मन मारि ।
फेरि बिचार्यो निर्धार्यो उर यह सिंहिका राक्षसी नारि ॥
अतिशय भारो बिस्तारो मुख लेहै लीलि हमारो गात ।
होय उबारो नहिं कौनिउँ बिधि यहि क्षण महा बिघन दिखरात ॥
पुनि रघुनन्दन पद बन्दनकरि अति भट दुष्ट निकन्दन ज्वान ।
दीरघ मोटा तन छोटा करि गे मुखमध्य पैठि बलवान ॥
देखि तमाशा यह देवनकर नाशा हृदय जनित उतसाहु ।
मनहुँ पूर्णिमाके चन्दाको लीन्ह्यों लीलि भयंकर राहु ॥
यहां बिचारत अस देउतागण कीन्ह्यों वहां कीश जस हाल ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सो बतलावत कहि गावत सब सुनिये सावधान ह्वै बाल॥
पैठि सिंहिका के पेटमहँ बेटे बायुकेर बरियार।
नखन बिदारे यत मर्मस्थल फारे अंग अंग सुकुमार॥
छेदन भेदनकरि हिरदयसब कीन्ह्यों महा शिथिल त्यहिगात।
तुरतै मुखते कढ़ि बाहरभे नाहर यथा कढ़ै तजिखात॥
भये करेजे के रेजे जब औ ह्वैगये शिथिल सब गात।
प्रान पयाने तब निश्चरि के भइ अरराय समुद महँ पात॥
मरी सिंहिका अवलोकी जब सुर गन्धर्ब सिद्ध समुदाय।
लगे अशीशै तब कीशै सब हे हनुमान धन्य तुवकाय॥
अब हम जाना अनुमाना यह बाना बीर पर्खो तुवबांट।
याहि सँहारन अरु मारनहित ब्रह्में तुम्हैं कीन उदघाट॥
सिद्ध मनोरथ अब ह्वैहैं सब पैहौ हेरि रामकी बाम।
जो कछु चैहौ करिलैहौ सब छैहौ सुयश जगत महँ आम॥
यहि बिधि आशिष सुनि देवनकी अतिव प्रसन्न भये हनुमान।
गमने आतुर गति तहँ ते पुनि बारिधि पारजाय नियरान॥
स्वस्थ चित्त ह्वै पुनि बारिधितट लगे बिचार करन मनमाहिं।
अवशि जानकी अब देखब हम लंक निशंक जाय शकनाहिं॥
देह भयंकर यह धारेते म्वहिं संदेह होत मनमाहिं।
मानि अचंभा सब राकसगण करि हैं अवशि हास शकनाहिं॥
यह बिचारिकै झट मारुतसुत लीन्ह्यों रूप प्रथमकर धारि।
लम्ब मेरु जो तट बारिधि के तापर बैठ शंक सब टारि॥
लख्यो तहांहीं ते लंकापुरि शोभा जासु कही नाहिं जाय।
ज्यहि लखि लोभा पुर देवनकर भेव न सकत शेशहू गाय॥
बसीलसी जो गिरि त्रिकूटपर बिकसी शशीसरिस शुभज्योति।
थर थर घर घर डगर बगरपर अतिशै जगर मगर द्युतिहोति॥
लसे गसे से बन उपबन बहु फूले फले बृक्ष दरशात।
भ्रमर हजारन तिन डारन महँ मधुहित आय २ लपटात॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उड़ैं बिहंगम इक संगम बहु बोलत रंग रंग की बानि।
बिमल तड़ागन अरु बागन महँ सुन्दर स्वच्छ छटाछहरानि॥
खिले बावलिन महँ अंबुज दल छहरे पत्र छत्रसे छाय।
जोटा सारस अरु हंसन के बिहरत करत शब्द सुखदाय॥
कतौं पहाड़िन पर झाड़िनकी झुमड़ी झुकी झुड़ीली पांति।
धीर समीरन अवतीरन ह्वै तीरन शुचि सुगंध सरसाति॥
यहिबिधि शोभाअवलोकतशुभ सबिधि अशंक बंकब्यवसाय।
कपि मयंक सो इक फलंकमहँ लंक समीप पहूंच्यो जाय॥
पनियांसोते लग खंदक ज्यहि पुर के ओर पास फिरि आव।
ठावँ ठावँ पर खड़े सिंतिरी पकरे असी वसी चित चाव॥
सोही चारिउ दिशि सुबरणकी शहर पनाह राह नहिं आहिं।
काहबतावै छबिवाकी कबि चम चम दिपै छिपै द्युति नाहिं॥
शरद मेघसम अति उज्जलकल सोहत धाम धाम अभिराम।
अटा के ऊपर अटा बिराजैं लाजैं छटादेखि सुरधाम॥
हाटक फाटक दिशि चारिउ महँ लागे बज्र सरिस दृढ़पाट।
छुवा चहतहैं जनुअंबर कहँ उमड़ी अजब ठाटकी हाट॥
रंग रंगके ध्वजा पताके बाँके अटन रहे फहराय।
कनक किवाँरन मणिहारनकी द्वारन छटा रही छहराय॥
एकतारके बर बहारके बन्दनवार द्वार प्रति द्वारु।
सोहे मोहे मन मुनियनके गुनियन चित्र उरेहे चारु॥
ठाट निरालेहैं हाटन के अनुपम घाट बाट चौहाट।
किला कँगूरन सों पूरन बर चाटन चहत मनहुँ नभपाट॥
बेश बनाई बिसुकर्मैं जनु लंकापुरी सुंदरी नारि।
ताको रूपक बतलावत कबि राम पदारबिंद हियधारि॥
छहर दिवारी जनुसारी है खावां सुघर घांघरा आय।
बिमल जलाशय अरु उपबन बन ये आभरण रहे दरशाय॥
तुपक तमंचा तरवारिन सह सुंदर शस्त्र केश रहे छाय।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अटा अटारी त्यहि प्यारी के कर्णाभरण जानि ल्यो भाय ॥
यहि बिधि शोभा शुभ लंकाकी को भा कहन योग मति मान।
ताहि अनूपम अवलोकत अति हर्षित भये बीर हनुमान ॥
स० अलका भल तासम उज्ज्वलका हलका नलका पुर आवति है।
नरती सम भोगवती लगती जगती सब लाज लजावति है ॥
द्विज बंदि अनन्दित जीव जहां उमहा सुख दुःख भगावति है।
सरसावति शोभ जगावति सी अमरावति पार न पावति है ॥
शरद मयंका सम लंकाकी दीपति देखि लेखि सब ठाट।
उत्तर फाटक पर आये चलि जाये अनिल केर कपि लाट ॥
लगे बिचारन तब हिरदय महँ दृग मग उच्च फाटकहि डाटि।
है अति ऊंचा शिव पर्वत सम मानहुँ लेत अकाशहि चाटि ॥
मेरु कंदरासम लंका यह बंका महा मोहिं दिखराति।
भरे असंख्यन जन राकसगन बिषधर मनहुँ सर्पकी जाति ॥
घिरो समुंदर चौगिर्दा ते राक्षस करैं चौकसी भारि।
गम्य न बैहारिके जैबे की मगपग सकै अन्य को धारि ॥
भलभा बानर नहिं आये इत पौरुष सबै बृथा ह्वै जात।
लंका जीतनकी देखत नहिं कोहु सुरअसुर माहिं औकात ॥
कीश बिचारे क्यहि गिन्तीमा करि हैं काह आय इत राम।
कछु न बिसै है इन दुष्टनते नहिं कछु साम दाम को काम ॥
जितने बानर हैं सेनामहँ तिन महँ चारि बीर इत आय।
नील सुकण्ठी अरु तारासुत मैं कछु करिउ लेहुँ ब्यवसाय ॥
शक्ति न औरेसमहँ देखत हम जो कछु करै आय इत काम।
यहिबिधि शोचत वहि फाटकपर ठाढ़े बायुपूत बल धाम ॥
घरियक धारे चुप ठाढ़ेरहे पुनि अस मंत्र कीन निर्धार।
नहिं अब शोचनको अवसर यह श्री रघुनाथ लगैहैं पार ॥
देखा जैहै जो ह्वैहै कछु बिस्मय करत सरत नहिं काम।
प्रथम जानकीको ढूंढ़न चलि वेष छिपाय धाम प्रति धाम ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मिलिहैं जीवत जो कदापि कहुँ लंका मध्य जानकी माय।
तौ सब कारज बनिजैहै फिरि ह्वैहै जो सहाय रघुराय॥
यह दृढ़सम्मत धरि हिरदय महँ मारुतजात जात कछु राति।
दंश दशासी करि खाँसी तब लंक अशंक चले हर्षाति॥
मिली लंकिनी तब लंकातट बंका बीर देखि पुरजात।
दैकर हंका बिन शंका सो मारग रोंकि कहत भै बात॥
काह बिचारी बनचारी तैं धारी हृदय नेक भय नाहिं।
पंथ सिधारी छलकारी तैं जैबे हेत लंकपुर माहिं॥
शंक बिसारी दशआनन की टारी सकल हमारी कानि।
अस बदकारी करि चाहत तैं भारी प्रान जानकी हानि॥
हैं निशिचारी रखवारी महँ सकत न जहाँ बयारी जाय।
करी तयारी तहँ जैबे की डारी यातुधान कोउ खाय॥
महा अनारी गति धारी तैं ठग मग यार लवारी केरि।
देर न लावसि बतलावसि इत आवसि कौन काज चित हेरि॥
सुनि असशंका बिन लंकाकी बंका बानि रोष उरआनि।
निज बल तोलत हँसि बोलतभे कपि हनुमान ज्ञान गुणखानि॥
इत पगधारन को कारन तुम मोसन सुना चहौ सबिधान।
बार न लाउब बतलाउब सब करिकै समाधान यह जान॥
पहिले तुमते हम पूंछित है सो कहि अपन बताओ हाल।
यहिपुर द्वारे क्यों ठाढ़ी हौ कीन्हे तन कराल चषलाल॥
अधर चबाती डरवाती सी माती महामोह मदमाहिं।
आनन बाती रिसवाती सी लाती तनक दया उर नाहिं॥
महा दुष्टता दरशाती उर अतिरुष्टता दिखाती बाम।
बिक्रम गाती बहु निश्चरकर को तू अहै कहै निज नाम॥
गाम धामहै कौन ठाम तुव इत बिश्राम करत क्यहि काम।
सो सब कारन निर्धारन करु बार न लाव गाव इतमाम॥
काम रूपिणी वह लंका इमि सुनिकै बड़े कड़े कपिबैन।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रोष सैनसी अति अचैनसी बोली बैन लालकरि नैन ॥
मोहिं न जानत बनचारी तैं आनत मुखहि करारी बानि ।
आज्ञाकारी मैं रावणकी नारी रूप लंकिनी जानि ॥
करौं सर्बदा रखवारी मैं यहिपुर लंककेरि सबभांति ।
चोर लवारी बदकारी ये जाय न सकैं तकैं दिनराति ॥
मोर अनादर करि जावाचहु कादर लंक नगरके मांझ ।
छलकरि मेलत रज आँखिन महँ अबहीं भई देर नहिं सांझ ॥
आजु तुम्हारे यहि कर्मनते करि बेभर्म प्राणकी हानि ।
शयन करैहौं यहि अस्थल महँ आय बनाय आयु नियरानि ॥
सुनि असबानी दुष्टानी की ज्ञानी हनूमान रिससाधि ।
परम सयानी सों भाखत भे माषत ताहि गाहि बड़ि खाधि ॥
रूप भयंकर दिखरायो पुनि गायो समय सरिस कहिहाल ।
देखन चाहत हम लंकापुर शंकाकरत जासु सुरपाल ॥
सुनी प्रशंसा हम कानन ते जानन चहत तौन द्दगलाय ।
अटा अटारी फुलवारी बन उपबन भवन शोभ समुदाय ॥
किला कँगूरा अति रूरा अरु पूरा राज साज सामान ।
भट निशिचारी तिन नारी अरु प्यारी चित्रसारि निर्मान ॥
भूरि दूरिते हम आये हन पाये बहुत दुःख मगमाहिं ।
तापर तुमहूं अटकाये इत लाये दया तनिक उरनाहिं ॥
यहिबिधि भाष्यो सुत समीर जब धीर गँभीर बचन खगराज ।
तबौं कलंका रतलंका वह तनक न भई रोषते बाज ॥

स० बाजसि गाजसि रोष समाजसि दोष जहाजसि खाजसि बंका ।
दुःख दराजसि कुत्सित ब्याजसि रूप अकाजसि लाजकि रंका ॥
जीव बिघाति महा उत्पातिसि जाति कुजातिसि राति कलंका ।
भूरि रिसातिसि फारिहि खातिसि बोली हिये जरिजातिसि लंका ॥

हे खलबानर बरिआई करि परिहरि हृदय मोर भयभार ।
चले अशंका तैं लंका कहँ लखन बहार राज. दरबार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पार न पावत सुर साँवत जहँ आवत कबौं नाहिं पुरद्वार।
तहँ कह चीते चले पिरीते जीते बिना मोहिं किमियार॥
असकहि रुष्टा ह्वै दुष्टाने करिकै महाभयंकर नाद।
लात प्रहारी बनचारी पै भारी बल बढ़ाय उरगाद॥
प्रलय आय गइ बसि इतने महँ नैनन जाय लालरी छाय।
दवलगाय दइ जनु हिरदयमहँ कपि उर गयो क्रोधअधिकाय॥

स० बालबिभाकर प्रातःकाल सोजाल प्रबाल सोलाल लहूसा।
बृक्ष रसाल के पल्लव माल सो लाल गुलालसो बालबहूसा॥
अंजनि लाल सुआननलाल कै कालकराल सोकैउरगूसा।
दैकर हंक सुलंक हृदय महँ बंक अशंक धमंक्यहु घूंसा॥

लागत घूंसा वहि ससुरी की पँसुरी चूरण भईं बनाय।
छाय शिथिलता गइ देही महँ गिरी तड़ाक भूमि भहराय॥
अशनि प्रहारे जस सुरपति के भारे गिरैं मेरु ह्वै ढेर।
गिरी लंकिनी तस मूकाते चूका यथा कला नट फेरु॥
ब्याकुल लखिकै निशिचारिनिको नारिनिदान जानि हनुमान।
प्रान पयानत अनुमानतत्यहि हिय महँ बहुतु लाग पछितान॥
काम नकारो यह कीन्ह्यों मैं मारो बिन बिचार किय बाम।
राम रिसैहैं यहि करणी ते ह्वै है मोर नाम बदनाम॥
यहि बिधिचिंतन करिहिरदै महँ बिरदै सदै सवँरि करिख्याल।
धीरज दीन्ह्यों वहि लंकाको बंका बीर पवन को लाल॥
लटपटि बानी कहि बोली तब हे भट हरी करीसम काय।
करौ अनुग्रह अनुगामिन पर मैं तुव जानि लीन मनुसाय॥
लंका नगरी म्वहिं जानौ तुम मानौ कहौं सत्य जो बात।
जीति रीति सह तुमलीन्ह्यों म्वहिं कीन्ह्योंकछु न अन्यथा तात॥
पूर्बकाल महँ बर दीन्ह्यों म्वहिं हर्षि मरालगामि यहिभांति।
जाय बसेरो अरु फेरो करु लंका नगर निकट दिन राति॥
आय अचानक जब कबहूंकउ कपि त्वहिं जीति लेयबलठानि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तबतें जाने अनुमाने यह निश्चर बिपति आय नगिचानि॥
कही बिधाता की सांची भै सो अब समय आय नियरान।
भइउँ कृतारथ तुव दर्शनते बर्सन गये करत यह ध्यान॥
आजु महूरत यह पूरनभो कूरन काल बोलायो टेरि।
बिधि रचि राखी को मेटै को भेंटै एरि फेरि घर घेरि॥

सं० निश्चरराज अकाजकर्यो यहुलाज को साज धर्यो करिन्यारा।
है बरियार महा होनहार न पार कै आजु लगे कोहुं टारा॥
मारा मरै नहिं जाराजरै औ किनारा करे ते न होय उबारा।
राकसपाल बोलायहु कालहि रामभुवाल कि बाल के द्वारा॥

ह्वै आनंदित कपि बंदित तुम प्रबिशि निशंक लंकपुर माहिं।
काज सवांरो निज स्वामी कर अब कोउ तुम्हैं रोकैया नाहिं॥
कहो हमारो इक कीन्ह्यों यह लीन्ह्यों सुयश शीशपर धार।
प्रथमजायकै पुरभीतर महँ खोजौ सबिधि रामकी नारि॥
पुनि तदनंतर जो करिबे कहँ सो सब कर्यो काज उर डारि।
चलत कि बेरा शवदेही मम दीन्ह्यों अवशि अग्नि महँ जारि॥
यहिबिधि हारी बनचारी ते कहि सब हाल सिधारी बाम।
पैठ्यो बंका भट लंका महँ लैकै रामचन्द्र को नाम॥
अति बल कोटा तन छोटा करि सदर दुआर राह बरकाय।
छहर दिवारी को लंघन करि उचके चढ़े किला पर जाय॥
चले बिलोकत धाम धाम प्रति अति अभिराम छटारहिछाय।
गगन घटा सम धवरहरा शुभ चूमत मनहुँ चन्द्रमहिं धाय॥
सुमन सवांरी हैं सड़कैं शुचि भारी गंधिरही उमड़ाय।
मनहुँ पसारी चौगिर्दा ते प्यारी चंद उज्यारी लाय॥
मन्दिर मन्दिर प्रतिन्यारी छबि देखत घूमि घूमि हनुमान।
गाथा सारी कहि गावै को पावै इतो कहां गुण ज्ञान॥
कहूं किन्नरीबर कर मा लै बर किन्नरी बजावैं यार।
कहूं बांसुरी महँ गावैं मिलि बरआसुरी सुरी नरदार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहूं सितारन यकतारन की बाजैं गती अती सुखदाय।
रती न भाजै मन जहवाँते लाजैं रती मती सकुचाय॥
कहुँगण अबलन के तबलनके गहि गति ठाट दिखावत नाच।
हाथ उठावत मटकावत चष झुकि २ भाव बतावत सांच॥
गीत प्रीत सह कोउ गावत तिय छावत स्वर बितान असमान।
पायनखांसी चौरासीकी झनकत मंद मंद धुनि कान॥
बीन बजावत कोउ बांकीगति बाल बिशाल रूप की माल।
चाल लजावत ऐरावत की आवत समन अस्म शरबाल॥
कोउ बरबाला घर आलामहँ आपन लाला रही खेलाय।
कोउ करमाला लिय फेरति तिय पाला सुआ पढ़ावति जाय॥
कोउ मृगछाला पर आसन किये हाला पियत पियाला हाथ।
रूप कराला तन काला अरु लटकत जटा घटा से माथ॥
दिया जलाये कोउ मंदिर महँ सेजिया पिया लिटाये साथ।
हया हटायें लपटाये हिय रही बताय बिषै की पाथ॥
कोऊ दुशाला सों ढाँपेमुख झाँपे मनहुँ उजाला चांद।
खोलत मूंदत पट घूंघट सों फाँदे मनों प्रेमके फाँद॥
कोऊ नारी चित्रसारी महँ बैठे साजि रही शृंगार।
अंग अदूषण आभूषण को जगमग जगमग होत उज्यार॥
नगी नचावैं कहूं पन्नगी उमगी महा मोह मन माहिं।
कोऊ सोहारी तरकारी की ब्यारी करत बैठि पिय पाहिं॥
सेज अकेली अलबेली कोउ मेली पिय बियोग के शोग।
चंपक बेली सी सूखत तन मानहुँ महारोग संयोग॥
कहूं दारिका गंधर्बन की बर सारिका बिठाये पास।
कोक कारिका सिख लावति हैं छावति परम मोद उल्लास॥
देखि तमासा कपि खांसा इमि भासा सब प्रकार सुखतार।
चले अगारी अवलोकत पुनि घर घर छटा छई जनुमार॥
कौन्यों राक्षस के मंदिर महँ बहु बिधि होत मंत्र को जाप।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यंत्र तंत्र की साधनि का कहुँ निश्चर करत अकेले आप ॥
हवन होत है क्यहू भवन महँ कतहूं भवन बैठ निशिचारि ।
मुण्ड मुड़ाये भस्म रमाये योगी रूप बनाये झारि ॥
ताल ठोंकि कै यक मुश्ती कहुँ कुश्ती लड़त माल बिकराल ।
कौनौ योधा रत कसरत महँ उछरत करत अनूपम ख्याल ॥
आगे चलिकै अवलोक्यो पुनि बैठि जमाति निशाचर पांति ।
अद्भुत शोभा लखि लोभा मन सो सब कथा कही नहिं जाति ॥
एकै आँखी कोहु योधा के बोधा एक हाथ बिन माथ ।
कान नदारद हैं काहू के बाहू बिना अन्य दरशात ॥
हैं बहु बाहू भट काहू के कोउ बिन पांव भयानक गात ।
करत कलोलैं बच बोलैं मुख गर्दभ बाजि यथा हेहनात ॥
कोऊ सियारन के साजैं स्वर बोलत कऊ काककी नायँ ।
सिंह दहारनि कउ दहरत है हहरत मनहुँ गगन घन आयँ ॥
कसे निराले हैं आयुध तन भाले चोंचदार तलवार ।
पटा कटारी धनु धारी कउ छूरी छुरा धरे बरधार ॥
खड्ग दुधारा कहुँ धाराकर शक्ती कालपास अहिपास ।
सरकस तरकस करिहायें महँ बायें परी फरी अनयास ॥
यहि बिधि देख्यो पुर शोभा शुभ इतउत घूमि घामि हनुमान ।
सुनो अगारी कर कौतुक अब प्यारी धारि रामपद ध्यान ॥
मध्य भाग महँ पुनि पहुँच्यो कपि जहँगिरि शृंगउच्च अभिराम ।
ताके ऊपर घर सोहत इक मोहत जाहि देखि सुरधाम ॥
बनी देवालै बर सुखमालै आलै स्वर्ण बर्ण बरभास ।
नजरि न ठहरै छबि छहरै अति फहरै ध्वजा सजा आकास ॥
अटाके ऊपर अटा बिराजैं भ्राजैं लाल जवाहिर जाल ।
होत चमाचम चौगिर्दा ते निमनी घनी मनी द्युति माल ॥
रंगामेजी की प्रतिमा बर सति मालूम होत शक नाहिं ।
भीतर प्यारी तिदवारी तहँ परदा परे दरीचिन माहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मणि अस्फटिकन के खंभा बर रंभा जिन्हैं देखि ललचायँ।
तनकौ गाफिल कै पावैं जो तुरतै घरै खोदि लै जायँ॥
लगे झरोखे क्या नोखे अति चोखे चटक चमकैं चारु।
भीतर प्यारी चित्रसारी लखि हलको लगत ब्रह्म व्यवहारु॥
रूप नवीनी रँगभीनी कहुँ कामिनि लिखीं सुदामिनि गात।
जिनकी शोभा लखि नैनन ते मैन न कबहुँ ऐन निज जात॥
कहूं सवाँरी पिय प्यारी की प्रतिमा अंग संग लपटानि।
लिखी पतुरिया कहुँ नाचत गति भौंह भ्रमाय उठावति पानि॥
बिम्ब उरेहे बिधु पूषन के चहुँ दिशि रहे मयूषन भासि।
कहुँनखतावलि दरशावलि भलि बावलिकरतमुनिनमतिखाँसि॥
कहूं उरेहे पिक बरही शुक चक बक हंस कबूतर बाज।
सारस श्यामा छबि धामा अति गो बृष बाजिराजि गजराज॥
बँधे बाहिरी दरवाजन महँ बन्दनवार स्वर्ण मय झारि।
कलश कँगूरंन पर चमकैं बर भाकर प्रभाजात हिय हारि॥
बन्यो पाकगृह इक न्यारो तहँ लागे ढेर मांस मद केर।
खात खवावत हैं राकस बहु एकते एक छीनि मुख गेर॥
सभा सवाँरी इकन्यारी तहँ रावण करत खास दरबार।
घरबिहारको बन्यो एक दिशि निशि निशिचर तहँ करत बिहार॥
खड़े हजारन हय वारन तहँ मद बहिरह्यो पनारन माथ।
सुघरी शिविका एकत्रित कहुँ जिनपर चढ़त निशाचरनाथ॥
अकथ अलौकिक रथ शोभा गथ कतहूं खड़े जड़े मणिजाल।
अड़े अनेकन कहुँ रासभगण हिंकरत करत शब्द बिकराल॥
खड़े अनेकन भट पहरे पर गर्जत अतिव भयानक गात।
गम्य न पक्षी के जैबे की अन्य कि कौन चलावै बात॥
जाय बिलोक्यो पुनि अन्तःपुर जहँ पर शयन करै दशमाथ।
चंदन पलिका पर सोवत तहँ सुन्दर देव बधुन के साथ॥
चाहिय सामा जो राजन घर सो सब भरी धरी अप्रमान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिभव बिलोकत तब रावण को जकिसे रहे बीर हनुमान ॥
लख्यो न सीता त्यहु मंदिर महँ सब बिधि लख्यो दृष्टिफैलाय।
चल्यो अगारी बनचारी तब निरखत अपर भौन खगराय ॥
जाय बिलोक्यो गृह प्रहस्त को पुनि गे महापार्श्व के धाम।
कुंभकरण को घर देख्यो पुनि लेख्यो कहुँ न राम की बाम ॥
गये महोदर के मन्दिर फिरि निरख्यो बिरूपाक्ष आगार।
तहौं न पायो लखि बानर ने श्री कौशलकुमार की दार ॥
बज्रदंत को घर देख्यो पुनि बिद्युज्जिह्व केर अस्थान।
बिद्युन्माली अरु सारन कर निरख्यो भवन बीर हनुमान ॥
मेघनाद को घर देख्यो पुनि शोभा जासु कही नहिं जाय।
तहौं बिलोक्यो नहिं नैनन सों शुद्ध सुभाय मैथिली माय ॥
जम्बुमालिके गे मन्दिर पुनि लख्यो सुमालिकेर बरधाम।
पुनि निकेत लखि रश्मिकेत कर घरियक तहां कीन बिश्राम ॥
सूर्य शत्रुको घर देख्यो पुनि निरख्यो बज्रकाय गृहजाय।
तहौं जानकी लखि पायो ना लागे हृदय माहिं पछिताय ॥
भवन घन बिघनको देख्यो पुनि गे धूम्राक्ष धाम महँ धाय।
नाभचक्र शठ शुक लोमश के निरखे बिबिध भांति घरजाय ॥
कपटहृस्व अरु संपाती लै निरख्यो कर्णदंष्ट्र को धाम।
काम न निकस्यो कछु तहऊँ पर लखी न नैन रामकी बाम ॥
मत्त प्रमत्ता रणमत्ता अरु सादी ध्वजग्रीव को धाम।
भलकै देख्यो नहिं लेख्यो तहँ जनककुमारि रूप अभिराम ॥
यहि बिधि शंका बिन लंका तिन लखी बनाय दृष्टि दृगलाय।
पता न पायो कहुँ सीताकर लागे हृदय मांझ पछिताय ॥
सगरी नगरी मथि डारी हम कहूं न लखी जानकी माय।
अहो बिधाता अब ह्वै है कह जैहै बृथा मोर ब्यवसाय ॥
घरि यक शोचे कपिनंदन इमि बंदन कीन फेरि प्रभुपाय।
कछुकदूरिचलि भलिअस्थलि महँ निरख्यो भिन्नभवन इकजाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छटा अपूरब त्यहि मंदिरकी जात न कही रही छबि छाय ।
लक्षण हरिजनके चाही जस सो सब तहां रहे दरशाय ॥
हुलसी तुलसी चहुँ ओरन ते लागे कदलि बृक्ष अभिराम ।
द्वार दिवारन अरु आरन महँ चहुँ दिशि लिखो रामको नाम ॥
ठाकुर द्वारा बन्यो एक दिशि ऊपर ध्वजा रह्यो फहराय ।
प्रभु जनकीसी लखि प्रभुता इमि बिस्मय करन लाग कपिराय ॥

स० राकसबंश नृशंसके मध्य में हंस समान सुअंश लस्योको ।
धाम ललाम प्रभा अभिराम अराम बिराम सो ठाम ग्रस्योको ॥
आनँदकी अवलीसि भली प्रभु भक्ति थली बिमली बिलस्योको ।
ये असमंजस होत हमैं खलमण्डलमें यह साधु बस्यो को ॥

करै तर्कणा कपिमनमा इमि ताही समय बिभीषण जागि ।
हरि यशसानी शुभ बानीते सुमिरण लगे राम मुदपागि ॥
सुन्यो सो बानर बरकाननते मनते अस बिचार निर्द्धारि ।
निश्चय सज्जन जनकोऊ यह निबस्यो लंककलंकहि टारि ॥
हठकरि मिलिहौं यहि साधूते ढिलिहौं क्यहु प्रकार अबनाहिं ।
हानि जानिये नहिं काहू बिधि कबहूं सुजन सुसंगति माहिं ॥

कु० हनुमत हृदय बिचारि अस सब संदेह बिसारि ।
नेह बारि बिस्तारि चष देह बिप्रकी धारि ॥
देह बिप्रकी धारि जहां निशिचारि बिभीषन ।
सुमिरत रामखरारि टारि कुल कुत्सित सीखन ॥
तहां जाय हरषाय पाय लीन्हे बिन अनुमत ।
सुंदर बचन सुनाय लगे भाषन यह हनुमत ॥

माथ नवावत तुव चरणन महँ हे हरिदास सिद्धि सुखरास ।
को तुम राकसगण अक्षन महँ चंद समान करत परकास ॥
अथवा लंकापुर ढाबर महँ को तुम करत हंस समबास ।
अथवा कीकरके जंगल महँ दरशत अमर बृक्षसम खास ॥
क्षार बारिनिधिसम राकसकुल त्यहि बिच रहे कमल कल फूलि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खलदल मण्डल महँ सज्जन तन को तुम रहे आपु कहँ भूलि ॥
सुनि असबानी कपि ज्ञानीकी सज्जन जानि मोद उरआनि ।
माथ नवावत बरसावत चष भाषण लगे बिभीषण बानि ॥
अहो महीसुर सुख सुखमाधुर आपनि कथा सुनावो गाय ।
को तुम अम्रत सम भाषण करि मो कहँ कियो कृतारथ आय ॥

स० हौ अनुराग कि राग बिराग कि भाग हमार तमार से जागहु ।
कै करतारकि तार पयारकि धौंकोउ बिप्र कुमारसे लागहु ॥
सत्य सनेह कि देह धस्यो तुम अमृत मेह सही कहि बागहु ।
नाम कहा अरु धाम कहा कहँ ग्राम औ काम कहा कह माँगहु ॥

कह्यो बिभीषण यहि भांतिन जब तब हनुमान हृदय हरषाय ।
कथा मनोहर रघुनायककी भाष्यो सकल आदिते गाय ॥
सुन्यो बिभीषण जब आछी बिधि श्रीरघुनाथ केरि शुभगाथ ।
चीन्हि पवनसुत श्री हनुमत कहँ बोल्यो पुनः जोरि द्वउहाथ ॥
भागि बड़ाई कह गाई हम जो भइ उदय अकारण आज ।
कीनि सहाई रघुराई यह अब सब सुधरि गये ममकाज ॥
दुर्लभ दर्शन हरिसेवक के मिले सो आज मोहिं अनयास ।
पांसापलट्यो अब जान्यो मैं मान्यो भई बिपति सबनास ॥
काह बताई हे भाई हम आपनि रहनि नग्र यहिमाहिं ।
बत्तिस दांतन बिचरसना जस बसना लहत रहत शकनाहिं ॥
यथा बहेलियन के बनमा परि मनमा मृगा एक पछिताय ।
प्रान बचावै जान न पावै इतउत रह दुराय भयखाय ॥
यथा मूर्खन के मण्डल महँ पण्डित परै भरै उरताप ।
तथा हकीकति मम बीतति अति गति लखि हृदय बिचारो आप ॥

स० तात बतावहु बात हमैं यह ये उतपात कबै नसि जैहैं ।
नाथ सनाथ कै मोहिं अनाथहि लैकर हाथ कबै अपनै हैं ॥
दर्शन दै दुख मर्शन कै तन पर्शन कै मन हर्ष भरै हैं ।
यार कहौ कब राम उदार अपारके पार उतार लगै हैं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कछू न साधन यहि तामस तन प्रीति न रामचरण महँ मोरि।
नहिं सत संगति हरिदासन की बाँसन बढ़त नित्त मम खोरि॥
करौं भरोसा क्यहि बिरते पर मिलिहैं अवाशि स्वामि म्वहिं आय।
सज्जत भाषत बै बानी इक आनी स्वइ उपाय हिय भाय॥
स० टारि हैं जो निज टेकन एकहि नेक बिबेक न हारि हैं नामी।
धारि हैं जो न कठोरता चित्त बिसारि हैं नित्त न जो अनुगामी॥
फारि हैं फेल न पीछिलो जामहँ झारि लिखे तरे कामी हरामी।
डारि हैं बानि न आपनि तौ क्यहि भांतिन तारि हैं मोकहँ स्वामी॥
जो हरिजी अरजी न सुनै गरजी जनकी तौ कहा करै कोई।
जा सुनि देशके लेश खिलाफन होत बिशेष चहा करै कोई॥
दास कि आश बिसारी कबौं नहिं केतक सो बदमास हू होई।
मारि है औ दुदकारि है पै तऊ पार उतारि है तारि है सोई॥
साधु बिभीषण की बानी सुनि ज्ञानी कपि बनाय हरषाय।
बचन सयांनी के भाषत भो तुम सब कह्यो यथारथ भाय॥
यही रीति है रघुनायक की सब दिन करैं दास पर प्रीति।
दुख हरिलेवैं सुख देवैं बहु सेवैं नीति न सेवैं भीति॥
कौन कुलीनो मैं बानर कुल खल आचरन पोच सब भाँति।
चंचल बंचर हत साधन सब पापै करत जात दिन राति॥
नाम हमारो लैलेवै जो कबहूं प्रातकाल कोउ भाय।
मिलै न भोजन त्यहि तादिन कछु असमैं अधम मनोबच काय॥
सो प्रभु मोहूंपर दायाकरि आरत जानि लीन अपनाय।
असगुण सुमिरण करि स्वामी को नैनन गयो प्रेम जलछाय॥
महा मगन मन ह्वै दोऊ गे भरिगो हृदय प्रेम के भाय।
दशा सो चिंतन करि दोउनकी गिरिजा कहा कछू नहिं जाय॥
जानि बूझिकै अस स्वामी को जे मति मंद देत बिसराय।
सो फिरि काहेन दुख पावै जग अन्तहु माथ पीटि पछिताय॥
स० सब याम हराम के काम करै इतमाम तमाम धरै पै धरै।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धन धाम अराम में आमपरै बिसराम कुठाम करै पै करै॥
द्विजबंदि अनंदित ह्वै बिचरै मनबामके चाम अरै पै अरै।
हित भाव कुभाव कुसंग सुसंग में राम कहै सो तरै पै तरै॥

यहि बिधि भाषत रामचंद्र गुण ह्वउ आनन्द माहिं अधिकाय।
लगे हिलोरन प्रेमसिंधु महँ दशा सो कहि न जाय खगराय॥
घरियक बीते पुनि धीरज धरि कपि अस कह्यो सुनो हे भाय।
देखन चाहत निज नैनन अब कौनिउँ यतन जानकी माय॥
हाल बतावो वहि अस्थलकर है ज्यहि ठाम रामकी बाम।
काम न पूरण भो स्वामीकर सहज्यहि गई राति द्वै याम॥
सुनि अस बानी कपि ज्ञानी की दई बिभीषण युक्ति बताय।
बिदा माँगि कै तब ताहीक्षण तहँ ते चल्यो हर्षि कपि राय॥
राम लक्ष्मण को सुमिरण करि किय जानकी पगन परणाम।
आय बाटिका के द्वारेपर पहुँच्यो तुरत बीर बल धाम॥
लख्यो बाटिका की शोभा तहँ चहुँदिशि बनी छहरं दीवार।
गहिरी खाई है चारिउ दिशि फाटक लगो पुष्ट अति द्वार॥
करत कोलाहल बहु निश्चरगण बांधे अतिकराल हथियार।
नियत चौकसी महँ चारिउ दिशि है न उपाय जायबे क्यार॥
कठिन काम है यहि अरामके भीतर जान माहिं हे राम।
सफल मनोरथ सिद्धि धाम करु रातिउ रही आनि इकयाम॥

स० शेश सुरेश महेश गणेश धनेश बनेश रमेश खरारी।
देव दिनेश बली नभगेश जगेश नगेश खगेश बिहारी॥
शुभ्रकला कमला अमला बिमला बरदानि सुबानि तिहारी।
बंदि बिनै मनलाय बनाय सहाँय करौ यहि ठायँ हमारी॥

यहि बिधि सबके पद बंदनकरि दशरथनंदन चरण मनाय।
दुष्ट निकंदन कपिनंदन तब रच्यो उपाय बुद्धि सरसाय॥
एक फलंका महँ शंका बिन बंका शूर पूर ब्यवसाय।
छहर दिवारी को लंघन करि खाईं पार पहूंच्यों जाय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पूर मनोरथ भो बंदर को अंदर लख्यो सुभग आराम ।
ठाम ठाम प्रति अति शोभाकी उमड़ी धूम धाम अभिराम ॥
को छबि गावै फुलवारी की प्यारी प्रभा रही दरशाय ।
सोने चांदी की क्यारी बहु भारी छटा रहीं सरसाय ॥
बूटा काढ़े बहु रतननके हीरा लाल जवाहिर जाल ।
चमचम चमकैं दीपति दमकैं जमकैं बिबिध मणिन के माल ॥
झुके अनंदन सों बृन्दन द्रुम नन्दन बनहिं रहे सरमाय ।
गसे रसीले गुल गुच्छनसों स्वच्छ सुगंधि रही उमड़ाय ॥
काम सवाँरी जनु अपने कर न्यारी पाँति पादपन केरि ।
तन मन लोभै जन क्षोभै तहँ थल थल बिमल बनी छबिहेरि ॥
बृक्ष हजारन गुलभारनसों डारन झुके रुके भुवि माहिं ।
धीर समीरन के झोंकन सों झूमत झुकत झूमि रहिजाहिं ॥
बिमल चमेलिन अरु बेलिनकी इक दिशिलगी मनोहर पांति ।
कहुँ २ एलिनकी हेलिन महँ लपटैं उठैं अनोखी भांति ॥
कहुँ २ चंपे द्रुम झंपे बहु उलही जुही एक दिशि झारि ।
कहूं नैनियां के झाड़न महँ बिकसे सुमन सुमन मुदकारि ॥
कहुँ २ गेंदा गुलमेहँदा के फूले स्वच्छ बृक्ष बहु जाति ।
झुण्ड केवड़ा के झुमड़े कहुँ अतिशय सुभग गंधि उमड़ाति ॥
कहूं केतकी तकी अनूपम फूल्यो कहुँ गुलाब बर आब ।
मालति मरुआ मौनसिरी की छबि लखि भूलिजात घरजाब ॥
स्वच्छ कतारैं कल्पबृक्ष की कहुँ कचनार अनारन हार ।
लगे पलासन के क्वासन बन मानहु डारन फेरे अँगार ॥
खिली नवीनी गुलचीनी कहुँ नरगिस गुलाबास शुचि बास ।
कहूं निवारी बर क्यारी महँ कैरहि उज्ज्वल फूल बिकास ॥
कहुँ २ कुंदन मुचकुंदन की शोभा अति अपार घनियार ।
कतहूं बृंदन द्रुम चंदनके कतहूं हरशिंगार के हार ॥
कहुँ तिलकालक उद्दालक द्रुम बकुल कदंब बृंद अधिकान ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहुँ गुलदावदि गुलसब्बो कहुँ रबिआननी घनी घुमड़ान॥
कहुँ करसैले के फैले द्रुम छैले बिष्णुकांता आदि।
लखि मनमोहत है देवन कर लागत तिन्हैं चैत्ररथ बादि॥
लज्जावन्ती की पन्ती कहुं छाया परे जौन मुरझात।
इक दिशि केला अलबेला के चिकने स्वच्छ बृक्ष दरशात॥
कहूं अशोकनके थोकनकी पाँति दिखाति छटा छहराति।
कहूं बहारन सहकारन की झुमड़ी झुकी झुड़ीली पांति॥
श्रीफल सुंदर कहुं लागे अति कहुं अखरौट बेर बादाम।
पनस सरीफा नारिकेल कहुं लागे स्वच्छ बृक्ष अभिराम॥
यहि बिधि शोभा फुलवारी की प्यारी देखि बीर हनुमान।
चले अगारी त्यहि देखत फिरि लेखत अति बिचित्र निर्मान॥
कछुक दूरिचलि अवलोक्यो पुनि पूरित बिमल बारिबर ताल।
कमल बिकासे बहुखांसे तहँ बिहरत जल बिहँग बहुजाल॥
बिमल बावली बहुसोहैं तहँ फूले बिबिध रंग कल्हार।
बृन्दन बृन्दन मकरंदनकी ह्वैरहि अति अपार गुंजार॥
चकवा चकई सारसादि खग बोलत मधुर २ आवाज।
बैठे डारनपर कोयल पिक करत कलोल बोल शुभसाज॥
बीच बाटिकाके सोहे बहु सुबरणमयी अनूपम धाम।
अद्भुत रचनाके चितवत खन चक्रित होत चितेरो काम॥
अटा अटारी गचकारी बर प्यारी प्रभा पसारी चारु।
जड़े अनूपम रतन यतनते दरशत घनी मणिन उजियारु॥
राति अँध्यारी महँ लागत अस मानहुँ उये हजारन भान।
उच्च तिखण्डा चौखण्डाते मानहुँ छुये लेत असमान॥
किमि कहि गावै कबि सबरी छबि पावै कहां इतो बड़ज्ञान।
बिभव बिलोकत यह रावनको तीनौ लोक तुच्छ दिखरान॥
देखि मन्दिरन की शोभा शुभ आगे चले पवन के लाल।
कछुक दूरिपर अवलोक्यो तब बृक्ष अशोक तरे इकरूयाल॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

झुण्ड निशचरिनके ठाढ़े बहु कीन्हे महारूप बिकराल।
बाल बढ़ाये फैलाये मुख दीरघ नाक नैन द्वउ लाल॥
मनहुँ अनेकन तनधारन करि आई मीचु बाटिका माहिं।
कलबल बोलैं कल्लोलैं बहु डोलैं बृक्ष निकट ते नाहिं॥
लगे बिचारन कपिबारन तब इत कछु कारन परै दिखाय।
हमरे मनमा अस आवतहै हैं यहि ठायँ जानकी माय॥
चित्त चिंतवन करि याबिधि तब तुरत छिपाय आपनो गात।
उचकि तड़ाका द्रुम ऊपरचढ़ि निरख्यो दृगपसारि सियमात॥
दुष्ट निश्चरी चौगिर्दा ते घेरे तिन्हैं रहीं डेरवाय।
श्रीजगदम्बा की अवसर वहि शोभा कछू कही नहिं जाय॥
नैन नवाये अति दुर्बल तन मुखते कढ़त बैन कछु नाहिं।
परी लटुरिया हैं बारन महँ बेणी एक धरे शिर माहिं॥
मलिन बिभूषण सब अंगन महँ मैले बस्त्र बिराजत गात।
शुक्लपक्ष की शशिरेखा सम अतिकृश अंग अंग दरशात॥
मुख मुर्झानो सकुचानो सो अंबुज सुमन मनो कुम्हिलान।
चलत अश्रुजल कल नैनन ते लागो राम नाम महँ ध्यान॥
यदपि जानकी अस बिपदाबश दीपति तदपि अमल दरशाय।
काढ़ि निकारी जनु कीचरते कोमल गात कमलिनी आय॥
अथवा बरछिन के जंगल महँ बिछुरी बिमल मराली आय।
परी भीलिनिन बश हरणी जनु बरणी दशा कछू नहिं जाय॥
रहित हितूजन बिन सीता वे गीता सरिस जासु शुचि गाथ।
देखि बँदरवा बहु ब्याकुलभो कियसि प्रणाम नाय महि माथ॥
हा ये रघुपति की प्यारी प्रिय जनकनरेश दुलारी सीय।
भईं अधिकारी यहि बिपदाकी हैं निर्दई दई तव हीय॥
सती शिरोमणि पतिसेवी ये देवी सुमति सुगति शिरताज।
सुखतजि तेऊ दुखपावैं जग बिधि तव सकल ब्यतिक्रम काज॥
बिलसनवारी राज साज की सोवत सदा सुखासन सेज।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बैठी सीता सो अशोकतर बिधि तव बड़ो कठोर करेज॥
पास न जावैं भयलावैं जे लखि तसवीर मन्दिरन माहिं।
परीं राक्षसिन बश सीता ते बिधि त्वहिं तनक सलीका नाहिं॥
जिन बन देखा नहिं स्वपन्यो महँ घर तजि गईं न बाहर द्वार।
करैं बसेरा ते जंगल महँ बिधना त्वहिं हजार धिरकार॥
जन सुखदाता जगमाता यह सोउगै कर्म कीच महँ सानि।
अब हम जानी अनुमानी यह बिधिकी बुधि बनाय सठिआनि॥
है धिक हमरे बलपौरुष को जो हम दुखी लखत सियमाय।
दियो न आयसु रघुनायक कछु करौं उपाय कौन अब हाय॥
नतरु क्षणकमहँ हति निश्चरकुल लंककलंक पंकमहँ सानि।
तोरि दशानन दशआननके हठि लैजात सिया महरानि॥
धन्यबाद पै यह ईश्वरका जो सह कुशल मिलीं सियमाय।
तनिक अबेरा अब लगिहैना लै रघुपतिहि मिलैहौं आय॥
जिन रुचिराखत अभिलाषतअति दिनप्रति सदा लक्ष्मणराम।
बिपति बिलोकौं तिन सीताकी घेरे दुष्ट निश्चरी बाम॥
कानी खोथरी एक कानकी कौनिउँ बिना कानकी रांड़।
ठाढ़े काननकी निश्चरि कोउ मानहुँ महाजहर की भांड़॥
चिपरी लेंगरी यक हाथेकी माथेमाहिं नासिका लागि।
बड़े मूड़की कोउ लंबी बहु मुखमा धरे प्रज्वलित आगि॥
मूड़खौरहे की निश्चरि कोउ शिरमहँ खड़े बाल बिकराल।
लम्बीडाढ़ी अरु ओठनकी दीरघ दांत आंतकी माल॥
लंबी जंघा द्रुम सांखूसम कुबरी बिकृत रूप इक पावँ।
रूप कराली कोउ कालीतन अति डरलगै सुनेते नावँ॥
शूल बिराजत है काहूकर मूसर धरे काँध कोउ बाम।
माला पहिरे कोउ खोपरिनकी मदिरा पियत हाथलै जाम॥
दुष्ट राक्षसी यहि भांतिनकी चहुँदिशि खड़ीं पांतिकी पांति।
त्रास दिखावैं सियमाताको जनु तनु धरे अँध्यरिया राति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखि दुर्दशा अस सीताकी हनुमत हृदय लाग पछिताय।
त्यही समइयाके अवसर महँ रावण तहां पहूंच्यो आय॥
रावण आवत लखि बानरबर लघुतन पत्तन माहिं लुकाय।
लगे निशाचरकी देखन छबि भयकर काय जासु दरशाय॥
मुकुट बिराजें शिर सुबरण के लाजें जाहि देखि मघवान।
शस्त्र सँभारे भुज बीसौंमहँ आवत करत मद्यको पान॥
मस्तावारन सों गमनत पथ सोहीं तिया हजारन साथ।
मारन आवत जनु बिरहिनको धारन किये धनुष रतिनाथ॥
सुबरण दीपक कोउ बारे कर धारे चली अगारी जाति।
चवँरडुलावति कोउआवति तिय घनसँगयथा बिज्जुदरशाति॥
कंचनझारी लिय नारी कउ कौनिउ ब्यजन डुलावति जाय।
कोउ पिचकारी करलीन्हे तिय सींचत पंथ गंधि छिरकाय॥
रतन कलशिया मद पूरित कोउ हाथे धरे जाति बरनारि।
छत्र लगाये कोउ रावणके आवति चली भली सुकुमारि॥
अहै बामदिशि मंदोदरितिय त्यहि छबि कहै कौन कबिगाय।
प्रिय इंद्राणीको लीन्हे सँग मानहुँ इन्द्र अखाड़े जाय॥
आय सन्निकट सियासती के कुमती बैठि गयो मुसकाय।
रूप बिलोकत त्यहि रावणको भयबश कँपन लगीं सियमाय॥
पेटझांपि कै दुउ जंघनते अस्तन दुऔ हाथते छापि।
नैनलगाये निज पाँयन महँ बैठीं सिकुरि बस्त्र मुखढाँपि॥
दशा बतावत वहिसमयाकी सियकी होश जात उड़िभाय।
किये इन्द्रियाँ निज काबू महँ हिय बिचरहीं सवँरि रघुराय॥
कटी बृक्षकी बर डारीसम प्यारी दीप्ति गई मुरझाय।
पंकलपेटी मृदुनलिनी इव मलिनी महा बिभासति काय॥
मंत्र औषधादिक करिकै जनु रूंधी जहर भरी अहि नारि।
राहुगरेंसी जनु रोहिणि यह भयबश रही मौन मन मारि॥
दुर्जन दूषित बरकीरतिसम महा मलीन दीन दिखरायँ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथवा आदर हत श्रद्धाइव चिंताग्रसी बुद्धि जनु आयँ ॥
प्रतिहत आशाइव लागति जनु जागति आगि दिशासीजानि।
ग्रहगान गाँसी शुक्ल निशासी भासी राम रहित सिय रानि ॥
राहु गराँसी सूर्य प्रभासी धारा घटी तटी सी लागि।
छुई श्वपचकी बरबेदी सम खेदी सिंह मृगी सी भागि ॥
बुझी हुताशनकी चोटी सम सीता सुरति सूखि दिखराति।
लाग दुखावन दिल तिनहूं कर खल मलराशि राकसी जाति ॥
लाग बुझावन मृदुबानी ते ज्ञानी सरिस अयानी बात।
सुमुखि सयानी सियरानी तैं मानी कछु न मोरि भय गात ॥
काह समानी मन तुम्हरे महँ जानी कछु न मोरि मर्याद।
प्रीति न आनी कछु हमरी दिशि ठानी हृदय निठुरता बाद ॥
नेह दृष्टि सों अवलोकौ तुम मम दिशि एक बार करि प्यार।
मंदोदरिलै ये यावत तिय तुव दास्यता करैं स्वीकार ॥
देवि दयाकरु मम अनुचर पर इतना कहा मानिं ले म्वार।
शोच बिसारौ रघुनायक कर बासी सदा जौन बन क्यार ॥
अहै निर्गुणी त्यहि चाहौ तुम का सुख उदासीन पति माहिं।
यती तपस्वी द्विज दंडी तजि दूसर हितू जासु कोउ नाहिं ॥

स० दानी अमानी धरे धनुपानी दयाकी निशानी त्रिलोक न सानी।
ऐसे अज्ञानी कि रानी भये तुव शोभहि रानी भई सुखहानी ॥
मानी न बानी अबौंलगि मोरि बहोरि वही हठता उर ठानी।
रावणराजकी रानी बनौ करैं सेव सती रती बानी मृणानी ॥

महा अपावन शठ रावन की सुनि अति बिपति जगावन बात।
प्रभु मनभावन के पावँन महँ कीन्ह्यों ध्यान जानकी मात ॥
तृण बिचवानी करि बोलीं पुनि रेशठ अधम मलिन बिनलाज।
का बतियावत मुखलावत तैं आवत नहिं कुकर्म ते बाज ॥

स० केतौ प्रकासकरै जुगुनू नलिनी न बिकास करै शशिपाली।
भूरिनक्षत्र उवैं नभ में बिन चन्द न राति सुहाति कुचाली ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पावसपानि के पाये बिना न खुशालीलहै कहुँ शाली कि बाली ।
कालकरालपरै कितनौ पै मराली न त्यागत मानस खाली ॥
मानु सिखावन मन दुर्जनखल आनु न राम बामदिशि ध्यान ।
नातरु देरी अबलागति नहिं जल्दिहि जान चहत तुवप्रान ॥
स्यार सिंहिनीको चाहै जस गदहा गऊ देखि ललचाय ।
शूकर हरिनी दिशिहेरै जस तस तुव दशा भई खलराय ॥
रामबानकी सुधि भूली त्वहिं हते मरीच नीच के प्रान ।
अमित निशाचर खर दूषण लै क्षणमहँ काटिकीन खरिहान ॥
बिभव बतावत यह यावत तुव आपन लंक रंक के माहिं ।
रहित कलंक मयंक रामके पदरज अंक सरिस है नाहिं ॥
सीयसयानी की बानी इमि सुनि जरि उठ्यो दुष्ट को गात ।
रिस बस भौंहैं तिरछौंहैं करि लाग्यो कहन करेरी बात ॥
अहो जानकी अति अज्ञानकी तैं यह कहे बानि डर डारि ।
नहिं अवलोके चंद्रहास यह बांकी धार धरी तरवारि ॥
मोर अनादर करि बोलत तैं तोलत रामचंद्र ते घाटि ।
देर न करिहौं हनिडरिहौं त्वहिं अबहीं रती रती तन काटि ॥
भला आपनो कछु चाहति तौ जो कछु कहौं सपदि सो मानि ।
आनि कानि तजि वहितपसीकी आतुर बनसि मोरि पटरानि ॥
जरीं जानकी ये बातैं सुनि रोषित लगीं फेरि बतलाय ।
अरे बेशर्मा बेधर्मा शठ जलपत तनक नाहिं शर्माय ॥
स० या असिधारमें सारकहा जो बिदारहि शीश हमार अभागे ।
है रखवार सती सतधर्म वही असिधार भले तन त्यागे ॥
मैं मनमें हठ ठानि चुकी शठ होत कहा है बृथा तुव बागे ।
या तन होय सनाथ तबै रघुनाथसे नाथ के हाथ के लागे ॥
सुनि अस बानी सियरानी की मानी मूढ़ गयो रिसिआय ।
खड्ग काढ़िकै कर धायो तब मंदोदरी कह्यो समुझाय ॥
यह न शूरता रणशूरनकी औंड़त बृथा तिया पर हाथ ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुमति नशानी नहिं अबलग तुव मैं समुझाय हारिगइउँ नाथ ॥
कहे मँदोदरि के मान्यासि कछु तबहुँ न हट्यो हृदय ते क्रोध ।
दांत पीसि कै तब लाग्यो शठ तुरतै देन निश्चरिन बोध ॥
त्रास दिखावो यहि सीता को औ समुझाय सुझाओ ज्ञान ।
कहो न मनिहै इक महिना महँ तौ मैं मारिडारिहौं प्रान ॥
असकहि तुरतै घर गवना शठ लै सुन्दरी हजारन साथ ।
इतै हकीकति जस बीततिभै आगे सुनौ तौन खग नाथ ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंस श्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मज श्रीमुंशीप्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामीमसवासीनिवासी पण्डितबंदीदीन दीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डेसुन्दरकाण्डे प्रथमोल्लासः ॥ १ ॥

श्रीरघुनन्दन पदबन्दनकरि सीता चरण हरण दुख ध्याय ।
बुद्धि निधानहिं हनुमानहिं भजि भाषत रामसुयश शुभगाय ॥
शत्रु रोवावन वह रावन उत पहुँच्यो जाय आपने धाम ।
इतै निश्चरी एकत्रित ह्वै आईं जनकसुता के ठाम ॥
लगीं देखावन भय सीताको धरि धरि महारूप बिकराल ।
हे प्रिय गिरिजा वहि समयापर मोसन कहोजात नहिं हाल ॥
जटाराक्षसी यह बोली तब सुनिये जनकसुता मम बानि ।
कहो हमारो अब धारो उर काकरि रहिउ बृथा हठ ठानि ॥
ब्रह्माजीके सुत पुलस्त्य ऋषि जिनको बिदित जक्त महँ नाम ।
तिनके लरिका सबगुण फरिका श्रीबिश्रवा तेजके धाम ॥
पुत्र दशानन यह तिनहिंनको कीरति जासु जक्त बिख्यात ।
इन्द्रहु हारे ज्यहि लरिबेते नहिं सुर असुर युद्ध ठहरात ॥
त्यहिकी लंका रजधानी यह आनी इन्द्रपुरी सम नाहिं ।
त्यहिकी रानी ह्वै भोगौ किन सुन्दर राजभोग सुखमाहिं ॥
जटा कहिचुकी यहिभांतिन जब तब हरिजटा कोप उरधारि ।
लागी बोलन सिय माताते सुनुरी जनकसुता सुकुमारि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जौने रावन यशपावन ने जीते तीन लोक अनयास ।
शिव गिरिधार्‍यो यक हाथे महँ लरिका यथा उठावै घास ॥
तौन प्रतापी यह रावण नृप आपनि प्रिय मँदोदरि त्यागि ।
साम सबेरे तुव दर्शन कहँ आवत नित्त नित्त अनुरागि ॥
प्रीति न आनौ तुम तापर कछु ठानौ बृथा मोह मनमाहिं ।
सीख सिखावन नहिं मानौ कछु जानौ खैर कुशल निज नाहिं ॥
अधम मानुषी त्वहिं सूझीकह बूझी एक न बात हमारि ।
देर न करि हैं यहि ढंगनमहँ डरि हैं अबहिं राक्षसी मारि ॥
रांड़ हर्जटा यह भाष्यो जब तबहुँ न कछू कह्यो सियरानि ।
महा कराली तन कालीसी बिकटा कहत भई यह बानि ॥
तोहिं सुझावत समुझावत महँ बीत्यो एकयाम बेकाम ।
एक न मानी मनआनी तैं निश्चय जान चहति यमधाम ॥
तोहिं न बूझत यह सूझत कछु बिक्रम कितक रावणा माहिं ।
तपैं न सूरज ज्यहि आगे खर मारुत बहत जोरते नाहिं ॥
बृक्ष गिरावत फल अपनैते ज्यहि दशमाथ केरि रुखपाय ।
झरैं पहारनते झरना अरु मेघा देत पानि बरसाय ॥
तौने रावणकी रानी तुम काहे न होहु प्रीति सरसाय ।
भोगौ अभिमत सुख लंका महँ शंका सकल देहु बिसराय ॥
बात हमारी यह गांठीकरि आपन जन्म सुफल करिलेव ।
होहु पियारी नृप रावणकी करि हैं सकल देव तिय सेव ॥
भये तपस्वीकी तिरिया तुम का सुखलहो देव बतलाय ।
निशिदिन डोलौ बन जंगल महँ सुन्दर जन्म अकारथ जाय ॥
भाषि सुनायो जब बिकटा ने यहिबिधि महा बिनिन्दित बानि ।
क्रोधआनिके तब बोलतभै अति पतिब्रता रामकी रानि ॥
अहो राक्षसिउ मन आवै जो भावै तुम्हैं कहौ सो बात ।
तुमकहँ लज्जा भय नाहीं कछु लोक बिरुद्ध निर्दयी गात ॥
आप बिचारौ नहिं मनमा कछु मुख से कहौ पापकी बानि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शुद्धमानुषी कहँ देख्यो तुम कतहूं होत निशाचर रानि ॥
यहि जगजाको ज्यहि प्राणीमहँ बिधि संयोग दीन सिरजाय ।
सोई ताके सँग सोहत है मिथ्या किये धर्म नसिजाय ॥
यथा इन्द्र के इन्द्राणी सँग औ शशि साथ रोहिणी नारि ।
सत्यवान सँग सावित्रीकी शोभा कहत बेद निर्धारि ॥
लोपामुद्रा सँग अगस्त्य के औ केशिनी सगर के साथ ।
है दमयन्ती नल राजा सँग तैसे मोर स्वामि रघुनाथ ॥
महा मलीने छबि हीने अरु दीने होयँ कैसहू राम ।
मैं अनुगामी वे स्वामी मम सब दिन सब प्रकार सुखधाम ॥
स० आब गुलाब कली कि भली नहिं कीकरडार फली जब जायकै ।
त्यों न सुबंसिनि हंसिनि सोहत हंस बिहाय कहूं बक पायकै ॥
चांदनि चंदतजै न सजै कहुँ राहु शनिश्चरके सँग आयकै ।
हाल हमार बिचारहु त्यों तुम काकरिहौ समुझाय बुझायकै ॥
यहि बिधि भाष्यो सियमैया जब भैया सुनौ हाल तिनक्यार ।
ससुरी असुरी अति क्रोधितह्वै लागीं धरन रूप बिकरार ॥
दंत कटकटाकरि नकटामुख बायहुबाय ओंठ फैलाय ।
दौरीं बौरीसी एकैसँग लेहैं मनहुँ सीय कहँ खाय ॥
कांपन लागीं जगदम्बा तब भय बश अंग उठे थर्राय ।
सुमिरण लागीं तब स्वामीको हे रघुराय दया दरिआय ॥
हाय हमारी यहि हालतिपर तुम कहँ दया न आवति राम ।
कस बिसरायो यहि दासिनिको आरत हरण शरण सुखधाम ॥
देखि दुर्दशा यह सीता की करत बिलाप भूरि संताप ।
जागी त्रिजटा तहँ सोवतते लागी बचन कहन तब आप ॥
सुनौ निश्चरिउ ममबानी इक धीरज धरौ क्रोध बिसराय ।
बृथा सतावौ जनि सीताको ये शुचि सती बचन मन काय ॥
इनकी सेवाते पैहौ सुख दुखके दिहे लगै दुख हाथ ।
ये तिय नामी उन स्वामी की जे जगनाथ नाथ रघुनाथ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आजु सपनवाँ मैं दीख्यों इक ताकर हाल सुनौ मन लाय
कछु दिन बीते फुर ह्वैहै सो यामहँ तनिक झूंठ नहिं माय।
यहि बिधि त्रिजटा की बानी सुनि ससुरी सबै उठीं थर्राय
हाथ जोरिकै यह पूंछत भइँ माई कहौ सपन समुझाय॥
धीरज दैकै तब सीताको त्रिजटा कहत भई असबात
कहौं हकीकति का सपनाकी महिंका सपनु सांचु दिखरात॥
उज्ज्वल शिविकापर मानहुँ चढ़ि आये राम लषण यहिठाम।
उज्ज्वल अंबर तनमा पहिरे धारे हृदय माल अभिराम॥
फेरि बिलोक्यों कछु बेरिया महँ मानहुँ चढ़े श्वेत रथ माहिं।
दोनौं भाई रघुराई ते आये मुदित जानकी पाहिं॥
बाहँ पकरिकै इन सीताकी पुनि रथ ऊपर लयो चढ़ाय।
तुरतै गमने दिशि उत्तरका बिहँसत मन्द मन्द मुसक्याय॥
सुनौ हकीकति अब रावणकी जो मैं दीखि स्वपनके माहिं।
निश्चै आतुर फुरह्वैहै सो महिंका जानि परति शकनाहिं॥
बार मुड़ाये सब मूड़ेके पोते तेल मनहुँ सब गात।
पहिने कपड़ा सब लाले तन काले सकल अंग दिखरात॥
कँदइल फूलनकी माला हिय चन्दन लाल लगाये माथ।
चढ़ो गदहना पर रोवत सो दक्षिण दिशहि जात बिकलात॥
थोड़ी बेरिया महँ देख्यों पुनि मानहुँ एक बँदरवा आय।
आगि लगायासि सब लंकामहँ मारयासि बहुत निशाचर माय॥
यावत राकस खल लंकामहँ सो सब भागिगये यमद्वार।
साधु बिभीषणने पायो जनु लंकाधिपति केर अधिकार॥
फिरी दोहाई रघुराईकै लंक कलंक गयो सब भागि।
इतनो स्वपना लखिहकबकिसी फिरि मैं परिउँ अचानक जागि॥
मोरे मनमा अस आवतहै यह न असत्य होय क्यहु भांति।
ताते तुमका समुझावतिहौं सेवो सिया सकल दिन राति॥
सुनिकै. त्रिजटाकी बानी इमि सब निश्चरी हृदय डर पाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गिरीं जानकीके पायँनमहँ कलबल्ल करब भूलि सब जाय॥
अंजुलि बांधे सब ठाढ़ी रहिं थोरिक ब्यार जानकी पास।
फिरि समुझाये ते त्रिजटाके इत उत गईं त्याग भय त्रास॥
शोक समान्यो तब सीताउर प्रथमैं कह्यो जौन दशमाथ।
कहो न मनिहै इक महिना महँ तौ मारिहौं आपने हाथ॥
यह बिचारि उरसंदेहित ह्वै रोवन लगीं महा बिलखाय।
एक महीना के बीते पर म्वहिं मारि है निशाचर राय॥
हे रघुनन्दन जन चन्दन तुम मोकहँ तज्यो कौन अपराधु।
ऐसिउ समया महँ आवत नहिं गावत तुम्हैं दयाकर साधु॥
माता त्रिजटा दुख संगिनि तैं मोरि छुटाउ बिपति की फांस।
चिता बिरचिदे धरि आगीतौं जरि यह करौं अधम तन नास॥
दुर्लभ दर्शन यहि तनमा अब स्वामी केर लीन मैं जानि।
फिरि काकरिहौं दुख परिहौं हठि भरिहौं श्रवण शूल सम बानि॥
सुनि असबानी सियरानी की त्रिजटा कह्यो सबिधि समुझाय।
मिलिबो अनुचित है आगी को निशि में सुनौ जानकी माय॥
धीरज धारौ गुनि हिरदै महँ देखौ काह करत हैं राम।
अस कहि आज्ञा लै सीताते त्रिजटा गई आपने धाम॥
बिलखनलागी जगदम्बा पुनि जागी प्रभु बियोग हिय आगि।
रोवत धोवत चष आँशुनते लखि दुख दुखौ जाय हठि भागि॥
सत्य कहतहैं यह पण्डितजन मीचौ मिलत चहे पर नाहिं।
प्रान अभागे नहिं त्यागततन ऐसिउ कठिन दुर्दशा माहिं॥
पोढ़ा बज्रौते हिरदय मम अब दिखराय परत म्वहिं हाय।
बिन रघुनन्दन दुखफन्दनपरि निर्दय फटि न जाय धिक्खाय॥
मीचु हमारी है रावण कर यह सारांश लीन मैं जानि।
नतरु सिधौतीं प्रभु आतीं इत लेतीं म्वहिं बचाय धनु पानि॥
मारिडारै जो रावण म्वहिं तौ अब करै नीक बहु काम।
मिथ्या जीही कै करिबे का जो ना मिलो राम सुख धाम॥
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहौ बिचारितहैं अपने जिय जीवत होत स्वामि द्वउ भाय।
शंक न लौतीं कछु अपने जिय औतीं तुरत लंक महँ धाय।
मृगतनधारी निशिचारी ने मारे द्वऊ भाय रघुराय।
चलत न देखन मुख पायों मैं बरबस महीं दिह्यो पठवाय॥
हा सत्यव्रत रघुनायक तुम मारे गयो मोर हित लागि।
सुखद चरित्रे सौमित्रे हा म्वहिं तजि कहां गयो तुम भागि॥
हाय गोहारी नहिं लागतकोउ यहिक्षन मोर देखि दुखग्राम।
मिलै न आगिउ इत ढूंढ़े कहुँ सबविधि भयो बिधाता बाम॥
प्रकट अँगारे बहु अंबरमहँ गिरि नहिं परत एक मम पास।
जाते अपनो यह निन्दिततन जरिबरि करत बेगिही नास॥
नीच चन्द्रमा यह पावकमय मांगे सोऊ देत नहिं आगि।
अहै बियोगिन दुखदायक यह दूसर लखत मोहिं हत भागि॥
हे अशोकतरु मम बिनती सुनि आपन सत्य करौ तुम नाम।
कोमल पत्ता तुव आगीसम दै म्वहिं करौ नीक बड़ काम॥
सुनि असबानी सियरानी की ज्ञानी कपि बिचार उरधारि।
जानि सुअवसर लखि लीन्ह्यो भल दीन्ह्यो बिमल मुद्रिकाडारि॥
जनु अशोक तरु करि करुणा उर सिय हित डारिदीन अँगार।
परी सो आगे जगदम्बा के लीन उठाय कीन नहिं बार॥
यह तो शीतल बहुलागीकर आगी कैसि अहो भगवान।
दृष्टि निहारयो शक टारयो तब अति सुन्दरी मुन्दरी जान॥
उलटि पुलटिकै पुनि देख्यो त्यहि मणि नगजड़ीबड़ी अभिराम।
भई सशंकित तब हिरदय महँ अंकित बाँचि राम को नाम॥
यह तो मुँदरी पिय राघवकी पहिरे लड़कपने ते हाथ।
सो अब बिछुरी केहि कारणते छोंड़यो ककस स्वामि को साथ॥
जीति न पावै कउ रघुपतिको सब बिधि अजय तीनि पुर माहिं।
फिरि यह कैसेकै आई इत कारण जानि परत कछु नाहिं॥
जाय बनाई नहिं मायाते ऐसी असल बस्तु क्यहु भांति।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फिरिकोलायोयहिअस्थलमहँ क्यहिबिधिलहौं कुशलकीपांति ॥
यह चितचिंतन करि सीता पुनि वहि मुँदरी सन लगीं बताय ।
अहो मुद्रिका तुम आइउ कस तजि सुखदाय स्वामि रघुराय ॥
रीति पतिब्रततुमछांड़्यो कस कीन्ह्यो अतिअयोग्य यह काम ।
मो मन शंका बहु उपजति है होत न क्यहु प्रकार बिश्राम ॥

स० मोमन कैस्यहु धीरधरै न भरै उरभीर करै मति कुंदरी ।
दुर्गममारग माड़ि महाबन छांड़ि पहारनकी बहु तुंदरी ॥
गौनकियोइतकौनसे काज गहौ जनिमौन कहौ सबसुंदरी ।
कौनदशा गुदरी मुँदरी कहु कैसे तरी उतरी तु समुंदरी ॥

कौन लयायो त्वहिं मोरे ढिग ताकर बेगि बतावहु नाम ।
गम्य न काहूके आवनकी है सखि महाकठिन यह ठाम ॥
असकहि ऊपरको ताक्यो पुनि बंदरदीख बैठ इकडार ।
भईं सशंकित चितअंदर तब को यह कपटरूप कर्तार ॥
पूंछनलागीं पुनि हनुमतते दृढ़करि चित्त रोष उर आनि ।
को तू बानरतन आयो इत मोकहँ छली परत अनुमानि ॥
यक्ष गन्धरब कै चारण तू कै कोउ सिद्ध सुरासुर माहिं ।
रूप बनाये इत बांदरको आये मोहिं छलन शकनाहिं ॥
चित्त अपावन कै रावन तू धारे कपटरूप करिपाप ।
हाल आपनो कहु बेगिहि सब नातरु देत भयानक शाप ॥
सीयसयानी की बानी सुनि ज्ञानी कपिउ समय शुभपाय ।
उतरि तड़ाका तरुऊपर ते सिय सामुहें ठाढ़भो आय ॥
हाथ जोरिकै द्वउपायँन महँ कीन्ह्यो माथनाय परणाम ।
हालबतावन निजलाग्यो फिरि है हनुमान मातु मम नाम ॥
मैंहौं पायक रघुनायकको लायक सब प्रकार जो आहिं ।
पूत पवनको म्वहिं जानौ तुम मानौ सहीसकल शकनाहिं ॥
मातु मुद्रिका यह आनी मैं तुमकहँ राम निशानी दीन्हि ।
मोहिं सँदेशा हितपठयो है तुम्हरे पास दासहित चीन्हि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कह्यो बार्ता जब बानर यह तब सिय कर्यो कछुक बिश्वास ।
फिरि असपूंछयो बातजातते जो शुचिगात रामको दास ॥
किन रघुनायक के पायक तुम तिनकर कहौ नाम कुलग्राम ।
चिह्न बतावो कछु उनके म्वहिं हैं कै भ्रात तात कहनाम ॥
सुनि बरबानी महरानी की ज्ञानी कपिप्रमोद सरसाय ।
अतिव अमोले बचबोले तब घोले अमल अमी समभाय ॥
उन रघुनायक के पायक हम नायक जौन चराचर क्यार ।
कर धनुशायक धरलायक बर घायक शत्रु सहित परिवार ॥
दास सहायक सुखदायक सब गायक करत गुणनको गान ।
शुद्ध सुभायक मृगनायक सम प्रबल प्रताप भानुकुलभान ॥
श्रीदशस्यन्दन के नन्दन प्रभु बन्दन करत अमर जिनपायँ ।
राजा रघुके परनाती अरु नाती अजभुवाल के आयँ ॥
नगर अयोध्या के भूपति बर नृपमणि मुकुट राज शिरताज ।
बसुधामण्डल खलखण्डन भट जिनकी बँधी बिरद जग आज ॥
मातु कौशला की कोषी ते सब सुखधाम अरामद नाम ।
शशिललाम सम सुभग काम सम प्रगटे रामचन्द्र अभिराम ॥
मातु केकयी की कोषी ते सम्भव भये भरत महराज ।
गावत जिनकर यश रातिउ दिन साधु समाज मध्य रघुराज ॥
लषण शत्रुहन ये बालक द्वउ पालक राम प्रीति रस भाव ।
मातु सुमित्रा के जाये बर आये बनै लषण जिन नावँ ॥
श्रीरघुनन्दन तन लक्षन मैं इक मुख भाषि सकौं नहिं माय ।
शिव सहसानन चतुराननमति जिनके कहति माहिं सकुचाय ॥
पदरजडारी मुनि नारी तन पाहन भई जौन लहिशाप ।
करि अबिकारी हरि तारी त्यहि भारी चरण कमल परताप ॥
बाल अवस्था महँ नाश्यो जिन एकै बान ताडुका प्रान ।
नीच मरीचहि पहुँचावत भे क्षनमहँ समुदपार शर तान ॥
अमित राकसन सहमार्‍यो पुनि अतिव उमाहु भरो शुभबाहु ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुनिमखराख्यो अभिलाख्यो अतिमुनियन हृदयभख्यो उतसाहु॥
शिव धनुतोख्यो पुरमिथिलामहँ शिथिला कियो नृपनकीआश।
मान मरोख्यो अभिमानिन कर भृगुपति गर्ब सर्ब कियनाश॥
जनक महीपतिको पूख्यो प्रण सहित उछाह कीन तुवब्याह।
श्री दशस्यन्दन के नन्दनप्रभु सुरनरनाह सिद्धि सुखशाह॥

षट्पद॥

अंबुज दाम ललाम श्याम सम श्याम शरीरं।
मुखमयंक अकलंक शंकहरधर बरधीरं॥
भुजबिशाल खलकालशाल करजन मनपीरं।
परिधन मुनि तन बसन लसन कटितट तूणीरं॥
धनुतीर धरनकर भीरहर करनभरन उद्भवमरन।
जलदवरन अशरनशरन चरनचारु मंगलकरन॥

उत्तम बानी कपि ज्ञानीकी सुनि पुनि सिया सती सहुलास।
मनसि ध्यानधरि हरि सुजानको लागीं ढरन नयनते आंस॥
फिरि धरिधीरज कछु हिरदयमहँ हरिसन कह्यो बचन सुखरास।
हेबर बानर तुव बातन महँ मोहिं न तनक होत बिसवास॥
कहौ हकीकति अब मोसन तुम पूंछत जौन तौन समुझाय।
परै भरोसा तब जियरे महँ की यह राम दूत सच आय॥
भई बानरन की संगति कस औ क्यहि ठाम राम ते तात।
सो समुझाओ कहि गाओ सब लाओ तनिक शंक नहिं गात॥
कह्यो जानकी जब याबिधि बच तब हनुमान हृदय हरषाय।
लाग बुझावन प्रभु गाथा सब सहज सुभाय सत्य सरसाय॥
सुनु महरानी मम बानी तैं जानी कहत जहांलग बात।
भूप अयोध्याधिप दशरथके रानी तीनि मुख्य बिख्यात॥
प्रथम कौशला दिशि प्राचीसम प्रगटे जहां राम शशिचारु।
केकय कन्या तिय मांझिलिहै अति प्रियनृपहि प्राण आधारु॥
मातु सुमित्राहैं लहुरी तिय हिय अस समुझि लेहु महरानि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सती शिरोमणि ये तीनिउँ तिय शील सनेह बुद्धिकी खानि ॥
एक समैया के अवसर महँ कारण पर्यो आनि असमाय ।
देव दानवनने आपुस महँ ठानी रारि महारिस छाय ॥
तौन लड़ाई महँ हारे सुर तिन दशरथते चही सहाय ।
बड़े महारथ रघुबंशिन महँ बिक्रम जासु बरणि नहिं जाय ॥
भये सहायक ते देवनके आपनि अनी घनी लैसाथ ।
लरे बहुत दिन लगि संगररचि असुरन संग अयोध्यानाथ ॥
गई केकई नृप साथै तहँ देखन महा भयानक रारि ।
बहु सुख दीन्ह्यसि तहँ भूपति कहँ कहैको कथा तौन बिस्तारि ॥
परमानन्दित ह्वै दशरथ त्यहि दीन्ह्यो तहैं उभै बरदान ।
जीति दानवनकहँ आये पुनि पुर आपने प्रजाके प्रान ॥
यहो हकीकति अस बीततिभै कौतुक सुनौ अगारी क्यार ।
गये तीनिपन नृप दशरथके भोगत राज्य भोग अधिकार ॥
गतभे संबत नौहजार इमि बिलसत इन्द्र सरिस शुभराज ।
पुरजन परिजन प्रतिपाल्यो बहु कीन्ह्यो धर्म पुण्य के काज ॥
शील सयानी सुख खानी बहु रानी सात शतक पच्चास ।
पुत्र न जायो तिन एकहुने नेकहु शेषरही नहिं आस ॥
तिया सुधन्या इक तिनहिन में कन्या भूप भार्गव केरि ।
सुता बियानी इक रानीसो भाषत हेमलता ज्यहि टेरि ॥
पुत्र न पैदा भो काहूके आगे बंश बढ़ावनहार ।
भई अँदेशा मन दशरथ के सुत बिन सून देखि परिवार ॥
इक दिन भूपति मन आई अस होनी अवशि होय शकनाहिं ।
मृगया खेलन गे सैनासह तमसा नदी निकट बन माहिं ॥
डेरा परिगे वहि तमसा तट राजा टिके तहां पर जाय ।
जो जो अस्थल ज्यहि लायकरह तहँगज बाजि दीन बँधवाय ॥
तहां अपूरब इक कौतुकभो माता सुनौ धारिकै ध्यान ।
बसै अंधमुनि वहि जंगल महँ दंपति नयनहीन यह जान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अकिलो लरिका तिन दोउन के सरवन नाम प्राण आधार।
तन मन सेवक पितु माता को जानत नहीं द्वितिय ब्यवहार॥
भये पियासे पितु माता द्वउ सुत ते कह्यो पियावहु पानि।
रहै न वहि क्षन जल अस्थल महँ तब यह कही पुत्रने बानि॥
रह्यो न पानी पितु आश्रम महँ घरियक धीर धरौ मन माहिं।
घट भरि लावत मैं तमसा ते आवत अबहिं देर कछु नाहिं॥
असकहि सरवन घट झटपटलै तमसा भरन गयो बर बारि।
नृपके डेरा त्यहि नदिया तट इत उत परे सुभट सब भारि॥
लाग्यो भरिबेवन सरवन तब घटते भई भभक आवाज।
सुन्यो सो कानन ते दशरथ नृप जान्यो अवशि आय गजराज॥
तबहिं तड़ाका धनु धारन करि मार्यो शब्द बेधि बरबान।
आय समान्यो सो सरवन उर गिर्यो उतान कंठगत प्रान॥
हाय उचार्यो रत आरतस्वर सो सुनि भूप सनाका खाय।
देर न लायो उठिधायो सो आयो नदी तीर सकुचाय॥
देखो अंधक सुत डारो उत आरोपार बिधो शरगात।
नैन उघारत अरु मूंदत है आरत दशा फँसा दरशात॥
बचन न आवत कहि आनन ते अतिव मलीन दीन भइ काय।
हाल बिहालक मुनिबालक लखि नृप उर गयो शोक तम छाय॥
ठाढ़ समीपै अवनीपै लखि मुनिसुत हाथ अंजुली बांधि।
कर्यो इशारा जल पीबे कहँ कहि नहिं सकत ब्याधि बिन साधि॥
बारि अंजुली महँ तुरतै भरि भूपति दीन तासु मुख डारि।
चेत आयगो तब बालक को ताक्यो नृप दिशि नयन उघारि॥
भई बिकलता तब राजा के शोचन लग्यो माथ धरि हाथ।
कुत्सित कारज मैं कीन्ह्यों यह लीन्ह्यों बेसहि पापकी पाथ॥
अनहक मार्यों मुनि बालक यह धार्यों उर बिचार कछु नाहिं।
जन्म बिगार्यों निज हाथन ते अयशी भयों आजु जग माहिं॥
यहिबिधि शोचत जल मोचत दृग अवध भुवाल देखि बेहाल।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तिन्हैं बुझावन हित पावन बच बोलत भयो अंध मुनि बाल ॥
शोच न करिये मन भूपति बर धरिये उर बिचार कछु नाहिं ।
शाप न तुम कहँ मैं देहौं कछु लेहौं आप भोगि तन माहिं ॥
लिखी बिधाता की मेटै को भेंटै अवशि अचानक आय ।
प्रथम जन्मकी सुधिआई म्वहिं सो मैं कहौं सुनौ नरराय ॥
पूर्बजन्मको नृप बालक मैं घालक अमित जन्तु खग आदि ।
नितप्रति धनुशर कर धारण करि मारे बिबिध जीव मैं बादि ॥
भयो निर्दई मम हिरदय बहु यहि बिधि गयो बीति कछुकाल ।
एक दिनौना को भूपतिबर तुम कहँ अजब सुनावत हाल ॥
लख्यों कबूतर इक बिरवापर दम्पति बैठ प्रेम के भाय ।
मैं शर धारण करि ताहीक्षण दियो कपोत अंग बड़घाय ॥
गिस्यो लुढ़िकिकै वह धरती पर बोल्यो मरत समय यह बात ।
जन्म दूसरे.महँ भूपतिसुत तुम्हरिउ होय यही बिधि घात ॥
सोई समया प्रगटानी यह बानी तासु सत्य भइ आज ।
बाण अचानक तुम मास्यो म्वहिं धर्म समाज सेतु नरराज ॥
अन्ध हमारे पितु माता द्वउ श्रीफल बिपिन माहिं है बास ।
लै घट भरिबे जल तमसा तट आयों तिन्हैं लागि बड़ि प्यास ॥
अन्धी अन्धा को मैंहीं इक रहौं कुमार प्राण आधार ।
पालन करिहै को तिनकर अब हरिहै कौन बिपति को भार ॥
होत पियासे तब प्यावत जल बनफल लायदेत आहार ।
को अब तिनकर दुख देखै बिधि रेखै कौन मिटावनहार ॥
हा पितु माता को त्राता मैं सो इत गयो अचाका मारि ।
डगर निहारत द्वउ ह्वैहैं अब आवन चहत पूत लै बारि ॥
खबरि हमारी के पावत खन तुरतै तजैं द्वऊ जन प्रान ।
बृद्धावस्था महँ तिनकहँ यह अनहक परी आपदा आन ॥
हे नृप मोकहँ पहुँचावो उत लावो कछु बिलंब अब नाहिं ।
पानि पियावो तिन दुखियनको पावो अतिव पुण्य जगमाहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इतना कहिकै मुनिबालक वह भो बिन प्रान जानकी माय।
लखि यह करणी नृपतरणी कुल मनमें बहुतलाग पछिताय॥
का पछितायेते आवत कर होनी हती भई सो आय।
दाग बुढ़ापा महँ लाग्यो यह पाग्यो हृदय पाप पथहाय॥
यहिबिधि चिंतन करि राजा पुनि मुनिसुत मृतक देहधरि कंध।
जल परिपूरित घट हाथे गहि वहिदिशि चले रहत जहँ अंध॥
इतै हकीकति अस बीततिभै उत अब सुनौ अंधको हाल।
मारग हेरा बड़ि बेरालग आयो जब न लौटि प्रिय बाल॥
लगे बिचारन तब दंपति मन कारन भयो आजु यह काह।
जल फल लायो नहिं आयो सुत छायो कहां छोड़ि मम चाह॥
यहै बिचारत उर धारत तब फरक्यो बाम इतर दृग बाम।
जानि अमंगल ग्लानि मानिमन शोचति अशुभ काह यह राम॥
लगी बतावन पति अपनेते फरकति मोरि अमंगल आंखि।
अबलौं बनते सुत आयो नाहिं छायो उतै कहा. मनमाखि॥
कही बतकही सुनि तिरियाकी रही न धीर जासु उरमाहिं।
अन्ध रिसायो समुझायो त्यहि तिय त्वहिं तनक सलीका नाहिं॥
संशय करिबे को कारण कह शोचत बृथा बुद्धिहत नारि।
यह न बिचारत मन अपने महँ गो बन सुवन लेन फल बारि॥
पावत औरेदिन निकटै महँ आवत चलो शीघ्र त्यहि हेत।
आजु न पायो कछु अन्तिक महँ ताते गयो दूरि चित चेत॥
देर लागिबे को कारण यहि धारण करत शोच क्यों गात।
शंक निवारण करु हिरदय ते आवत घरी एक महँ तात॥
यहिबिधि दंपति दुउ आपुस महँ सुत तन बँधे नेहकी दाम।
समय बितावत बतियावत तहँ सुमिरत बार बार सुतनाम॥
तबलौं पहुँचे नृप वाही थल काँधे धरे मृतक मुनिबाल।
रहिगो अंतर तनक दूरिको दम्पति जहां बैठ बेहाल॥
धीरे धीरे तब गमने नृप मग पग परे सुखाने पात।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खरभरात सो सुनि अंधकमुनि जान्यो आय गयो प्रिय तात ॥
लागे कहिबे पितु माता तब सुत तुम आजु देर कहँ कीन ।
सुधि बिसरायो नहिं आयो त्वर भूख पियास दुःख बहु दीन ॥
कबहुँ न लागत अस समयो त्वहिं कारण भयो आजु कह तात ।
रहन उपासे दुइ दिन के हम जल फल बिना प्राण अब जात ॥
बोलत काहे नहिं साधी चुप यहि बिधि हँसी करत है कोय ।
सुनि अस बानी उन दुखियन की दशरथ दियो दृगनते रोय ॥
कहि नहिं आवत वहि अवसर कछु दंपतिदशा दुखित अवलोकि ।
जोकि निरत अति सुतसनेह महँ बिलपत भूख प्यास उररोंकि ॥
लौटे पाछे दुखकाछे नृप तब पुनि कह्यो अन्ध मुनि बानि ।
आजु सुहानी सुत तोको कह जो अस हँसी करत हठ ठानि ॥
नेह बिसास्यो पितु माता कर मास्यो भूख प्यास महँ प्रान ।
लाय पियावो जल आतुर अब चातुर पुत्र कहो मम मान ॥
यहिबिधि भाष्यो पुनि अन्धक मुनि तबहुँन पुत्र दीन कछुज्वाब ।
शंक समानी तब हिरदय महँ पानी बिना प्रान बेताब ॥
ध्यान लगायो तब अन्धक मुनि पायो नृपचरित्र सब जानि ।
सुत बिनशायो शरबेधन करि लायो इतै तौन शव पानि ॥
शिर धुनि रोवन तब लाग्यो मुनि हे सुत कहां गयो त्वहिंत्यागि ।
दुष्ट महीपति ने मास्यो त्वहिं जास्यो मोहिं बृथा बिरहागि ॥
क्षत्रि बंधु तैं यह नीको कछु कीन्हे नहीं जगत महँ काम ।
दीन्हे अतिशै दुख दुखियन को लीन्हे अयश न चीन्हे नाम ॥
मारि गिराये सुत शरते मम करते बृथा कमाये पाप ।
हृदय दुखाये सम दुखियन के ताये पुत्र शोक की ताप ॥
कहि अस बैनन लै नैनन जल दीन्ह्यो महाराज को शाप ।
पुत्र शोकवश जस बिनशत हम तस सुतशोक मरहु तुम आप ॥
ज्यहि बिधि दम्पति दुखपायो हम सुतके शोच होत तनहानि ।
अन्तावस्था महँ तुम कहँ तस परिहै पुत्र बिरहदुख जानि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनि असबानी मुनिज्ञानी की दशरथ अकथ अनंदहि पाय।
कह्यो कि होवै यह निश्चय करि जो कछु कही सही मुनिराय॥
प्रथम पुत्र को मुख पावों लखि फिरि नहिं शोच गवाँवों प्रान।
शाप न दीन्ह्यों यह भगवन तुम दीन्ह्यों मोहिं पुत्र बरदान॥
भूप बार्ता सुनि याबिधि मुनि गुनि मन लख्यो भूप की भागि।
योग न एकौ सुतपावन को नृपकी जरठ अवस्था लागि॥
अन्ध तपस्वी तब दशरथ ते भाषत भयो सत्य सब हाल।
शाप हमारी सुखकारी तोहिं भई भुवाल दानि शुभ बाल॥
माँगि पुत्रशव पुनि भूपतिते कंठ लगाय ध्याय हरिनाम।
क्षणमहँ तन तजि मुनि दम्पति दूउ गे चलि अमरराजके धाम॥
दशरथ दुःखित ह्वै अवसर त्यहि चिता बनाय मृतक पौढ़ाय।
अनल जलायो उन तीनिउँ कहँ पुनि निज ठाम पहूंचे आय॥
आय अयोध्या महँ भूपति पुनि गुरुसन कह्यो सकल यह हाल।
काल ब्यतीतो बहु याबिधि तब आयो समय सुदायक बाल॥
यज्ञ कराई तब मुनियनने प्रकटे चारि पुत्र अभिराम।
राम लषण अरु भरत शत्रुहन सुन्दर नाम बिदित जगआम॥
उतपति इनकी बतलायों मैं प्रथमैं तुम्हें जानकी माय।
कहौं हकीकति अब आगेकी सुनिये सावधान मनलाय॥
ब्याह तुम्हारो करि रघुबर पुनि घरमहँ कियो कछू दिन बास।
राजदेन हित तिन राघवको भूपति कियो हृदय महँ आस॥
गुरु अरु सचिवनते सम्मत लै कीन्ह्यों तिलक हेत सामान।
तबहिं केकयीने कोपित ह्वै नृपसे लहे उभै बरदान॥
एक भरतको मिलै राजपद दुसरे रामचन्द्र बन जायँ।
अस बरदैकै वहि केकयी को भूपति हृदय बहुत पछितायँ॥
सुन्यो हकीकति यह रघुपति जब तब पितुबचन मानिबे काज।
तन महँ बल्कल पट धारण करि गमने बनहिं त्यागिकै राज॥
तुमहूं गमनिउँ प्रभुसाथै महँ भाई लषण चले बरिआय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भई उदासी बहुनगरी महँ सगरी प्रजा उठी अकुलाय।
देखत बनकी शुभशोभा पुनि अरु मुनियनते करत मिलाप।
बसे आयकै चित्रकूटमहँ सीता लषण सहित प्रभु आप॥
प्यारे सुतको बनगमनब सुनि तापस अंधशाप अनुसार।
राजा दशरथ तन त्याग्यो पुनि जाग्यो हिये शोक बिकरार॥
भरत सँदेशा जब पायो यह आयो अवध छाँड़ि ननिहाल।
रामचंद्रको बनगमनब सुनि अरु भूपाल कालको हाल॥
भयो दुखारी महतारी की करणी बिपति मूल सब जानि।
क्रिया सवाँर्‌यो नृपदशरथ की सब बिधि लोक बेदमत ठानि॥
पुनि चलिआये रघुनन्दन ढिग पुरजन तात मातलै साथ।
हित करि भेंट्यो प्रियभाई को मेट्यो बिरह गिरहकी गाथ॥
चित्रकूट महँ रहिकै यकदिन पुनि प्रभुचरण पीठ शिर धारि।
पलटि अयोध्या महँ आये तब निवसे नंदिग्राम दुखगारि॥
इतकी हालति यह गाई हम उतकर सुनौ चरित अब माय।
चित्रकूट महँ रघुनन्दन जब बहु दिन बसे स्वच्छ थल पाय॥
इकदिन आयो तहँ सुरपति सुत महा उच्छिष्ट रूपधरि काग।
चोंच मारिकै तुवपायें महँ फिरि खल डरपि तहांते भाग॥
हाल जानिकै रघुनायक यह रिसकरि तज्यो बाण बिकराल।
उड़ँ पछिआवा खल कागाको जागा मनहुँ अग्निकी ज्वाल॥
तीनिउँ लोकन महँ आवा भ्रमि पावा कउ न अपन रखवार।
हाल बतावा तब नारदते जो कछु कीन दुष्ट ब्यवहार॥
उन समुझावा बहु कुमतीको पठवा फेरि रामके पास।
आवा शरणागत ताको लखि कीन्ह्यों प्रभुन प्राणको नास॥
एक नयन बिन करि छाँड़्यो त्यहि होई तुम्हैं बिदित यह हाल।
अन्त पधारे पुनि तहँ ते प्रभु लै सँग लषण जानकी बाल॥
भेंटि अत्रिमुनि पुनि आनँद सह मारग माहिं बिराधहि मारि।
देत अनेकन सुख मुनियनकहँ आये पञ्चबटी चित धारि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

किये बसेरा तहँ कूटीरचि जूटी अति अनंद त्यहिठाम।
लूटी बिपदा निजदासनकी फूटी भागि हते जे बाम॥
कछु दिन बीते पर आई तहँ निश्चरि शुर्पणखा प्रभुपास।
मीचु बुलाई जनु दुष्टन की चाहत होन बेगिही नास॥
प्रभुअज्ञा ते त्यहि दुष्टाके काटे लषण नाक औ कान।
पुनि खर दूषण त्रिशिरादिक लै राकस अमित किये बिनप्रान॥
हिरणा माख्यो पुनि राघवने तुम्हरो हरण भयो त्यहि साथ।
लौटि आश्रम महँ आये तब तुम बिन दुखी भये रघुनाथ॥
ढूंढ़न लागे गिरि कानन महँ तुमकहँ खोजि २ द्वउभाय।
पता न पायो दुखछायो बहु गे तुव बिरह माहिं अकुलाय॥
खोजत खोजत गे आगे तब लख्यो जटायुकेर सब हाल।
ताहि स्वर्ग दै अरु किरियाकै आगे हत्यो कबंध कराल॥
फिरिगे शबरीके आश्रम महँ ताकर जन्म सफल करि राम।
धाम आपने महँ पठयो त्यहि आयो ऋष्यमूक गिरि ठाम॥
तहां मित्रता करि कपिपति ते कीन्ह्यों बालि प्राणको नाश।
भये सहायक सुग्रीवौ तब पूरण होन हेत प्रभुआश॥
कोटिन बानर बुलवाये तब चारिउ दिशा दीन पठवाय।
खोज लगावन हित सीताको तिनमहँ एक महूँ हौं माय॥
यहि बिधि संगति भै बँदरन की प्रभुते सत्य बानि यह मानि।
मिथ्या शंका तजि माता अब करौ प्रतीति रीति पहिंचानि॥
यहि बिधि बानी सुनि हनुमतकी मानी सिया हिया बिश्वास।
जानी मन क्रम अरु बानीते है यह रामचन्द्रको दास॥
इतना निश्चय आवतही मन बाढ़ी अतिव प्रीति हिय माहिं।
उठे रोमतन अरु नयनन जल क्षणइक रही देह सुधि नाहिं॥
पुनि अस बोलीं बर बानरते हे कपि धीर बीर हनुमान।
बिरह समुंदर महँ बूड़त म्वहिं सुत तुम भयो आय जलयान॥
मैं बलिहारी सुत जाऊं तुव अब कहु स्वामि केरि कुशलात।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दूनौ भैया हैं आनँद महँ क्यहि बिधि गये इते दिन तात ॥
बहु चितकोमल रघुनन्दनको तिन उर निठुर कीन यहि भांति ।
भई निरासिनि यह दासिनि इत बीते बहुत जानि दिनराति ॥
सहज सुभायक सुखदायक जन कबहूं करत मोरि उर यादि ।
ठगढ नयनवाँ कब ह्वै हैं सुत नीके निरखि राम सुखमादि ॥
बात न आई कहि मुखते पुनि नैनन अश्रुबारि झरिलाय ।
कह्यो कि करुणाकर स्वामी ने मोकहँ दियो निपट बिसराय ॥
रामबिरह महँ लखि व्याकुल सिय बोले मधुर बचन हनुमान ।
क्षेम कुशल हैं प्रभु भाईसह तुव दुख दुखी रहत यह जान ॥
जनि मन छोटा करु माता तैं प्रभुकर दून प्रेम तुम माहिं ।
घरी महूरत अरु एकौ क्षण तुव सुधि हृदय भुलावत नाहिं ॥
सुनौ सँदेशा अब स्वामीको मोसन कह्यो जौन अकुलाय ।
तुम्हैं सुनावतहौं नीकी बिधि अस कहि मगन भयो कपिराय ॥
पुनि धरि धीरज बतलावत भो जो कछु कह्यो राम सुखधाम ।
तुव बियोग महँ हे प्यारी स्वहिं उलटो काम लगत सबठाम ॥
नये पतौवा बर बिरवनके मोकहँ परत आगि सम जानि ।
कालराति सम राति जाति अरु शशि जस सूर्यकिरण गरमानि ॥
बरछी बनसम बन कमलनको छेदत हृदय बारहीं बार ।
मेघा बरसत जल लागत सो मानहुँ तप्त तेलकी धार ॥
जौने तरुतर मैं निबसौं प्रिय सो तन पीर देत उपजाय ।
त्रिबिधि समीरै उरचीरै अस जैसे सर्प श्वास दुखदाय ॥
कहेते दुख कछु घटि जैहै ना क्यहि सन कहौं सकै को जानि ।
प्रीति हमारी अरु तेरी प्रिय मोसन भले परत पहिंचानि ॥
सो मन मेरो है तेरेढिग इतनेइँ माहिं प्रीति रस जानु ।
कहौं अगारी अब प्यारी कहँ बानि सयानि सत्य करि मानु ॥
यहिबिधि बरण्यो हनूमान जब प्रभु संदेश प्रीति दरशाय ।
सो सुनि सीता प्रेम सिंधुमहँ डूबीं देहदशा बिसराय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तब समुझायो फिरि हनुमतने माता धीर धरौ हियमाहिं ।
सुमिरौ सेवक सुखदाता प्रभु समयो शोच करनको नाहिं ॥
रघुपति प्रभुताको आनहुँ उर मानहुँ मोर बचन सतिभाय ।
होउ बिकलता बश ब्याकुल जनि भागन चहति बिपति बहिराय ॥
निश्चर खलदल सब पाँखीसम रघुपति बान अग्निकी ज्वाल ।
तामहँ जरिबरि मरिजै हैं सब ह्वै हैं काल कौर अब हाल ॥
खबरि तुम्हारी जो पावत कहुँ लावत इतक देर नहिं राम ।
इत चढ़िआवत बिनशावत खल तुम्हैं लेवाय जात निजधाम ॥
जस सूर्योदयमहँ नाशत है अगणित अंधकारको भार ।
तैसे प्रभुके शरछूटेते खल दल सकल होय संहार ॥
अबहीं माता लैजात्यों त्वहिं राकस धारि झारि मैं मारि ।
नहिं रघुनन्दनको आयसु पै ताते रह्यों हृदय महँ हारि ॥
कछुदिन जननी उरधीरज धरु ऐहैं कपिन सहित इत राम ।
खलबधि तुम कहँ लैजैहैं यश गैहैं नारदादि सबठाम ॥
सुनि असबानी कपिज्ञानीकी रानी सीय कह्यो यह बात ।
हैं ऐसेही सब बाँदर उत तुम सम छोट गातके तात ॥
इतै भयंकर तन निश्चर गन मेरु समान महा बलवान ।
तिनते लरिकै बरि ऐहैं किमि म्वहिं संदेह होत हनुमान ॥
सुनि असबानी महरानी की कपि निज गात कीन बिस्तार ।
समर भयंकर बल अगार अति कनक पहार तुल्य आकार ॥
देखि भरोसा भो सीताउर पुनि लघु गात कीन कपिजात ।
हाथ जोरिकै यह भाष्यो पुनि माता मानु मोरि यक बात ॥
नीच बाँदरन की देही महँ बल बुधि कछू न जानौ आप ।
प्रभु प्रतापते खगनायक कहँ चहैं तौ खाय लेय लघुसाँप ॥
अति मति सानी कपिबानी सुनि आनी सिया हिया संतोष ।
जानी प्रभुता धनुपानीकी मानी कपिउ बाक्य निर्दोष ॥
दूत पियारो रघुनायकको मन बच कर्म भर्म बिनजानि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भक्ति शक्ति बल बुधि सानी शुभ आशिष दीनि हर्ष उरआनि ॥
टरौ न रणते लरि पछरौ जनि मरौ न कबहुँ परौ दुखनाहिं ।
सबदिन सबछिन बिनकारण क्यहु रघुपति प्रीतिकरैं तुममाहिं ॥
आशिष सानी सियरानी की बानी सुधा सरिस सुनिकान ।
अप्रमान हर्षान हृदय महँ भो तन प्रेम मगन हनुमान ॥
महा अनंदे पग बंदे द्वउ फंदे फाटि शोचके जायँ ।
जिनपर दाया सिय मायाकी ते जन क्यों न ऐस हरषायँ ॥
हाथ जोरिकै पुनि बोल्यो कपि अब कृतकृत्य भयों मैं मात ।
गात समात न सुख सुनिकै तुव आशिष सदा सफल बिख्यात ॥
एक लालसा याहि अवसर म्वहिं स्वउ सुनि हुकुम देउ फुरमाय।
भूख बुझावों अमराई के सुंदर मधुर रूख फलखाय ॥
धीरज आवै नहिं काहू बिधि मोमन देखि देखि ललचाय ।
हुकुम तुम्हारे की देरी है ना तरु म्वहिं बिलंब नहिं माय ॥
यहि बारीकी रखवारी महँ हैं सुत सुभट निशाचर भारि ।
माता तिनकर डर नाहीं म्वहिं जो तुम हृदय लेहु मुदधारि ॥
सुनि असबानी हनूमानकी मानी सिया हृदय उतसाहु ।
क्षनक बिचार्यो मन अपने महँ पुनि भट प्रबल देखि कपिनाहु ॥
आयसु दीन्ह्यों तब हर्षित ह्वै कह्यो कि पुत्र बाटिकाहि जाहु ।
दुष्ट सँहारण पद धारण करि हिय महँ तात मधुर फल खाहु ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरात्मजश्रीमुंशी प्रयागनारायणस्याज्ञाभिगामी उन्नामप्रदेशान्तर्ग्गतमसवासीग्रामनिवासीपं० बंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखरडेसुंदरकाराडेद्वितीयोल्लासः ॥ २ ॥

गिरा गजानन अरु गिरिजापति गुरु गोबिंद चरण द्वउ ध्याय ।
प्रभु मन भावनको पावन यश भाषत बंदि यथा मतिगाय ॥
पायसु आयसु सिय मैयाते करि द्वउ पगन माहिं परणाम ।
ध्यान धारिकै प्रभु सुजानको चले अराम ओर बलधाम ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लाग बिचारन तब हिरदय महँ वारन रूप बीर हनुमान ।
करौं उपद्रव अस अस्थल यहि जो रावणौं सुनै निजकान ॥
क्रोधित ह्वै कै तब भेजिहै इत सैना सहित निशाचर ज्वान ।
ठनै परस्पर कछु बेरिया लग हम अरु उन्हैं युद्ध घमसान ॥
यह बिचारिकै मन अपने महँ पवन समान भीम हनुमान ।
आय तड़ाका अमराई महँ लागे मधुर मधुर फल खान ॥
बृक्ष उखारन पुनि लागे तहँ करि किलकिला शब्द भयमान ।
कुआँ बावली अरु तालनके ढारे तोरि फोरि सबथान ॥
तोड़त फोड़त लखि घाटनको अरु किलकिला शब्द सुनि कान ।
दौरे सारे रखवारे तहँ यावत हते निशाचर ज्वान ॥
आय गरांस्यो चौगिर्दा ते कपिको धारि २ हथियार ।
मारन लागे ललकारन कै राकस प्रबल हजारन यार ॥
देखि तमासा कपि नंदन यह बंदन कीन रामके पायँ ।
लैकै बिरवा यक सांखूकर खल दल माहिं गये समुहायँ ॥
कूदि २ कै तब चारिउ दिशि दीरघ बृक्ष घुमाय घुमाय ।
क्षण महँ मारे संहारे सब भारे सुभट निशाचर भाय ॥
गिरे अधमरे ह्वै धरती पर कौनौ हलुक घाय तन खाय ।
अतिभय पागे घरभागेते कौनिउँ भांति प्रान बचिजाय ॥
रह्यो न बिक्रम कोहु योधा महँ कपिते करै जौन संग्राम ।
चढ़िकै फाटकके छज्जापर बैठे हनूमान बलधाम ॥
देखि दुर्दशा यह बीरनकी बानर राजकेर व्यवसाय ।
डरीं निश्चरी सब तहँवां की औ सीतासन लगीं बताय ॥
को यह योधा चलिआयो इत तुमते किह्यसि बार्तालाप ।
बागउजारचसि अरुमारचसि भट धारघसि हृदयमाहिं बड़पाप ॥
हाल बतावो कहि हमते यह नातरु नीक होय नहिं काम ।
सुनि अस बानी उन रँड़ियनकी बोलतभई रामकी. बाम ॥
दुष्ट निश्चरनकी मायाको हम कछु जानिसकैं नहिं माय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बचो न एकौ क्षत खाये बिन कपि कहँ विजय दीनि करतार ।
रह्यो न योधा कोउ बाकी जब सब संग्राम भूमि भे पात
चढ़िकै फाटकपर बैठे तब अतिबल बातजात भटगात ।
बचे अधमरे ह्वै राकस जो भागि लुकाय खाय लघुघाय ।
जाय सुनायो तिन रावणको जो कछु दशा कीनि कपिराय ॥
काह बताई महराजा हम मुखते कहि न जात कछु हाल ।
होय न बाँदरु वह काहू बिधि निश्चय निशाचरनको काल ॥
जितने योधा पठवायो तुम तिन महँ बच्यो एक नहिं ज्वान ।
मारि खवायासि वैं संगर महँ हम लै भगे आपने प्रान ॥
सुनि अस बातैं उन बीरनकी तीरन बिधो मनौ कोहुँ गात ।
अतिशय बाढ़ी रिस रावणके पटकत हाथ पीसि कै दांत ॥
नैन घुमायासि बिजुकायासि मुख लाग बतान भरा अभिमान ।
कोउ न बंका भट लंका महँ यहै निदान लीन मैं जान ॥
अकिलो बाँदर यक आवा इत तौने हते हजारन ज्वान ।
कबहुँक ऐहैं सजि सैना कपि तौ कह होय हाल भगवान ॥
इतना कहतै परलै ह्वइगै सहि नहिं सकै शूर यह बात ।
बोले तत्क्षन सुत प्रहस्तको भुज फरकाय लाय रिस गात ॥
ऐसी बातैं जनि भाषौ प्रभु हैं इत अइस शूर सरदार ।
कौन चलावै इक बांदरकी करैं हजार एक आहार ॥
हुकुम तुम्हारो जो पावौं मैं लावौं अबहिं ताहि इत बाँधि ।
देखौं बिक्रम कस बानर महँ कीन्हीं ज्याहिं इत इती उपाधि ॥
जम्बुमालिको इमि गर्जत लखि रावण हुकुम दीन फुरमाय ।
सुनौ हकीकति त्यहि योधाकी देर न लगी भवन महँ आय ॥
लाले कपड़ा तन धारण करि लाली हृदय माल लटकाय ।
लाले कुण्डल धरि कानन महँ लीन्ह्यों बीर साज सजवाय ॥
अस्त्र सँभारे अनियारे कर तरकस कसी कमर महँ ज्वान ।
जुतो खच्चरनको ठाढ़ो रथ त्यहि चढ़ि करत भयो प्रस्थान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धनु टंकोर्‍यो धरि हाथे महँ पूर्‍यो दशोंदिशा आवाज ।
आय पहूंच्यो फुलवारी महँ किलकत जहां बैठ कपिराज ॥
आवत दीख्यो निशिचारी कहँ भारी बल निधान हनुमान ।
गर्जे तर्जे अति उच्चस्वर फाटन चहत मनो असमान ॥
गर्जत दीख्यसि हनुमन्ता कहँ हृदय प्रहस्त पुत्र रिसियान ।
तड़पि तड़ाका धनु धारण करि कपि उर हन्यसि सैकरन बान ॥
अर्द्धचन्द्र शर मुख महँ मार्‍यसि औ अंकुशाकार शिर माहिं ।
दशशार मार्‍यसि द्वउ बाहुन महँ बाकी बच्यो अंग कोउ नाहिं ॥
झलके बुन्दा मुख लोहूके शोभा तासु कही ना जाय ।
सुबरण बुन्दनको सींचा जनु लालो फूल कमलको आय ॥
तन महँ शायकके लागत खन अति रिस कीनि बीर हनुमान ।
इत उत ताक्यो तौ निकटै महँ पर्बत खण्ड एक दिखरान ॥
तड़पि तड़ाका वहि फाटकते पर्बत खण्ड लीन कर धारि ।
गर्जि चलायो सो राकसपर मानहुँ दियो इन्द्र पबि डारि ॥
शिला भयंकर उत आवति लखि राकस हने बेगि दश बान ।
काटि छाँटिकै भुवि डार्‍यो त्यहि तब हनुमान अधिक रिसियान ॥
बृक्ष उखार्‍यो इक साँखूकर ताहि घुमाय तानि पुनि पानि ।
सो हनि मार्‍यो त्यहि छाती महँ हियमें सुमिरि सिया महरानि ॥
लागत छाती महँ बिरवाके अद्भुत दशा भई खगराय ।
सहरथ गदहा वहि राकसकी पता न लागि कहां गइ काय ॥
भरी चौकरी तब हनुमतने मारो देखि बीर बरियार ।
बचे बचाये ते भागे भट करते डारि डारि हथियार ॥
सूनि बाटिका भै शूरन बिन कूरन पेट समानी हाय ।
रह्यो न बाकी लड़वैया कोउ तब कपि लाग बैठि सुस्ताय ॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत अब सुनौ लंककर हाल ।
खबरि पहूंची ढिगरावण के भयो प्रहस्त पुत्र बशकाल ॥
इतना सुनतै मन गुनतै तब दशमुख गयो सनाका खाय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

काह गोसइँयाँ के मर्जी है उलटो ढंग परत दिखराय ।
जिते सुरासुर जिनशूरनने सन्मुख लड़ि न सकैं सुरराज ॥
तौने शूरनको चूरन करि माऱ्यसि नीच बँदरवैं आज ।
असमन शोचत रिसबाढ़ी बहु तुरतै मंत्रि सुतन बुलवाय ॥
हुकुम सुनायासि उन सातौ कहँ जाउ तुरंत बाटिकहि धाय ।
बाँधि लयावो वहि बाँदरको ज्यहिं बहु शूर कीन्ह संहार ॥
सुनि अस आयसु वे मंत्री सुत सजिकर धरतभये हथियार ।
पहिरि बख्तरै अरु जिरहै तन लोहे टोप शीश औंधाय ॥
मुकुट मनोहर धरि माथेमहँ कुण्डल कान लये लटकाय ।
तरकस सर्कस करिहायें महँ बायें दहिन हाथ धनुबान ॥
साज साजिकै सुरनायक सम बैठे रथन आनिकै ज्वान ।
उत्तम जोड़े के घोड़े बर जोड़े रथन माहिं अभिराम ॥
लागत कोड़ेके आतुर गति चहैं तौ फाँदि जायँ सुरधाम ।
फौजें साजिगइँ बरबीरनकी डंका बजन लाग घहराय ॥
मारू मौहरि बाजन लागी गाजन लगे ध्वजा फहराय ।
सुमिरि भवानी जगरानीको लड़िबे हेत बीर बहिस्थान ॥
धावा कीन्ह्यों फुलवारीको जहँ पर रहैं बीर हनुमान ।
देर न लागी रिसजागी उर पहुँचे आय बाटिका द्वार ॥
निरख्यो फाटकके छज्जापर बांदर बैठ काल अनुहार ।
मारु मारुकै सब दौरे तब बौरे काढ़ि काढ़ि हथियार ॥
बर्षा कीन्ह्यों बहु बाननकी सातौ मंत्रि पुत्र बरियार ।
प्रलयकालकी झरिलागै जस चहुँदिशि छायजाय अँधियार ॥
तैसे बानन की बर्षाकरि लोप्यो कपि केशरी कुमार ।
घोर गर्जना करि गर्जें भट भादौं यथा मेघ घहरायँ ॥
सुनि सो बानी उन बीरनकी कपिके नैन लाल परिजायँ ।
दास सहायक रघुनायकको हियमहँ सुमिरि बारहीं बार ॥
उचकि तड़ाका वहिफाटकते नभदिशि चले मारि किलकार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बार बचायो रिपु बाननकी आनन बाय घोर घहराय।
फाँदे दुष्टनकी सैनामहँ मानहुँ बज्र गिर्यो भहराय॥
उछलि उछलिके खलमण्डलमहँ करि करि लात घात परिहार।
मर्दा गर्दामहँ बीरनको करि करि प्रलयकार चिग्घार॥
बहुतक मारे हनि मूका उर डारे बहुत नहन ते फारि।
बहुतक मींजे गहि छातीमहँ बहुतक हने पूंछ फटकारि॥
भागी सैना भय पागी तब भूल्यो अस्त्र चलाउब भाय।
रह्यो न योधा कोउ बाकी अस जो दुइघरी खेत अड़िजाय॥
भये चेत बिन वे मंत्रीसुत सातौ गिरे परे भुवि माहिं।
चहुँदिशि ताक्यो तब अंजनिसुत बाकी रह्यो बीर कोउ नाहिं॥
आय तड़ाका वहि फाटक के छज्जा उपर बैठ चुपधारि।
बन्दि दाहिने रघुनन्दन ज्यहि त्यहि को सकै समर महँ मारि॥
सारी क्यारी फुलवारी की भरिभरि रुधिर चलीं उतराय।
काग सियारन के वरये दल भल हर्षाय माँस रहे खाय॥
मानहुँ लंकापुर तीरथ महँ अंजनिसुवन कीन भण्डार।
अतिथि बुलाये दिशि चारिउके तिनको बिबिध दीन आहार॥
इतै हकीकति अस बीतति भै उत की कथा सुनौ खगराय।
कायर भागे जे संगर ते पहुँचे तुरत लंक महँ जाय॥
खबरि जनायो खल रावण को मारे गये मंत्रिसुत सात।
शोक समान्यो बहु हिरदै महँ सूख्यो अंग अंग सब गात॥
क्षनक बिचार्यो मन अपने महँ का यह होनहार कर्तार।
फिरि बोलवायसि उन बीरनको जिनके सदा युद्ध आधार॥
काल दुसरिहा बहु दीरघ तन सहैं न कबौं शत्रुकी आंच।
बिरूपाक्ष यूपाक्ष दुर्द्धरष प्रधरष भासकर्ण ये पांच॥
बहुतक जल्पत ते हिरदै महँ कबहुँक हमैं हुकुम ह्वै जाय।
देर न लागै द्वै घटिका महँ लावन मुसुक बाँधि कपि रा॥
आशा पूरी तिन शूरनकी रावण हुकुम दीन फुर .य।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जल्दी जावो तुम बगिया महँ लखौं खबीस कीस भटकाय ॥
कहँ ते आवा खल दावा सम छावा बाग मध्य उत्पात ।
नहिं भय लावा हिय मेरा कछु कीन्ह्यासि अमित निशाचरघात ॥
हुकुम पायके पति रावण को चावन भरे लड़ाके ज्वान ।
घरी महूरत महँ साजतभे चतुरंगिनी अनी अप्रमान ॥
बजे नगारा हहकारा करि जनु घन प्रलय केर घहरान ।
ध्वजा पताका फहरन लागे छहरन लागे लाल निशान ॥
बड़ी बतकही कहि गावै को गर्जत चले लंकते भाय ।
धूरि पूरिगै नभमण्डल महँ चहुँदिशि जाय अँधेरिया छाय ॥
एक महूरत नहिं लागो मग पहुँचे आय बाटिका द्वार ।
घेर्यो फाटक चौगिर्दाते करिकै मारु मारु ललकार ॥
बैठे लखिकै बर बानर को ह्वै हुशियार बीर बरियार ।
तानि कमाननके रोदा को बर्सन लगे बान बिकरार ॥
बर्षा ऋतु महँ जस पर्बत पर बर्सैं मेघ बुन्द झरिलाय ।
तैसे कपि पर चौगिर्दा ते बर्सैं सुभट शस्त्र समुदाय ॥
आय सामुहें तब दुर्द्धरने कपि तन हने पांच नाराच ।
शीश कीश के समियाने सो साने मनौं अग्नि की आंच ॥
लागत शायक के गाढ़ी रिस करि खल काल अंजनी लाल ।
मारि फलंका उड़ि ऊपर कहँ बंका रूप कीन बिकराल ॥
जहँ पर ठाढ़ो रथ दुर्द्धर को त्यहिपर गिर्यो आय अरराय ।
आठौ घोड़ा रथ दुर्द्धर सह गयो पताल माहिं समिआय ॥
देखि तमाशा यह बांदर को आति भट बिरूपाक्ष यूपाक्ष ।
बढ़े अगारी रिस भारी कै काढ़े बीरपने को काछ ॥
आय सामुहें ललकारतभे कीश खबीश होसि हुशियार ।
तैं संहारे बहु शूरन का अब नहिं बार जात यमद्वार ॥
इतना कहिकै कर गहिकै द्वउ मुद्गर गदा बज्र सम भाय ।
धाय धमंक्यो कपि कुंजर के हिय महँ हुमकि महा रिसिआय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लागत छाती महँ मुद्गर के बहु रिस कीन बीर हनुमान।
उतरि तड़ाका आसमान ते रणमहि माहिं आय नियरान॥
बृक्ष उखारयो इक सांखूकर सो दृढ़ दुओ हाथ ते तानि।
बल कै धमक्यो द्वउ बीरन पर तुरतै भई प्राणकी हानि॥
तीनि अनीपति संहारयो कपि बाकी रहे युगुल बलवान।
ते क्रोधित ह्वै कपि नन्दनपर लरिबे हेत आय समुहान॥
शूलरु पट्टिश लै हाथन महँ मारन लाग बानरहि गांसि।
इकदिशि प्रधरष ललकारत भो इकदिशि भास्कर्ण बलरासि॥
शूल घुमाई भास्कर्ण ने मारी हनूमान के गात।
घाउ आइगो तब छाती महँ पूरित रुधिर अंग दरशात॥
भरी रुधिर महँ कपि देही तब यहि बिधि परीजानि हरियान।
उदयाचल पर जनु उद्दितभो अरुण प्रभातकाल को भान॥
देखत लोहूके बाढ़ी रिस नैनन गई लालरी छाय।
भयो भयंकर तन पर्बत सम लियो उठाय शृंग इक धाय॥
पकरि घुमायो त्यहि बंगीसम औ दुष्टन दिशि दीन चलाय।
गिरी आयकै सो दुनहुन पर रथ सह गिरे धरणि भहराय॥
प्रान पयानतभे ताही क्षन रही न तनक जियन की आश।
यहि बिधि सेनापति पांचौ वे भे हनुमंत हाथते नाश॥
खलभलि परिगै तब सैनामहँ भागन लगे भगैया ज्वान।
त्यही समइयाके अवसर महँ कौतुक एक कीन हनुमान॥
एक एक सों गहि मर्यो तन अगणित शूर मारि रणगाजि।
रथके ऊपर रथ पटकत भो गजपर गजहि बाजि पर बाजि॥
रह्यो न योधा कोउ बाकी तहँ सबरे हने हांकि हनुमान।
जिनको कागज नहिं फारयो बिधि ते लैभगे आपने प्रान॥
अगणित लोथिन सों पाटी भुवि भयो मशान भूमि वह बाग।
स्यार चिह्वारिन को धावा भो बहु मड़रात कंक औ काग॥
भयो सनाका वहि अवसर पर शूर न रह्यो समर कोउ शेष।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मौन धारिकै तब बैठो कपि भटमहँ प्रथम जासु जग रेख॥
इत की हालति अस गाई कहि उतकर कहौं हाल अब गाय।
कायर भागे जे ख्यातन ते वे दशशीश पास गे धाय॥
जोरि गदोरिया बोलन लागे ओ महराजा बात वनाउ।
बड़ी दुर्दशा भै बगिया में एक न बचा बीर बिन घाउ॥
पांचौ सेनापति मारेगे अगणित सैन शूर सरदार।
एक अकेले खल बाँदर ने सब भट मींजि मिलाये क्षार॥
खैर बिधातैं यह कीन्हीं बड़ि उबरे आजु हमारे प्रान।
नातरु दुर्लभ तुव दर्शन प्रभु सब बिधि हमैं होत भगवान॥
सुनि अस बानी उन कूरन की दशआनन के होश भुलान।
मौन मारिकै मन शोचत भो घरि यक हृदय धारिकै ध्यान॥
किह्यों दिग्बिजै ज्यहि अवसर मैं तब कपि बहुतदीख बलवान।
बालि सुकण्ठी द्विविदादिक लै नील सुषेन और जँबुवान॥
यहिअसबांदरु कहुँदीख्यों ना ज्यहिबल बिपुल बरणि ना जाय।
अकिले निश्चर संहारे बहु मारे शूर पूर ब्यवसाय॥
देखा चहिये यहि बाँदर को तब कछु जानिपरैगो हाल।
अस बिचारिकै मन अपने महँ टेरयसि अछयपुत्र उत्ताल॥
आय पहूँच्यो सो रावण ढिग कीन्ह्यसि हाथ जोरि परणाम।
लगो बुझावन त्यहि रावण पुनि आयो कीश एक बलधाम॥
बहुतक योधा वैं मारे शठ डारयसि सकल बाग संहारि।
जाय बिलोको तुम ताकर ढँग है कस बलनिधान बनचारि॥
बाप आपने को आयसु लै अछयकुमार बीर बरियार।
सैनापति ते यह भाषत भो जल्दी सैन होय तय्यार॥
अक्षबीर को लै आयसु तब सेनप सेन सजावन लाग।
जालिम योधा सजि ठाढ़े भे रण में जिन्हैं बहुत अनुराग॥
पहिल नगारा मा जिनबंदी दुसरे बांधिलीन हथियार।
तिसरे नगारा के बाजत खन सैना साजि भई तय्यार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चढ़े शूरमा कोउ हाथिन पर घोड़न चढ़े छैल असवार।
रथी महारथि रथ पर चढ़िगे अपने बांधि बांधि हथियार॥
मारू डंका घहरन लागे फहरन लागे लाल निशान।
ढाढ़ी करखा बोलनलागे अपनि पराय सुनाय न कान॥
सजै दुलरुवा दशआनन को अक्षयकुमार नाम ज्यहि क्यार।
मुकुट बँधावै शिर सोने को सोने कवँच लीन तनधार॥
सुबरण तर्कस कसि कम्मर महँ सुबरण धनुष बान लै हाथ।
सुबरण रथ पै चढ़ि बैठत भो ऐंठत मुच्छ मनहुँ सुरनाथ॥
ध्वजा पताका हैं सोने के अरु सोने का परा वहार।
आठ बछेड़न सों जोतो रथ झनकत मंद मंद झनकार॥
निकलो लंका ते सैनासह अतिव जुझार अक्ष सरदार।
हाथी घोड़ा रथ आदिक के स्वर से पूरिगये दिशि चार॥
दबनि अँधेरिया दलमा आवै गर्दा चढ़ी बढ़ी असमान।
आय पहूंचे अमराई महँ बैठे जहां बीर हनुमान॥
बहिरी फाटक के छज्जा पर दीख्यो बैठ कीश बरियार।
अक्ष सामुहें रथ लायो तब बोल्यो गरू देय ललकार॥
खबर्दार हो भट मर्कट तैं मारे बहुत निशाचर ज्वान।
बाग उजारे द्रुम फारे बहु डारे तोरि फोरि मक्कान॥
काह बिचारे मन अपने तैं जो इत किहे उपद्रव आय।
देर न करिहौं हनिडरिहौं त्वहिं औ यमधाम देहौं पठवाय॥
बदला लेहौं सब बीरन को जो रणभूमि भागि ना जाय।
इतना कहिकै धनु गहिकै पुनि दीन्ह्यसि अमित बाण बर्षाय॥
हृदय बिचारयो हनुमंता तब है यह पूत रावणा क्यार।
बाण चलावन गति जानत बहु यहिसन लहब कौनबिधि पार॥
है लड़वैया भट बांका यह शाका रही लंक मा छाय।
संग सुरासुर कोउ जूटै ना सुनतै नाम भागि घर जाय॥
इत हनुमंता मन शोचत अस उत अब सुनौ खलनको हाल।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घेरयो फाटक चौगिर्दा ते दीन्हे छाय बाणके जाल॥
वार बचावत कपि धारे चुप तबलौं अक्ष जोरि धनुबान।
हने तीनि शर शिरमर्कट के जिनमहँ धरी खरी बहुसान॥
आय समाने सो खोपरी महँ लागी बहन रक्तकी धार।
घूमीं पुतरी तब हनुमत की तुरतै भये मेरु आकार॥
छाय लालरी गै नैनन मा रिस सों पूरिगयो सब गात।
खलदल खण्डनको आयो जनु अति बिकराल काल रण तात॥
जन सुखदाई रघुराई को हिय महँ सुमिरि शंक सब डारि।
उछलि उड़ाने नभऊपर को गर्जे मारि मारि किलकारि॥
खगपति वहिक्षन रणशोभाको मोसन कहि न जाय कछु हाल।
सिद्ध गंधरब सुर बिद्याधर कौतुक देखिरहे वहिकाल॥
निश्चर बँचरके लरिबे महँ सम्भ्रम गई सुरन उरछाय।
शेश सकाने नागलोक महँ भूमि चलायमान ह्वै जाय॥
घामु मंद भा दिननायक का ह्वैगइ पवन मंद खगराय।
उछल्यो बारिधि मर्यादा तजि मानहुँ प्रलय काल गयो आय॥
उड़ो देखिकै कपि अम्बर महँ पुनि धनु तानि अक्ष बलवान।
बान अनेकन हनि मारतभो जस घन तजैं बुन्द के घान॥
लाग न एकौ सो हनुमत के इत उत मुराकि गये बरकाय।
लगे बिचारन तब हिरदै महँ है यह शूर पूर ब्यवसाय॥
इतना शोचत कपिनायक के औसर पाय अक्ष बलवान।
लै रथ पहुँचो आसमान महँ कपि तन हने फेरि बहुबान॥
आवत शायक कपि नायक लखि पहुँचो अंतरिक्ष में जाय।
भे शर निष्फल खल निश्चरके तब कपिराय परम रिसिआय॥
घोर गर्जना करि गर्जे अरु रथपर गिरे आय अरराय।
लात घात सों रथ घोड़ा सब दियो पताल मध्य पठवाय॥
अक्षहि दाब्यो द्वउ जंघन बिच पंजन गहैं गरुड़ ज्यों नाग।
चक्कर दैं दै नभ मण्डल महँ बहु झिझकोरि तोरि नसताग॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गिरे आयकै पुनि बसुधा महँ ऊपर आप तरे करि ताहि।
पटक्यो पत्थर सम पृथ्वीमहँ अतिबल प्रबल बखानत जाहि॥
टूटि फूटिगे भुज जंघा शिर ह्वै गे रती रती सब हाड़।
प्रान निसरि गे खल देही ते कौतुक लखैं देव नभ ठाढ़॥
अक्षहि जूझत लखि सैना सब इत उत भागि गई भर्राय।
धन्य धन्य कहि हनुमानहिं तब देउता फूल रहे बरसाय॥
आय बिराजे पुनि फाटक पर खल दल काल अंजनीलाल।
खबरि पहूंची उत रावण ढिग मारो गयो अक्ष तुव बाल॥
इतना सुनतै भट रावण के गयो महान क्रोध तन छाय।
बेगि बोलायसि घननादै तब जिसने जिते समर सुरराय॥
हाल बतायसि सब बानर को जैं बहु सुभट कीन संहार।
अक्षकुमारहु को मारयसि ज्यहिं सुत त्यहि बांधि लाउ दरबार॥
पिता आपने को आयसु अस सुनि कै इन्द्रजीत बलवान।
धरिकर आयुध अति क्रोधित ह्वै निकसो लंक नगर ते ज्वान॥
गरुड़ बेग सम अहि जोते रथ नभ महँ निराधार जे जात।
आय पहूंच्यो त्वरबगियामहँ ज्यहि लखि समर इन्द्र भयखात॥
बैठो देख्यसि कपि फाटकपर पर्बत सरिस जासु बड़िकाय।
कपिउ बिलोक्यो त्यहि योधा कहँ निश्चय मेघनाद यह आय॥
दंत कटकटा करि गर्जै तब लीन उखारि बृक्ष इक धाय।
जाय धमंक्यो सो स्यंदन पर भो चकचूर धूर मिलिजाय॥
कूदि तड़ाका रथऊपरते उर रिस धारि कपिहि ललकारि।
अस्त्र अनेकनकी बर्षा करि चहुँदिशि रूंधि दिह्यसि बनचारि॥
बाचि उन अस्त्रन ते हनुमत तब महारिसाय बेगि सों धाय।
पहुँचि तड़ाका इन्द्रजीत ढिग पकर्‍यो भुज लपेटि चबुर्‍याय॥
पकर्‍यो दृढ़कै घननादौ तब लागी होन परस्पर मारु।
देखि तमाशा द्वउ बीरन को देउता भूलिगये निज कारु॥
हनैं परस्पर इक एकहि तब मानत हारि हृदय महँ नाहिं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जनुसुमेरुगिरि अरु कज्जलगिरि खेलत मल्लयुद्ध महिमाहिं ॥
लातन घातन नख दांतन सों काटत हनूमान त्यहि गात।
कपिहि पछारन हित रावण सुत साधत दावँ पेच की घात ॥
छल बल कीन्ह्यों इन्द्रजीत बहु कपि ते नेक न पायो पार।
हन्यो मुष्टिका तब हनुमत ने लागी हृदय चोट बिकरार ॥
पर्‍यो भड़ाका गिरि धरती पर रह्यो न तनक होश तन क्यार।
तब हनुमंतैं चढ़ि बिरवा पर कीन्ह्यासि प्रलय करनि किलकार ॥
मुर्च्छा जागी जब निश्चर की तब उरमाहिं बहुत रिसियान।
उठ्यो भड़ाका पुनि लरिबे हित कपि के निकट जाय नियरान ॥
युक्ती उक्ती बहु साध्यासि खल बिरच्यासि छल प्रपंच दरशाय।
पार न पायसि बर बानर ते साध्यसि ब्रह्म अस्त्र तब भाय ॥
ताहि भ्रमावत लखि राकस को शोचन लगे बीर हनुमान।
ब्रह्मपाश ते यह मोकहँ खल बांधन केर करत अनुमान ॥
जो नहिं मानत यहि महिमा मैं तौ मिटिजाय आजु ते आनि।
परे बंधनौ महँ अवसर यहि होय न कछू हमारी हानि ॥
इत हनुमंता यह शोचत मन गिरिजा सुनौ गुनौ मनलाय।
उत घननादौ मन ठानी अस बाँधौ कपिहि फांस महँ धाय ॥
अस उर आनत अनुमानत शठ तानत ब्रह्मफाँस कर माहिं।
धायो बल कै कपिनायक तन जा कहँ तनक शंक उर नाहिं ॥
कर संधानित ब्रह्मअस्त्र को कपि पर डारि दिह्यासि बलसाधि।
ताहि निवार्‍यो नहिं हनुमतने तब खल लिह्यासि तुरंतै बाँधि ॥
जासु नाम जपि भव बंधन ते ज्ञानी पुरुष जात छुटि भाय।
आवै बंधन महँ ताको जन यह संदेह परत दिखराय ॥
काज पूर्ती लखि मालिक की बानर बँध्यो आपही आप।
नातरु बिक्रम कह राकस को जो त्यहि बाँधिलेत चुपचाप ॥
बाँधि लयायो कपि लंका महँ पायो जानि निश्चरन हाल।
कौतुक देखन को दौरे सब स्त्री पुरुष बृद्ध औ बाल ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हल्ला हुइगा पुर सारे महँ कपि कहँ बाँधि लीन घननाद ।
भे आनंदित शठ निश्चर बहु कौतुक करन लाग उरगाद ॥
फिरि लैआये त्यहि बाँदर को जहँ दरबार दशानन क्यार ।
भारी प्रभुता निशिचारी की निरखी तहां समीरकुमार ॥
खड़े चारिहू दिशि जोरे कर यावत देव और दिगपाल ।
दृष्टि बिलोकत दशआननकी डरपत यथा गरुड़ लखि ब्याल ॥
भई न शंका कछु बानर के यद्यपि अस प्रताप खल क्यार ।
जैसे हाथिन के हलका महँ जाय अशंक सिंह बरियार ॥
ठाढ़ सामुहें लखि बाँदर को हँसि अस कही दशानन बात ।
रे खल बंदर तैं काके बल कीन्हे अमित निशाचर घात ॥
बाग उजारे सुत मारे मम सुने न मोर सुयश शठ कान ।
अबलगि शंकित नहिं देखत त्वहिं प्रान निदान काल नियरान ॥
कौन पठायो कस आयो इत काको दूत पूत क्यहि कार ।
कहां धाम अरु काह नाम तुव बेगि बताव लाव जनि बार ॥
सुनत बतकही अस रावण की लागे हनूमान बतलान ।
रेशठ निश्चर तजि मिथ्या हठ सुनु मम बचन कानधरि ध्यान ॥
जाके बल ते यहि दुनियां को माया रचै सदा अनयास ।
बिधि उपजावैं सिरजावैं हरि आखिर ताहि करैं शिव नास ॥
जाके बल ते यहि बसुधा को धरे अशेष शेश निज माथ ।
सुरकुल पालन हित धारत तन गावत सदा सुजन गुणगाथ ॥
दण्ड देवैया खल पापिन को तुम सारिखे जौन जग माहिं ।
काल ब्याल कर भखवैया जो पावत भेद बेद ज्यहि नाहिं ॥
तोरि शरासन ज्यहिं शंकर को तुव सह हत्यो नृपन को मान ।
भट खरदूषण अरु बिराध लै कियो निदान बालि के प्रान ॥
जाको किंचित् बल पाये तुम जीत्यो जगत चराचर झारि ।
त्यहि रघुनायक को पायक मैं जाकी चोरि लयायो नारि ॥
नाम हमारो हनूमान है मंत्री भट सुकंठ को जानु ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शोध लगावन हित सीताको आयों इतै सत्य बच मानु ॥
तुव प्रभुताई मैं जानत सब जग महँ बिदित भली बिधिहाल ।
किहे लड़ाई सहसबाहु ते ताको हृदय मांझ करु ख्याल ॥
बालि बहादुर ते लरिकै फिरि जो यश लहे प्रकट सो आम ।
जीते वयहि सन बल रीते तैं रणमहँ बृथा धराये नाम ॥
सुनि असबानी कपि ज्ञानीकी हँसि बहिल्याय दिह्यसि दशमाथ ।
पुनि अस भाष्यो हनूमानने सुनु मम बचन निशाचर नाथ ॥
क्षुधा सतायो जब मो कहँ बहु खायों बाग मध्य फल जाय ।
कपि स्वभाव ते तरु तोर्‌यों मैं यह अपराध कछू ना आय ॥
देह आपनी प्रिय लागति है सबकहँ सुनौ स्वामि यह बात ।
खल निशिचारिन म्वहिं मारा बहु अबहुँ पिरात तासुबश गात ॥
जिन म्वहिं मारा तिन मारा मैं यामें कहा दोष है म्वार ।
बाँधि लयावाहे ताहू पर मो कहँ सुत तुम्हार बरियार ॥
मोहिं न लज्जा कछु बाँधेकी चाहौं कीन स्वामि को काज ।
सुनौ सिखावन मम पावन तुम बिनती करौं निशाचरराज ॥
हृदय बिचारौ हठ टारौ निज धारौ पंथ सज्जनन क्यार ।
भक्तभावते को सुमिरण करि सहजै उतरि जाहु भवपार ॥

स० काल कँपै ज्यहि भौंह बिगारत हारत युद्ध जुरे बलबाहक ।
पालत शासन ब्रह्म बृषासन तासन बैर बेसाहत नाहक ॥
जो जग ढालत पालत घालत बंदि चराचर को उतसाहक ।
जानकि देहु तौ जान कि खैर नहीं यह जानकि जान कि गाहक ॥

रघुकुलनायक सब लायक वे घायक शत्रु सहायक दास ।
गये सामुहें अपने हैं त्वहिं लैहैं बोलि आपने पास ॥
ख्याल न करिहैं तुव दूषण कछु डरिहैं सब बिसारि अपराध ।
कहे हमारे ते सीता दै छोंड़ौ शत्रुभाव की साध ॥
हृदै धारिकै प्रभु पंकज पद लंका अचल करौ तुम राजि ।
ऋषिपुलस्त्यके कुलमयंक महँ होसि न खल कलंक छलसाजि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम नाम बिन बरबाणीकी शोभा नहीं होति दशभाल।
जैसे कपड़ा बिन सोहत नहिं भूषण सजे अनूपम बाल॥
राम बिरोधीकी संपति पति प्रभुता कछू काम की नाहिं।
पाई सोतौ बिन पाई सम रही न रही सरिस जगमाहिं॥
सोता नाहीं ज्यहि नदिया महँ सो बर्षा बिन जाय झुराय।
तैसे प्रभुता प्रभु द्रोही की लगै बिलात देर नहिं भाय॥
मैं प्रणरोपण करि भाषत यह करु बलवान बचन परमान।
राम बिरोधीको रक्षक अरु नाहिं न कोउ जहान महँ आन॥
ब्रह्म बिष्णु अरु शिवशंकर लग सकैं न राम शत्रुको राखि।
ताते तजिकै अभिमानै अब भजि प्रभु सुयश लेहु अभिलाखि॥
यद्यपि बंदर समुझायो बहु कहिकै नीति धर्म की बात।
तद्यपि नीकी नहिं लागी वहि बोल्यो तबहिं फेरि मुसक्यात॥
मिला बँदरवा ग्वहिं ज्ञानी गुरु भल समुझाय सिखावत ज्ञान।
यह नहिं शोचत खल बंचर मन अबहीं जान चहंतहैं प्रान॥
नीति सिखावन ग्वहिं आयो इत कीश खबीश कुमारगगामि।
उत्तर दीन्ह्यो तब बानर ने शठ तुव हदै कुमति गै जामि॥
ताते भाषत तैं उलटे बच निश्चय यही लीन मैं जानि।
सुनि प्रत्युत्तर अस हनुमत को बोल्यो अधम करेरी बानि॥
कौनो जोधा है नाहीं इत जो हरि लेय मूढ़ के प्रान।
इतना सुनतै खल धाये बहु हनुमत ओर सुनो हरियान॥
त्यही समइया के औसर तहँ मन्त्रिन सहित बिभीषण आय।
लाग बुझावन शठ रावन को नीति न तजो निशाचरराय॥
दूत मारिबो अति अनुचित है यह नहिं धर्म शूरमन क्यार।
दण्ड दीजिये अरु या कहँ कछु मारे सबै देय धिरकार॥
यह मत भायो सब काहू को तब अस कह्यो फेरि दशभाल।
अंग भंग करि यहि बंदर को पठवो स्वामि पास उत्ताल॥
पूँछ पियारी बहु बंदर को ताते करो यत्न असभाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भिजै तेलमहँ पट बांधौ दृढ़ औ फिरि आगि देउ लगवाय ॥
बिना पूँछ को जब जाई यह अपने स्वामिहिं लाइ लेवाय ।
तिनकी प्रभुता फिरि देखिहौं मैं जिनकी करत बड़ाई आय ॥
सुनि अस बानी अभिमानी की बांदर बीर बिहँसि मन माहिं ।
हृदय बिचारत मुद धारतभो शारद भै सहाय शक नाहिं ॥
जो कछु भाष्यो खलरावणने निश्चर करन लाग स्वइ ख्याल ।
तेल भिगोश पट चटपट लै बांधन लगे पूँछ ततकाल ॥
पूँछ बढ़ाई तब बांदर ने जुरथो न बस्त्र तेल पुरमाहिं ।
आगि लगायो घुमवायो पुर बाजे बजत साथ बहु जाहिं ॥
जरत बिलोक्यो जब पावक कपि तुरतै छोट रूप लिय धारि ।
निसरि तड़ाका रजुफंदाते सुमिरयो हृदै राम धनुधारि ॥
उचकि अटारी पर चढ़िकै तब लाग्यो पूँछ घुमावन ज्वान ।
देखि तमाशा सो बंदर को तिरिया सकल भई भयमान ॥
प्रभु की इच्छाते अवसर वहि डोलन लगीं पवन उंचास ।
दै किलकारी बनचारी तब बढ़िकै लाग जाय आकास ॥
एक अटारी ते दुसरी पर जाय लगाय देय तहँ आगि ।
तहँते तिसरी फिरि चौथीपर यहिबिधि प्रबल ज्वाल गै जागि ॥
एक महूरत महँ सबरे घर दीन्हें फूंकि बीर हनुमान ।
जागी आगी चौगिर्दा ते लागी लपट जाय असमान ॥
भागन लागे कढ़ि धामन ते सिगरे बाल बृद्ध निशिचारि ।
डरीं निश्चरी कढ़ि भागीं सब लागीं देन रावणहिं गारि ॥

स० पुर लंक कलंक के अंकन आंकि थपै अघपंक कि थापन ते ।
उर खैर न चाह्यसि चाह्यसि गैर जो बैर बेसाह्यसि बापन ते ॥
उतपात सिरात न एकरती वहि सीय सती के सरापन ते ।
जरि क्षार भयो घरद्वार हमार यही दहिजार के पापन ते ॥

कौन रखावै यहि अवसर पर हमरी जरी गृहस्थी जाति ।
कोऊ बपैया कोउ मैया कहि रोवत पीटि पीटि कै छाति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स० हाय उपाय न जाय कियो कछु आयपरी बिपदा शिर गाढ़ी।
खाख भई जरि संपति लाख कि माख कि बात अजौं नहिं काढ़ी॥
भागि बचैं किमिकै यहि आगिते ज्वाल कराल दशौ दिशि बाढ़ी।
ठाढ़ी सबै गरिआवती हैं वहि रावण दुष्टके दादे कि डाढ़ी॥
किला कँगूरा घर जरिकै सब ढहि ढहि गिरे भूमि भहराय।
अमित निश्चरी अरु निशचरगण जरि मिलिगये क्षारमहँ भाय॥
घोड़े हाथी रथ पक्षी पशु उपबन बाग भये जरि क्षार।
बच्यो बिभीषण को मंदिर इक सांचो भक्त जौन प्रभु क्यार॥
उलटि पलटि कै पुरि लंका सब जारी हनूमान बलवान।
जाय समुंदर महँ फाँदे तब पूंछ बुझाय क्षणक सुस्तान॥
करिकै छोटा तन आये पुनि आतुर जनकसुता के ठाम।
हाथ जोरिकै अति आनँद मन कीन्ह्यो पगन माहिं परणाम॥

इति श्रीमान्भार्गववंशावतंसश्रीमुंशीनवलकिशोरात्मजश्रीमुंशीप्रयाग-
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मितश्रीविजयराघवखण्डे
सुंदरकाण्डेतृतीयोल्लासः ३॥

जलधि थहायो स्वाभाविक ज्यहिं सीता शोक नशायो जाय।
खलन खिलायो बनफल खायो लंक अशंक जरायो भाय॥
सिय सुधि गायो पुनि रघुपति ते पायो सुभग स्वामि बरदान।
बंदि सहायक सब लायक सो पायक प्रबल बीर हनुमान॥
लंक जराउब कपि हनुमत को सुनि गिरिराजसुता हर्षाय।
लगीं निहोरन शिवशंकर को पिय पुनि कहौ और कछु गाय॥
हँसि बृषभासन तब भाषत भे गिरिजा सुनौ अग्र इतिहास।
चरित अनंता हनुमंता को मति अनुसार करत परकास॥
जारि अशंका पुरलंका पुनि बंका बीर धीर हनुमान।
आय पहूंच्यो फुलवारी महँ जहँ पर सीय मातु को थान॥
हाथ जोरि कै तिन सीता सों कह्यो बिनीत बचन कपिराय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिदा दीजिये अब माता म्वहिं प्रभुसन कहौं खबरि तुव जाय॥
राह निहारत प्रभु ह्वै हैं मम अब नहिं देर करन को काम।
पाय तुम्हारी सुधि जामहँ फिरि आवैं इतै बेगिही राम॥
अर्ज हमारी इक औरिउ है माता सुनौ ताहि मन लाय।
उचित जानि कै त्यहि पूरण करि मो कहँ बिदा देउ फुरमाय॥
तुव प्रतीति हित रघुनायक जस मो कहँ दीनि मुद्रिका माय।
तैसे तुमहूं कछु स्वामी हित आपन चीन्ह देउ हरषाय॥
सुनि अस बानी कपि ज्ञानी की रानी सिया खुशी उरआनि।
छोरि आपनी शिर चूड़ामणि प्रभुहित कपिहि दीनि सहिदानि॥
भरि द्वउ नैनन महँ आंशू पुनि बोलत भईं मनोहर बानि।
हे सुत मोरी ह्वति स्वामीसन कह्यो प्रणाम जोरि युगपानि॥
फेरि सुनायो संदेशा मम तुव किंकरी कह्यो अस हाल।
बिरद आपने को सँवरन करि हरिये नाथ मोर दुख जाल॥
कथा पुरानी बतलावत इक सो सुधि प्रभुहि दिह्यो करवाय।
चित्रकूट पर जब ठहरे रहैं मोसह सुखनिधान द्वउभाय॥
इक दिन बैठे फटिक शिलापर आपुसमाहिं रहे बतलाय।
दुष्ट जयंता चलि आयो तहँ भावी मनहुँ लीन बुलवाय॥
धरे अभागा तन कागा को जागा दुष्ट बासना माहिं।
मम ढिग आतुर चलिआयो सो लायो तनक शंक हिय नाहिं॥
चोंच चलायो मम अंगन महँ आयो घाव महा बिकरार।
पुनि भय पागा वह भागा शठ मोतन चली रुधिर की धार॥
सो लखि स्वामी उरजामी रिस तुरतै सींकबान संधानि।
सो तकि छाँड़यो वहि कागादिशि प्रान निदान करब अनुमानि॥
कबहुँ न स्वामी रिस कीन्ह्यो अस वादिन जैसि कीन हनुमान।
सो समुझायो तुम भाषण करि देख्यो काह कहत भगवान॥
यहौ बतायो कहि नीकी बिधि हनुमत पुत्र निहोरौं तोहिं।
एक महीना महँ ऐहैं नाहिं तौ फिरि जियत न पैहैं मोहिं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रान राखि हौं अब कौनी बिधि तुमहूं तात कहत हौ जान।
हृदय जुड़ानो त्वहिं देखे सुत अब फिरि ग्रसी बिपति बलवान॥
शोचत शोचत दिन बीतत जस वैसे राति जाति बिलखाति।
एक महीना को अवसर यह कटिहै बिपति माहिं क्यहि भांति॥
अस कहि सीता शुचि गीता सम रोवन लगीं मारि डिंडकार।
धीरज दीन्ह्यो तब हनुमतने कीन्ह्यो पग प्रणाम बहुबार॥
चले तहां ते पुनि आतुर गति देखन हेत स्वामि रघुराय।
एक कुदक्का करि बारिधि तट चढ़े अरिष्ट मेरु पर आय॥
घोर गर्जना करि गर्जे तहँ जनु घन प्रलय केर घहरान।
डरीं निश्चरी सो सुनिकै धुनि भे बहु गर्भपात हरियान॥
उड़े तहां ते भट हनुमत पुनि चले अकाश मारगहि धारि।
चाल उताहिल अति पवनौते मनौ न जात वेग अस प्यारि॥
पार समुंदर के आये जब जाये बायु केर बरियार।
तब आनन्दित ह्वै कीन्ह्यो तहँ अतिशै प्रलयकार किलकार॥
टिके महेन्द्राचल पर्बत पर इत जे अंगदादि बलवान।
सुनि किलकारी तिन कानन सों जान्यो आय गये हनुमान॥
ह्वै उत्साही सब बानरगण उठि कै भये मेरु पर ठाढ़।
ताकन लागे नभ मारग मन बाढ़्यो सुभट गात बेखाढ़॥
देर न लागी प्रलयागी सम पहुँच्यो बीर आय तिन पास।
लख्यो बाँदरन तब नीकी बिधि दरशत काज सिद्धि परकास॥
भे आनन्दित सब हिरदै महँ जान्यो नयो जन्म भो आज।
मिले परस्पर सब हनुमत कहँ मानहुँ मिली दरिद्रिन राज॥
मछरी बिछुरी जस पावै जल तस बाँदरन मिले हनुमान।
खगपति आनँद वहि समयाकर मोसन कहि न जात सबिधान॥
चले तहांते पुनि बाँदर सब पूंछत कहत लंकको हाल।
भीतर मधुबन के आये सब बहुभट करत जासु प्रतिपाल॥
चढ़ि चढ़ि बिरवनपर बाँदर सब लागे मधुर मधुर फल खान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बर्जन लागे रखवारे तहँ तिनकी कथा सुनौ हरियान ।
इक इक घूंसा के मारे सब भागे अपन अपन लै प्रान ।
आय बतायो कपि राजाते बँदरन बाग कीन घमसान ॥
सुनि अस हालति हर्षान्यो अति नृप सुग्रीव लीन यह जानि ।
सुधि लै आये वै सीताकी निश्चय यही परत अनुमानि ॥
खबरि लयाये बिन सीताकी मधुबन सकत कौन फल खाय ।
यहि बिधि शोचत सुग्रीवा इत उत सब कपिउ पहूंचे आय ॥
नमस्कार करि कपि नायकको भेंटे सकल प्रेम सरसाय ।
पूंछि कुशलता सब आपुस महँ लागे सुष्ठु बचन बतलाय ॥
नाथ तुम्हारी अनुकंपाते कीन्ह्यो स्वामि काज हनुमान ।
सुधि लै आये सिय माताकी राखे सकल कपिनके प्रान ॥
सुनत बानरनकी बानी यह आनी हृदय मोद कपिराज ।
मिले सहोदर पुनि हनुमतको जिन परिपूर कीन प्रभुकाज ॥
साथ आपने लै बाँदर सब पुनि सुग्रीव चले प्रभुपास ।
राम बिलोक्यो कपिमण्डल को आवत इतै चलो सहुलास ॥
हृदय बिचार्‌यो तब राघव यह निश्चय पूरकीन इन काम ।
सुधि लै आये सिय प्यारीकी मुख ह्वै रहे तेजके धाम ॥
इतना शोचत रघुनायकके सब कपि पास पहूंचे आय ।
दूनौ भाइनके पायँन महँ गे सब प्रेम सहित लपटाय ॥
उठि द्वउ भाई रघुराई तब भेंटे सबहि प्रीति दरशाय ।
पूंछि कुशलता सब बीरन ते अपने पास लीन बैठाय ॥
हाथ जोरिकै तब भल्लुकपति बोल्यो माथ नाय यह बात ।
जापर दाया रघुराया की ताको सदा कुशल दिन रात ॥
सुर मुनि मानुष त्यहि ऊपर प्रभु रहत प्रसन्न अवशि सबयाम ।
एकौ क्षिन पल ज्यहि सेवक तन हेरौ नेक नजरि तुम राम ॥
जीति तासुकी है चारिउ दिशि सोई नम्रवान गुणवान ।
तीनिउँ लोकन महँ ताको यश फैलत ठाम ठाम भगवान ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाथ तुम्हारी अनुकंपा ते सहजै सिद्धि भयो सब काज ।
जन्म सुफल भो हम सबहिन को पुनि तुव दरश पाय रघुराज ॥
कीन्हीं करणी जो हनुमत प्रभु सो मुख लाख बरणि ना जाय ।
गति मति दुसरे महँ नाहीं अस जो यह काज करत रघुराय ॥
यहि बिधि भाषण करि भल्लुकपति पुनि सब हनूमान को हाल ।
कहि समुझायो रघुनायक को जो कछु कीन लंकमहँ ख्याल ॥
परमानन्दित ह्वै राघव पुनि भेंट्यो हृदय लाय हनुमान ।
लखि सब लायक शुचि पायक निज कीन्ह्यो सबप्रकार सन्मान ॥
खबरि जानकी की पूंछ्यो पुनि प्रिय की दशा कहो सुत गाय ।
क्यहि प्रकारते निज प्रानन की रक्षा करति भरति दुख भाय ॥
करुणासानी प्रभुबानी को सुनि हनुमान आंशु बरसाय ।
भाषन लागे रघुनन्दन ते सियकी कथा यथाबिधि गाय ॥
नाम पहरुवा तुव रातिउ दिन अहैं किवाँर तुम्हारो ध्यान ।
लाग यंत्रिका चष पायन महँ निकसैं कौन राहते प्रान ॥
चलत कि बेरा समुझायो म्वहिं कथा जयन्त केरि सब गाय ।
जाय चेतायो रघुनायक को केहि अपराध दीन बिसराय ॥
दीनि निशानी निज चूड़ामणि सो लै राम हृदयमहँ लाय ।
महादुखी भे त्यहि अवसर पर जाय न दशा कही खगराय ॥
तौलौं हनुमत फिरि भाष्यो यह हे प्रभु रोय रोय सिय माय ।
कह्यो सँदेशा मिस बातैं कछु सुनौ सो मन लगाय रघुराय ॥
श्री रघुराई को भाई सह किह्यो प्रणाम मोरिह्युति तात ।
पुनि उर धीरज दै आज्ञा लै पूंछ्यो पुत्र एक यह बात ॥
मन बच क्रमते ज्यहि दासीकर पायँन माहिं लाग अनुराग ।
ताहि निराशी करि दाया हरि क्यहि अपराध नाथ किय त्याग ॥
जानत अवगुण मैं आपन इक बिछुरत त्याग कीन नहिं प्रान ।
सोऊ दूषण मम देहैं नहिं लेहैं जो बिचारि भगवान ॥
दोष हमारी दुउ आंखिन को यह प्रभु सत्य लेहिं जिय जानि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्राण निसरिबेके अवसर ये बाधा करैं आपु हित मानि ॥
नातरु क्षन में तन निन्दित यह जरिबरि क्षारमाहिं मिलि जाय।
सकल पदारथ हैं पासै महँ जिन महँ जरै बेगिही काय ॥
बिरह तुम्हारो प्रभु आगी है यह तन रुई लेहु अनुमानि ।
श्वास बयारी के लागे ते क्षण में जरै देह दुखखानि ॥
दरश पियासी ये अँखियाँ दुउ निशि दिन झरैं अश्रुकी धार ।
जरै न पावै त्यहि कारण ते यह तन बिरह आगि महँ यार ॥
संकट भारी बहु सीता को है बिन कहे नीक भगवान ।
एक महूरत त्यहि संकट महँ बीतत युग हजार परमान ॥
देर न करिये पग धरिये उत लै सब सैन साथ रघुनाथ ।
खल दल भंजन करि संगर महँ लाइय बेगि जानकी मात ॥
सुनि प्रभु सीता दुख बानर मुख अतिव उदास भये मन माहिं।
अंबुज नैनन महँ आंशू भरि क्षण इक रहे होश में नाहिं ॥
शोचन लागे फिरि हिरदै महँ ज्यहि मन बचन कर्म मम आस।
ताहि न स्वपन्यो मा चाही दुख यह सब भांति मोर उपहास ॥
भाषण कीन्ह्यो तब हनुमत ने सुनिये दीनबन्धु भगवान।
बिपति समैया है वाही क्षन जब न तुम्हार होय गुण गान ॥
खल निशिचारिन के मारन को कितनी बात राम सुखधाम ।
शत्रु जीतिकै लै आइय सिय यह कछु बड़ो कठिन नहिं काम ॥
सुनि अस बानी हनूमान की बोले अति प्रसन्न भगवान ।
हे कपि तोसम उपकारी जन दूसर नहिं जहान में आन ॥
सुर नर मुनि गुनि हैं यावत जग कोहु न कीन अइस उपकार।
धन्य तुम्हारी बल बुद्धी को यहि हित भयो तोर अवतार ॥
याको पल्टा मैं तोको कपि कबहूं दै न सकत क्यहु भांति ।
तुम्हरे सन्मुख मुख करतै महँ अतिशै मोरि दृष्टि शर्माति ॥
तोरे ऋणाते सुनु बानरबर ह्वैहौं उऋण कवौं मैं नाहिं ।
कौनिउँ युक्ती नहिं याकी अब देख्यों करि बिचार मन माहिं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अस कहि बानरतन लागे पुनि चितवन बार बार करतार।
मारे करुणा के उमग्यो तन नैनन बहन लागि जल धार॥
सुनि बर बानी निज स्वामी की मुख दिशि देखि हर्षि हनुमान।
ह्वै प्रेमाकुल गिरि पायँन महँ बोल्यो त्राहि त्राहि भगवान॥
चहत उठावनत्यहि पुनिपुनि प्रभु कपिकहँ उठब नीक नहिंलाग।
लगे सराहन त्यहि औसर सुर हनुमत धन्य तोर अनुराग॥
प्रभु पद पंकज पर कपि को शिर सो शिर धरे हाथ रघुनाथ।
दशा बिचारत अस हिरदै महँ भे मन मगन गौरि के नाथ॥
पुनि चित चेतन करि शंकर प्रभु लागे कथा कहन खगराय।
कपिहि उठायो बरिआई प्रभु हृदय लगाय लीन हरषाय॥
हाथ पकरिकै फिरि आदर सों अपने पास लीन बैठाय।
लागे पूछन पुनि लंकाको सबरो हाल स्वामि रघुराय॥
रावण रक्षित पुर लंका वह अतिशै कठिन बीर हनुमान।
ताहि जलायो तुम कौनी बिधि मोरे हृदय न आवत ध्यान॥
लखि आनंदित रघुनन्दन को बंदन कीन कीश द्वउ पाँय।
अतिव मुलायम ह्वै बोले कपि हे रघुराय दया दरिआय॥
यह मनुसाई है बंदर महँ डारते कूदि डार पर जाय।
लंक जराउब बल मेरो नहिं यह सब प्रभु प्रताप तुव आय॥
जापर दाया रघुराया तुव ताको कठिन काम कछु नाहिं।
तुव प्रताप ते बड़वागी को दहकरिसकै रुई क्षणमाहिं॥
सुनि असबानी कपि ज्ञानी की अतिव प्रसन्न भये भगवान।
जानि आपनो शुचिसेवक त्यहि करुणा दृष्टि हेरि मुसक्यान॥
अमृत बानी सों भाष्यो पुनि अहो सुजान बीर हनुमान।
जो रुचि आवै मन तुम्हरे महँ मोसन मांगि लेउ बरदान॥
जो कछु चहियो अरु कैहो तुम लहियो स्वई आजु शक नाहिं।
जन मन रञ्जनको भाषन अस सुनि कपि मुदित भयो मनमाहिं॥
अतिव नम्रता सों बोल्यो तब दूनौ हाथ जोरि शिर नाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जो मन लावों कहि गावों सुख पावों स्वई दया दरिआय ॥

स० खोजत जाहि यती बिरती ह्वै अलक्ष्य गती बन में करि डेरो ।
शूर सती सुमती सुगती न लहैं कहुँ एक रती अति हेरो ॥
पारबतीपति कीरति जा महँ अन्य लह्यो न चह्यो बहु तेरो ।
बंदि अनंदित ह्वै सुख गेहु सो देहु सनेहु सुपायँन केरो ॥

सुनि शुचिबानी कपि ज्ञानी की भाष्यो एवमस्तु रघुनाथ ।
परमानंदित ह्वै हनुमत तब कीन प्रणाम नाय महिमाथ ॥
गिरिजा रघुपति को स्वभाव जिन सूधो जानि लीन मनमाहिं ।
भजन भाव तजि तिन प्राणिन को भावत अन्यबस्तु कछुनाहिं ॥
जाके हिरदै महँ आवै यह सेवक स्वामि सुभग सम्बाद ।
निश्चै प्रभु के पग पावन की पावै भक्ति तौन उरगाद ॥
सुनि सुख खानी प्रभुबानी को बंदर पाय अनंद अपार ।
लागे करिबे अति उच्चस्वर जय जयकार बारहीं बार ॥
यहाँ हकीकति अस बीतति भै अब आगे कर सुनौ हवाल ।
राम बोलायो सुग्रीवै पुनि लागे कहन बचन करि ख्याल ॥
करौ तयारी अब चलिबेकी है नहिं देर करन को काम ।
देहु बाँदरन को आयसु अब मानहु बचन मोर बलधाम ॥
हुक्म पायकै रघुनंदन को कपिपति तुरत दूत पठवाय ।
टेरि बोलायो कपि बीरन को लैलै सैन पहूंचे आय ॥
भांति अनेकन के बंदर भट औ बहु भालु रूप बिकराल ।
आय आय कै प्रभुपायँन महँ करत प्रणाम नाय महि भाल ॥
गर्जैं तर्जैं किलकारैं सब धारैं महा हर्ष मनमाहिं ।
वहि कपि भालुन की सैनाकी गणना कहनयोग प्रिय नाहिं ॥
श्री रघुराया की दायाते भे सब अप्रमान बलवान ।
सिद्धि गजानन को सुमिरण करि कीन पयान राम भगवान ॥
शकुन सुमंगल बहु दरशे तब बरसे देव सुमन झरिलाय ।
अंग सुमंगल कर फर्कत लखि जान्यो प्रभु पयान सियमाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भये सगुनवाँ जे सीता को असगुन लखे खई दशभाल ।
काल चेतावत जनु ताको यह अब तुम परन चहत ममगाल ॥
डगरी सैना कपि भालुनकी लैकै रामचंद्रको नाम ।
पर्वत बिरवा लै हाथन महँ गर्जत चले सुभट बलधाम ॥
अगणित योधा महिमारग गहि अगणित चले गगनकी राह ।
डोली धरती खसि परती लखि शंकित भये अहिनके नाह ॥
चिघरन लागे भयपागे अति दिग्गज देखि भार अधिकार ।
शिखर पहारन के हालत भे सागर खलभलान बहुबार ॥
सूर्य चंद्रमा नर किन्नरबर सुर मुनि सकल हिये हर्षान ।
दंत कटकटा करि मर्कट भट धावत जात भूमि असमान ॥
जय रघुनंदन जय सीतापति जै सुखधाम राम भगवान ।
यहि बिधि गावत गुणस्वामी के नामी कीश भालु बलवान ॥
रहै न साधे शिर शेशहुके महाअपार भार महिक्यार ।
उचकैं लचकैं फटकारैं फन मूर्छित होत बारहींबार ॥
कच्छप पीठी को दांतन ते दाबैं बार बार उर क्रोधि ।
लेखत कच्छप के खप्पर जनु राम पयान महूरत शोधि ॥
यहि बिधि सैना सह सागर तट उतरे जाय कृपानिधि राम ।
चढ़ि चढ़ि बिरवनपर इत उत कपिदल फललगेखान बलधाम ॥
कथा सुनाई कहि इतकी अस उत अब सुनौ खलनको हाल ।
लंका दहिकै पुनि जादिन ते आये इतै अंजनीलाल ॥
भये सशंकित मन तादिन ते अतिशै यातुधान घबड़ान ।
घर घर बैठे सब शोचैं यह बचत न क्यहूभांति अब प्रान ॥
आदिन निश्चरन को आयो अब होय न क्यहुप्रकार कल्यान ।
मौत मड़ैया अब डारी इत चाहत सकल राकसन खान ॥
दूत बिक्रमी है जाकर अस बाग उजारि निश्चरन मारि ।
जारि अशंका पुर लंका कहँ पहुँच्यो फेरि आपनी पारि ॥
त्यहि के स्वामी के आये इत होइ है कौन भलाई भाय ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहि बिधि निश्चर डरपागे सब आपुस माहिं रहे बतलाय॥
सुनि पुरबासिन की बानी अस मंदोदरी हृदय अकुलानि।
जोरि गदोरिया पति रावणसे लागी कहन नीतिकी बानि॥
कही हमारी हितकारी लखि हरिसन बैर करौ जनि नाथ।
अहैं चराचरके नायक वे कालहु जिन्हैं नवावत माथ॥
दूत अकेलो तिन स्वामीको इतकरि गयो कितक उतपात।
शोचत अबहूं डरलागत उर ह्वैगे गर्भ तियनके पात॥
चहो भलाई जो आपनि पति तिनकी तिया देउ पठवाय।
नतरु कुशलता अब ह्वैहै ना जैहै लंक माहिं दुखछाय॥
तव कुल अंबुज बन जारनको सीता शीत निशासम स्वामि।
खैर न ताके दै दीन्हे बिन मानहु कही सुमति उरथामि॥
शंभु बिधातो के चाहे ते होय न कछु तुम्हार कल्यान।
ताते रिपुता तजि रघुपति ते हितते धरौ चरण महँ ध्यान॥
हैं मेंढक सम ये निश्चर गण उरग समान रामके बान।
लीलत जौलौं नहिं तौलौं पति करौ उपाय त्यागि अभिमान॥
सुनि अस बानी मन्दोदरि की हँसा ठठाय निशाचर राय।
नहिं शुमार ज्यहि अहंकार कर हठ नहिं तजै चहै तन जाय॥
सो हँसि बोल्यो मन्दोदरि ते अब मैं सांचु लीन यह जानि।
सहज स्वभावहि भयलावहि तिय मंगलमाहिं अमंगल ठानि॥
बाँदर सैना जो आवै इत तौ निश्चरन केरि बड़ि भागि।
खायँ पेट भरि कपि आमिष सब जाय बुताय भूंखकी आगि॥
सब दिन काँपैं ज्यहि रावण के डरते लोकपाल दिगपाल।
ताकी तिरिया भय लावै अस करिकै बृथा कथा उर ख्याल॥
हँस्यो दशानन अस कहिकै पुनि मन्दोदरिहि लीन उरलाय।
गमन्यो तहँ ते पुनि संसदि कहँ ममता हृदय रही अधिकाय॥
आय बिराज्यो सिंहासन पर बर दरबार मध्य खगराय।
मिली खबरिया तब ताको यह सेना सिंधु पार गइ आय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सम्मत पूंछ्यो तब मंत्रिन ते देउ सलाह करिय अब काह।
तिन अभिमानिन बतलायो यह बैठो मौनमारि मन नाह॥

स० जीत्यहु देव अदेव नृदेव तबौं न कबौं कछु मंत्र विचारा।
तीनहुँ लोक अशोक भ्रम्यो तुम सम्मुख अस्त्र कोहूं नहिंधारा॥
जीतन लायक को जगमें त्यहि है ज्यहिते सुरनायक हारा।
शोचत काह बृथा उर अंदर बंदर भालु अहार हमारा॥

बैद्य मंतिरी आचारज ये कहैं कदापि स्वहाती बात।
राज धर्म अरु तन तीनौकर देर न लगै नाश ह्वै जात॥
परी आयकै सो रावण शिर भाषैं मृषा सलाही सार।
झारि मुहदेखा एकत्रित हैं झांझरि नाव जाय किमि पार॥
समय जानिकै समुझावन को पहुँचे तहां बिभीषण आय।
सुष्ठु सलाही हैं साथै महँ बैठे भाय चरण शिर नाय॥
कह्यो बिभीषण ते रावण तब भ्राता कहौ उचित सल्लाह।
शत्रु शीशपर चढ़ि आवा अब चलिये कौन राह मत काह॥
जेठे भ्राता को भाषण अस सुनि गुनि हृदय बिभीषण साधु।
कोमल बाणी ते बोले बच प्रभु मम प्रथम क्षमौ अपराधु॥
अर्ज हमारी को सुनिये पुनि गुनिये ताहि हृदय धरि ध्यान।
अपनी मतिसम मैं भाषत हौं जस कछु अहै ज्ञान को भान॥
चहौ भलाई जो आपनि प्रभु शुभगति सुयश जक्त महँ नाम।
चौथि चन्द्रमा के दर्शन सम तुरतै तजौ पराई बाम॥
भुवन चौदहौ कर स्वामी किन होवै एक भूरि परताप।
भूतद्रोह ते सोउ तिष्ठै ना सब बिधि हृदय बिचारो आप॥
सब गुणसागर अरु नागर नर होवै सुयश उजागर आम।
तनके लालच के कीन्हे पुनि जग में होय कलंकित नाम॥
काम कोह मद मोहादिक लै ये सब स्वामि नर्क के द्वार।
इनको तजिये अरु भजिये मन श्रीकौशलकुमार सह प्यार॥
रामहिं मानो जनि मानुष तुम वे चौदहौ लोक के स्वामि।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

काल करालहु के घालक वे तिनके क्यों न होहु अनुगामि ॥
ब्रह्म अनामय अज करुणामय अजित अनादि अनंत अनाम ।
गो द्विज देवन हित आवत इत मानुष रूप धारि स्वइ राम ॥
खल दल गंजन जन रंजन प्रभु भंजनहार भूमि को भार ।
अलख निरंजन चख खंजन स्वइ राघव चिदानन्द अवतार ॥
दास सहायक सब लायक वे श्री रघुनायक सूध सुभाय ।
बैर बिसारौ तिन स्वामी ते हितसह सिया देहु पठवाय ॥
बिश्वद्रोह कृत अघ लागो ज्यहि त्यागो शरण गये नहिं ताहु ।
ऐसे करुणाकर रघुबर की प्रभु तुम अवशि शरणमहँ जाहु ॥
बारबार तुवपद लागत हौं माँगत बिनय सहित यह बात ।
दुष्टनिकंदन रघुनंदन को दै जानकी लेहु यश भ्रात ॥
कहि पठवायो निज चेला ते मो ढिग मुनिपुलस्त्य यह बात ।
भाषि सुनायों सो तुमकहँ मैं औसर जानि मानि हित तात ॥
सुनत बिभीषण की बानी यह मंत्री मालवंत मतिमान ।
नाना लागै सो रावणको अतिशय हृदय माहिं हर्षान ॥
लाग बुझावन सो रावन को कहिकै नीति रीति की बात ।
आनहु यह मत हित मानहु निज नीको कहत बिभीषण तात ॥
मालवंत को सुनि भाषण अस माषन लगो मनहिं दश भाल ।
लाखन गारी दै दोउन कहँ कीन्ह्यसि हृदय क्रोध बिकराल ॥
मोहिं सुनावत गुण गावत शठ रिपुकर नेक न लावत आनि ।
है नहिं कोऊ इन दोऊ कहँ देय उठाय पकरिकै पानि ॥
निंदित बातैं सुनि काननते उठिगो माल्यवान निज धाम ।
साधु बिभीषण फिरि भाष्यो अस करिशठ पगनमाहिं परणाम ॥
गुण औ अवगुण सब काहू महँ भाषत श्रुति पुराण यह बानि ।
गुण ते सम्पति पति प्रापत है औगुण देत बिपति महँ सानि ॥
सोई अवगुण सब भांतिन ते तुव हिय बस्यो आनिकै भाय ।
उलटी सूझत त्यहि कारण त्वहिं रिपु हित हितू शत्रु दिखराय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निश्चर कुलके संहारन को सीता कालराति सम जानि ।
तबौं न त्यागत अनुरागत त्यहि मिथ्या प्रीति रीति को ठानि ॥
स० माँगतहौं करजोरि निहोरि हयाहिय तोरि बहोरि गोसाईं ।
थोरिसि मोरि बिनय यह भोरि गुनौ किन खोरि करोरि कि नाईं ॥
मानहु पैहित जानहु ताहि सराहि मृषा न कहौं कछु भाई ।
नेहु करो रघुराई के पायँन देहु सिया जग लेहु भलाई ॥
बेदपुराणन के सम्मत युत बुध मत साहित महा हित बानि ।
कही बिभीषण शुचि सीखनरत सुंदर नीति रीति रससानि ॥
सो सुनि रिसहा ह्वै रावण खल साधुहि कही असंगत बात ।
टरिजा आँखिन के आगेते नातरु अबहिं करत तुव घात ॥
मृत्यु समीपै शठ आई तुव यह मैं जानि लीन भलिभांति ।
शत्रुबड़ाई मम आगे खल भाषत भय न तोहिं दर्शाति ॥
मोर जियावा तैं जीवत इत टहलू सरिस परो पुर माहिं ।
पक्ष बिरोधी कर भावा त्वहिं आवा मोर ख्याल उंर नाहिं ॥
को असयोधा जग बाकी शठ हठ तजि बेगि बतावसि नाम ।
जाहि न जीता मैं संगरमहँ भंगर बकै काह बेकाम ॥
स० ठानि चुको प्रन मानि चुको मन जानि चुको स्वइ बीसबिसेहौं ।
हानि गलानि कि कानि कछू नहिं आनिपरी शिर सो सहिलेहौं ॥
काह बृथा बकने झकने महँ ह्वै सकने पै यहौ गहि लेहौं ।
जीय देहौं सुत तीय देहौं धरतीय देहौं पर सीय न देहौं ॥
हमरे पुरमा बसि चाहसि तैं तपी अनाथ साथ अनुराग ।
नीति सिखावसि जनि मोकहँ इत उन्हहिं बताउ जाय यह राग ॥
अस कहि गिरिजा वहिं रावण ने मारी बिभीषणै इकलात ।
तबौं बिभीषण दुखमान्यो नहिं आन्यो जेठ भ्रात को नात ॥
यहै प्रशंसा शुचि संतन की अहै अनंत गुणन की माल ।
करै भलाई रिपुताई महँ धरै न कबौं बदी को ख्याल ॥
कही बिभीषण फिरि बाणीमृदु गही न हृदय अनादर ग्लानि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भल यह भ्राता तुम मार्‍यो म्वहिं यहिमा कछु न भई ममहानि॥
बड़े हमारे पितु सदृश तुम मानत सही वही अधिकार।
अबहूं भाषत कहि माखत नहिं रामहिं भजे होय हित त्वार॥
अस कहि गिरिजा फिरि साधू वह तजिकै सभा मंत्रि लै साथ।
नभ महँ आयो गोहरायो तब अबहूं सुनौ बचन मम नाथ॥
सौंह राम की करि भाषत प्रभु भै यह सभा काल बश तोरि।
शरण सिधारत हौं स्वामी की अब ना दिह्यो मोरि कछु खोरि॥
जबहिं बिभीषण असभाषणकरि परिहरि लंक चल्यो प्रभुपास।
आयु खोटानी जनु तबहीं ते आयो निशाचरन को नास॥
साधु अनादर के कीन्हे ते तुरतै होत बिभव की हानि।
बिपति गरेरत अघ घेरतहाठि कबहुँन आनि मिलत मुदपानि॥
जबहिं बिभीषण को त्याग्यो खल रावण तबहिं भयो बिन भाग।
होय तेज बिन जस बिषयाबश परिकरि यती त्याग बैराग॥
चले बिभीषण आनंदित तब सब सुखधाम राम के पास।
गहि नभमारग श्रुतिपारग सम बहुमन करत मनोरथ आस॥
लालकमल सम गंगाजल सम निर्मल अतिपवित्र सुखखानि।
सुमति करन के कुमति हरन के देखिहौं चरन जाय दृगतानि॥
जिन सुखदायन प्रभु पायँनको छुइ अबिकारि भई मुनिनारि।
पावन कीन्ह्यों जिन दण्डक बन दीन्ह्यों शुक्र शाप को टारि॥
हृदय लगायो जिन पायँन को सीता सब प्रकार सुखपाय।
कपट मृगा के सँग धाये जे बनमहँ खाय कंटकन घाय॥
शिव मन मानस के अंबुज जे खोजत जपी तपी धरि ध्यान।
आजु देखिहौं तिन पायँन को मोसम भाग्यवान को आन॥
धरे खराऊँ जिन पायँनकी पूजत भरत नित्त सबिधान।
ते पदपावन मनभावन के देखिहौं नैन निमेषन तान॥
करत मनोरथ यहि भांतिन मन आयो त्वरित सिंधु के पार।
जहँ बर बानर दल संयुत उत उतरे रमारमण कर्तार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कपिन बिभीषण को आवत लखि जान्यो शत्रुदूत कोउ आय।
जाय सुनायो सुग्रीवा को तिन रघुपति ते कह्यो बुझाय॥
शत्रु सहोदर चलि आयो इत मंत्रिन सहित बिभीषण नाम।
है कह आयसु प्रभु ताके हित कहिये रामचन्द्र सुखधाम॥
सुनि असबानी कपिनायक की लायक जानि राम भगवान।
राजनीति मत युत भाषत भे करिकै देशकाल अनुमान॥
बुद्धि बिशारद तुम बानरपति सम्मति मंत्रि जनन की लेहु।
होय यथोचित त्यहि कीजै फिरि सहसा शत्रु न आवन देहु॥
कहि समुझायो जब या बिधि प्रभु अंगद हाथ जोरि शिरनाय।
मंत्र आपनो कहि भाषत भो सबहि सुनाय नीति सरसाय॥
छोटो भाई यह रावण को अतिशै सुभट लिये भट साथ।
कौनौ सम्मत करि आवा इत पठवा अवशि याहि दशमाथ॥
यावत राकस खल लंका महँ सो सब शत्रु रूप दिखरात।
तिन्हैं मारिबो मत निश्चै यह मिलिबो कौन नात सों तात॥
यदि यहि साधू कहि भाषत सब आवत मनन सत्य यहि डांड़ि।
रावण लैगा हरि सीता जब तब यहिं क्यों न दीन त्यहि छांड़ि॥
याते हमरो मत याही प्रभु कपटी सबै राकसी जाति।
मुलाकाति महँ कछु नीको नहिं तजौ न राजनीति क्यहु भांति॥
उलटा लौटै यह लंका को इत नहिं काम आइबे क्यार।
तौलौं मंत्री नल बोलत भो अपने ज्ञान बुद्धि अनुसार॥
बिन मत जाने लौटारब त्यहि वाजिब मो बिचार महँ नाहिं।
ऊंचो आसन दै बैरी को बैठारिबो नीति के माहिं॥
दूत पठावो प्रभु याके ढिग पूंछौ कहत काह यह बात।
यदि यह मत मे नहिं रावण के तौ राखिये शरण में तात॥
नातरु मारिय भ्रम डारिय सब तनकौ शत्रुभाव बतलाय।
सम्मत हमरो है स्वामी यह करौ बिचारि योग्य जो आय॥
शील सयाने बुधि साने तब बोले नील जोरि द्वउहाथ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मर्जी आवे तौ अर्जी यक हमरिउ सुनौ नाथ रघुनाथ ॥
जो शरणागत यह आयो तुव सत्य अखेद भेद मिलि जाय ।
राजिवलोचन तौ राखिय यहि शोच न कछू करिय रघुराय ॥
करि अति पातक द्विज घातक किन आवै शरण चरणकी ताकि ।
अवशि राखिये त्यहि निर्भय करि जनि परिहरिय बिरदकी बाकि ॥
नील शील युत यह भाष्यो जब तब फिरि बुद्धिमान हनुमान ।
कछुक हमारिउ कुबिचारिउ की सुनिये प्रभु सुजान भगवान ॥
साधु बिभीषण को राकस जनि जानिय रामचन्द्र महराज ।
बुद्धि बिशारद श्री नारद जस अरु प्रहलाद भक्त शिरताज ॥
तैसै सेवक यहि जानो निज दीनदयाल अवध अधिपाल ।
सुजन सयानो यहि मानो प्रभु आनो मृषा हृदय जनि ख्याल ॥
कहन न पायो हनुमंता सब तबलौं दुखी बिभीषण साधु ।
बिरदकरेरी कहि टेरी उत हे प्रभु क्षमौ मोर अपराधु ॥

स० कौशल पाल दयाल अहो तुव हाल बिशाल सुन्यों बहुतेरो ।
पायँ पियादेहि धाय गये उत बारन कै जब बारन टेरो ॥
ज्यों प्रहलादने यादकरी नरसिंह ह्वै राखि लियो लखि चेरो ।
बंदि पुकारत आरत त्यों हर आरत हे हर आरत मेरो ॥

आरत बानी सुनि साधूकी पुलके प्रेम भाय भगवान ।
परमानंदित ह्वै बोले तब सुनहु सुजान बीर हनुमान ॥
बेगि बिभीषण को लावो इत सज्जन सरिस साधि सन्मान ।
सकौं न आरत लखि आरत को बिरद प्रमान देत नहिं जान ॥
करुणा सानी प्रभु बानी सुनि आनी हिय अनंद हनुमान ।
चले संग लै अंगदादि कपि साधुहि मिले सहित सन्मान ॥
तुरत बिभीषण को आगे करि गमने राम पास सहुलास ।
भये बिभीषण आनंदित तव जान्यों भई प्रपूरण आस ॥
देखि दूरिते रघुनंदन हउ नयनानन्द दानि सुखखानि ।
उत्तम सुखमा लखि राघव की रहा सो ठाढ़ एक पग तानि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स० साँवल गात प्रभा सरसात लखात छटा बरसात घटा सम।
काम लजात महा धिकखात दिखात न कैस्यहु गात लटासम॥
शारद चंदहु मंदलगै मुख चंद अमंद सोहात हटा तम।
बंदि अनंदित देखि कटा भ्रम शीश जटा द्युति बिज्जुपटा सम॥
नैन नीर भरि उर धीरज धरि सबिधि निहोरि जोरि द्वउपानि।
बानि मनोहर कहि भाषत भो हे छबि धाम राम सुखखानि॥
दुष्ट दशानन को भाई मैं अति अघधाम बिभीषण नाम।
राकस कुलमें मो उतपतिहै रहत कुठाम लंकपुर ग्राम॥
सुयश सुजानन मुखकानन सुनि आयों शरण हरण भ्रमजाल।
बिरद सँभारौ दुख टारौ मम दीनदयाल राम भूपाल॥
गिस्यो दण्डवत भुवि भाखत यह निरख्यो ताहि अयोध्यानाथ।
देर न लाये उठिधाये त्वर कर गहि नाथ बिभीषण माथ॥
झपटि उठायो हिय लायो त्यहि पायो मनहुँ रंक बड़ि राजि।
प्रीति बढ़ायो हरषायो अति किय सन्मान मान शुभसाजि॥
निज समाज महँ लै आये त्यहि अपने पास लीन बैठाय।
अंतर्यामी शुचि स्वामी पुनि पूंछन लगे हाल हरषाय॥
कुशल आपनी कहु लंकापति सह परिवार पूत तिय नाति।
निशिदिननिबसौखलमण्डलमहँ निबहतसखाधर्मक्याहिभांति॥
रीति तुम्हारी मैं जानी सब तुम्हैं अनीति सोहात न तात।
बसिबो नरकौकर नीको बरु देइ न धात दुष्ट को साथ॥
शारँगपानी की बानी सुनि गुनि अस कह्यो बिभीषण बात।
प्रभु पदपंकज रज पायेते अब सब भई मोरि कुशलात॥
कुशल जीवको नहिं तबलौं कछु स्वपन्यो मन न पाव बिश्राम।
जबलौं जगके इतमामै तजि होय न दास तुम्हारो राम॥
निबसैं तबलौं हिय नाना खल मत्सर लोभ मोह मद मान।
जबलौं हिय में तुम बसि हौ नहिं धरि बर हाथ शरासन बान॥
हृदय कोठरी महँ तबलौं प्रभु ममता अंधकार रह छाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्यहि अँधियारी महँ रागादिक बसैं उलूक आय सुख पाय ॥
जबलौं उज्ज्वल प्रभु प्रताप रबि करै न हृदय माहिं परकास ।
तबलौं कैस्यहु हिय कोठरी को होवै अंधकार नहिं नास ॥
तीनिउँ तापैं त्यहि ब्यापैं नहिं जापर तुम प्रसन्न भगवान ।
ताहि कुशलता सब ठामन महँ भाषत श्रुति पुरान परमान ॥
नीच जाति को मैं निश्चर खल कबौं न कीन सुकृत आचार ।
सब बिधि तापर अनुकम्पा करि लीन्ह्यों राखि जक्त कर्तार ॥
रूप अनूप न लखि पावैं मुनि गुनि गुनि करैं सदा ज्यहि ध्यान ।
सो प्रभु अतिशै आनंदित ह्वै भेंट्यो मोहिं सहित सन्मान ॥
भागि हमारी नहिं जानित धौं कबकी उदय भई सुखकारि ।
अछत बिलोक्यों पदकंजन को सेवत जिन्हैं बिरंचि पुरारि ॥
सुनत बिभीषण की बानी अस हँसि मुसक्यान भानुकुलभानु ।
कहि समुझावन पुनि लागे त्यहि सखा स्वभाव मोर यह जानु ॥
जानत नीकी बिधि भुशुण्डि शिव मृषा न कहौं मोरि यह बानि ।
होय चराचर को द्रोही नर कैस्यहु रहै शरण महँ आनि ॥
नाना औगुण तजि ताके मैं साधु समान करौं गुणवान ।
यहि महँ शंका कछु नाहीं है अन्तहु ताहि देहुँ निजथान ॥

स० मात पिता हित पुत्र कलत्र जहां लगि नातरह्यो जगजोरी ।
धाम अराम धरा धन ग्राम सबै अनुराग के ताग बटोरी ॥
बंदि भले बटिकै मनसों कसि मो पदमें फिरि बाँधहि डोरी ।
सज्जन सो हिय कैसे बसै मम चोर हिये निबसै जसचोरी ॥

तुम सम सज्जन म्वहिं प्यारे अति तिनके हेत लेत अवतार ।
दूसर कारण कछु या महँ नहिं मानहुँ सखा सत्य ब्यवहार ॥
सगुण उपासक परकासक हित अतिशै निरत नीति पथमायँ ।
द्विज पद प्रेमी दृढ़नेमी नर मोहिं पियार प्राणकी नायँ ॥
ये गुण तुम में सब लंकापति ताते मोहिं प्रीय तुम लाग ।
भयो अनंदित अति हिरदै मम तुम्हरो देखि स्वच्छ अनुराग ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनि यह बानी रघुनंदनकी जै जै कार करन कपि लाग।
हृदय बिभीषण हर्षाने अति जाने परम आपने भाग॥
शिर नवायकै पद पंकज महँ करत प्रणाम बारहीं बार।
दया दयाकर की अतिशै लखि हृदय समात न प्रेम अपार॥
सुनौ चराचर के स्वामी प्रभु हिय कछु रह्यो प्रथम को भाव।
लखि पदपंकज त्यहि कारण ते बाढ़्यो प्रीति केर दरियाव॥
अब आनंदित ह्वै सेवक पर इतनी अर्ज एक सुनि लेहु।
शिव मन भावनि सरसावनि सुख आपनि भक्ति नाथ म्वहिं देहु॥
एवमस्तु कहि रघुनायक पुनि मांग्यो तुरत सिंधुको पानि।
कहि बिभीषणै समुझायो अस सुंदर मधुर मनोहर बानि॥
यदपि तुम्हारी नहिं इच्छा कछु मानहुँ सखा तदपि यह बात।
दर्शन मिथ्या मम नाहीं जग करत पुराण वेद बिख्यात॥
असकहिकरुणाकरदीन्ह्यों करि निजकर राजतिलक त्यहिमाथ।
सुमन सुबर्षे सुर हर्षे मन कहि कहि धन्य धन्य रघुनाथ॥
क्रोध दशानन को आगी जनु श्वास समीर ज्वाल बिकराल।
जरत बिभीषण को राख्यो प्रभु दीन सुराज कीन भूपाल॥
जो सुख संपति शिव रावण को दीन्ह्यो जबहिं दीन दशमाथ।
तौन बिभीषण को संपति सुख क्षणमहँ सकुचि दीन रघुनाथ॥
ऐसे स्वामी को त्यागन करि जो नर भजै अन्य प्रभु जाय।
निश्चय जानहु त्यहि मानुष को पशु बिन सींग पूंछको आय॥
जानि आपनो शुचि सेवक त्यहि लीन्ह्यो शरण माहिं अपनाय।
लखि यह करणी रघुनंदन की गे कपि बृन्द महा हर्षाय॥
जानि सुऔसर पुनि बोले प्रभु सुनु लंकेश बीर कपिराज।
अगम समुंदर यह उतरब किमि ह्वै है कौन भांति यह काज॥
कह्यो बिभीषण तब सम्मत शुभ सुनिये बल निधान भगवान।
सिंधु करोरिन को शोषक यह यद्यपि नाथ हाथको बान॥
तदपि न त्यागिय राजनीति प्रभु अनुचित नृप सुभाव यह आय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रिस जनि धरिये मुद भरिये उर करिये बिनै सिंधु पहँ जाय ॥
कुलगुरु तुम्हरो है बारिधि यह देहै अवशि युक्ति बतलाय ।
बिना परिश्रम कपि सैना सब ह्वै है उतरि पार रघुराय ॥
सखा बतायो तुम नीको मत करिबे यहै शोच बिसराय ।
दैव सहायक ह्वै जैहै जो तौ सब काज जाय बनि भाय ॥
नीक न लाग्यो यह लक्ष्मण को भे बहु दुखी सुनत प्रभु बात ।
हाथ जोरिकै तब बोलत भे बरबीरता जगत बिख्यात ॥
दैव भरोसा को मतलब कह सुनिये दीनबंधु भगवान ।
देर न करिये रिस धरिये मन सोखिय सिंधु एकही बान ॥
दैव भरोसा है कूरन हित जिनमें कछू पराक्रम नाहिं ।
युक्ति साधिबो नहिं जानत कछु दैवहि रटत रहत मनमाहिं ॥
हँसे अवधपति सुनि बानी अस पुनि लक्ष्मणैं कह्यो समुझाय ।
ऐसइ करिबे दैव बिसरिबे धीरज धरौ हृदय महँ भाय ॥
असकहि अनुजहि दै सीखन शुभ सिंधुसमीप गये रघुराय ।
अपनो कुलगुरु त्यहि बोधन करि प्रथम प्रणाम कीन शिरनाय ॥
डारि कुशासन पुनि आसन करि तटपर बैठिगये धरिध्यान ।
इतै हकीकति अस बीततिभै उतकर चरित सुनौ हरियान ॥
जबहिं बिभीषण तजि लंकापुर आये इतै रामढिग भाय ।
हाल जानिबेहित पाछे तब रावण दूत दीन पठवाय ॥
सो चलि आयो जहँ राघवदल छलसे रूप कपिन को धारि ।
लख्यो बिभीषण को कौतुक सब मिलतै राम दीन दुख टारि ॥
भूप बनायो त्यहि लंकाको शंका सकल नाशि भगवान ।
ये गुण रघुपति के देखत चर हृदय अनंद माहिं अधिकान ॥
जाहिर ह्वैकै रघुनंदन को लग्यो स्वभाव सराहन चारु ।
प्रेमसमूल्यो तनफूल्यो अति भूल्यो कपटकेर ब्यवहारु ॥
देखि निशाचर तन ताको तब बँदरन शत्रुदूत पहिंचानि ।
पकरि तड़ाका करि बंधन महँ बहुदुख दियो कटकमें आनि ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनि लै आये कपि राजा पहँ तिन अस हुकुम दीन फुरमाय ॥
अंग भंग करि यहि राकस को पठवो जहां निशाचरराय ।
हुक्म पायकै कपिनायक को बंदर स्वइ उपाय रचि भाय ॥
मसी लगायो त्यहि आनन में दलके ओर पास घुमवाय ।
करन ताड़ना बहु लागे कपि बरणी जो न जाय खगराय ॥
कान नासिकाके काटन को कीन्ह्यों हृदय माहिं अनुमान ।
दूत दोहाई तब दीन्ही यह रक्षा करिय राम भगवान ॥
सौंह दिवायो पुनि बँदरन को काटै जो हमार श्रुति नाक ।
ताहि दोहाई रघुराजाकी कीन्ह्यों श्रवण लषण यह बाक ॥
पास आपने बुलवायो तिन दीन बिलोकि दीन छुड़वाय ।
दीनि पत्रिका पुनि ताको लिखि दीन्ह्यों दुष्ट रावणहिं जाय ॥
कहि समुझायो त्यहि पापिहि यह लक्ष्मण बचन बाँचु मनलाय ।
खैर आपनी जो चाहसि शठ हठ तजि सिया देहु पठवाय ॥
काल तुम्हारो चलिआवा नतु मानहुँ सत्य सत्य यह बात ।
सुनि यह बानी भट लक्ष्मणकी चलिभे दूत हृदय हर्षात ॥
आय पहूंच्यो पुर लंकामहँ रावण सभा जाय शिरनाय ।
रह्योठाढ़ ह्वै त्यहि सन्मुखमहँ तब त्यहि लख्यो निशाचरराय ॥
हाल हकीकति सब पूंछतभो कहु शुक दूत अपनि कुशलात ।
खैर बिभीषणकी भाषसि पुनि राखसि जनि छिपाय कछुबात ॥
मीचु हँकारी ज्यहिं अपने कर तपी अनाथ बनायसि नाथ ।
छांड़्यसि सुंदर सुख लंका कर घुनसम पीसिजाय यवसाथ ॥
रीछ बँदरवनकी सेनाको पुनि कहि मोहिं बतावसि हाल ।
काल बुलाई जो आई इत सत्य दिखात जात यह ख्याल ॥
अबलगि तिनके तन जीवनकर मृदुचित सिंधु भयो रखवार ।
अब ना बचिहैं क्यहु भांतिनते जैहैं अवशि बेगि यमद्वार ॥
भाषु तपस्विनकी बातैं पुनि जिनके हृदय मोरि बड़ि त्रास ।
राति न निद्रा दिन भोजन नहिं छाँड़े बैठ जियनकी आस ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तोहिं भेंटाने की फिरिगे घर सुनिकै मोरि बीरता कान ।
कसबतलावत नहिं रिपुदल बल खल क्यों भयो तोर मुखम्लान॥
हाथ जोरिकै चर बोलो तब खोलो मानहुँ जहर पेटार ।
नाथ कृपा करि जस पूंछ्यो यह तैसे सुनहु रोष मनमार ॥
मिल्यो जायकै जब इतते चलि साधु बिभीषण अनुज तुम्हार ।
देर न लागी मुद जागी उर दीन्ह्यों रामतिलक त्यहि सार ॥
म्वहिं पहिचानत चर रावणकर बँदरन बहुतु ताड़ना कीनि ।
काटन लागे श्रुति नासा जब तब मैं सौंह रामकी दीनि ॥
बड़ी कठिनताते छांड़्यो तब अति दुर्दशा माहिं म्वहिं डारि ।
रिच्छ बाँदरन की सैनाकर का मैं कहहुँ हाल अमरारि ॥
शेष जो पावैं सौकरोरि मुख संख्या तबहुँ न सकैं बताय ।
रंग अनेकनके भालू कपि बिकटानन बिशाल सब काय ॥
बाग उजारी ज्यहि बाँदरने जारी लंक शंक बिन आय ।
बहु निशिचारी हनिमारयो ज्यहिं सो उत छोट बीर दिखराय ॥
वहिते भारी तहँ अगणित भट अति बलवान तेजकी रासि ।
द्विबिद मयन्दी कुमुद नीलनल दधिमुख अंगदादि बिकटासि ॥
ये सब बाँदर कपिनायक सम बिक्रमवान मोहिं दिखरान ।
और करोरिन अस योधा तहँ सकै बखानि काहि अस ज्ञान ॥
रामकृपाते बल तिनके अस गनै न निज समान भट आन ।
तीनिउँ लोकनमहँ आवैं फिरि सन्मुख कोउ न होय मैदान ॥
सुन्यों दशानन मैं कानन जो सो कहि तुमहिं बतावों हाल ।
पद्ुम अठारह कपि सेनापति हैं अतिबल बिशाल बिकराल ॥
कौनो बाँदर अस नाहीं प्रभु दल महँ मोहिं पर्यो दिखलाय ।
तुम्हें न जीतै जो संगर महँ अधिकी कहौं काह बतलाय ॥
मारे रिसके कर मीजैं सब आयसु पै न देत रघुराय ।
ना तरु सोखैं धरि सागर कहँ डारैं नक्र ब्याल भख खाय ॥
परबत फारैं नाखूनन ते मिलवैं मर्दि गर्दि दशमाथ ।
CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देर न आनै हति राकस कुल सानै लंक पंक महँ नाथ ॥
गर्जैं तर्जैं अरु लर्जैं मन इत आइबे हेत अमरारि।
शंक न लावैं कछु हिरदै महँ धावैं मारि मारि किलकारि ॥
इकतौ सहजै स्वाभाविक प्रभु बाँदर भालु होत बरियार।
दुजे सहायक रघुनायक प्रभु करैं अपार काल संहार ॥

क० कौशलेश कुल दिनेश को अशेश ओजलेश श्री महेश औ गणेश शेश ते न गाय जाय। सुयश बेश देश देश पूरित जस शुचि निशेश रहत हरष महँ हमेश ज्यहि खगेश पाय पाय ॥ शुचि सुबेश हर कलेश मानत निशिदिन निदेश सुर सुरेश औ धनेश पग सुदेश ध्याय ध्याय। बंदितासु आसुरेश भाषत तुम नर नरेश ज्यहि रमेश पारमेश भाषत श्रुति गाय गाय ॥

सिंधु सैकरन को सोखै धरि यद्यपि रामकेर इक बान।
तद्यपि नीति न उन त्याग्यो कछु अस मर्यादवंत भगवान ॥
युक्ति बिभीषण सों पूछ्यो तब उनहुँन कही उचित सल्लाह।
मानि सो सम्मत अति बिनतीसह मांगत बैठि सिंधुसों राह ॥
हँसा भवानी सुनि रावण अस दूतहि कह्यो बहुरि रिसिआय।
बकु जनि मिथ्या खल जान्यों मैं रिपु बल बुद्धि और ब्यवसाय ॥
ऐसी मति पर का करि हैं वे दूजे कीश सहायक पाय।
तीजे कादर को सम्मत लै मचले सिंधुकिनारे जाय ॥
यही बँभनई पर लावत मन करिबो निशाचरन ते रारि।
सचिव बिभीषण अस कादर जहँ तहँ का देर होत मैं हारि ॥
दुष्ट दशानन की बाणी सुनि दूतहु हृदय गई रिस बाढ़ि।
जानि सुऔसर निज फेंटाते लीन्ह्यसि तुरत पत्रिका काढ़ि ॥
दीनि पत्रिका यह लिखिकै प्रभु तुम्हरे हेत राम लघुभाय।
गहरु न लावहु बँचवावहु यहि सुनतै हृदय जूड़ ह्वैजाय ॥
बिहँसि दशानन त्यहि पातीको लीन्ह्यसि बाम हाथते भाय।
लाग बँचावन यक मंत्री ते अपना सुनन लाग मनलाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मनहिं रिझावसि जनि बातन महँ नाशत बृथा दुष्ट परिवार ।
राम बिरोधे ते बचिहै ना जो शिव बिष्णु होयँ रखवार ॥
तजि अभिमानै हित आनै तौ प्रभुकी चरण शरण महँ आउ ।
रघुपति शायक सुठि पावकमहँ जनि कुल सहित आपु जरवाउ ॥
सुनिकै पाती अस लक्ष्मणकी बोल्यो कछु सभीत मुसक्याय ।
मिथ्या बातनके सुनिबे महँ मोरे हृदय क्रोध अधिकाय ॥
बृथा बतकही लघु तपसीकी आवत सुने सबहि परिहास ।
जैसे कोऊ परि धरती महँ पकरा चहै हाथ आकास ॥
क्रोधित ह्वै कै शुक बोल्यो तब है सब सत्य स्वामि यह बानि ।
हृदय बिचारहु रिसधारहु जनि है अभिमान माहिं बड़िहानि ॥
बैर बिसारौ रघुनायक सन डारौ बृथा मोह को ख्याल ।
मानुष मानौ जनि स्वामी त्यहि जो बिकराल काल को काल ॥
देउ जानकी रघुनाथै प्रभु साधौ मित्र भाव ब्यवहार ।
होय भलाई सब भांतिन ते इतना कहा मानिल्यो म्वार ॥
देबु जानकी को भाष्यो शुक सो सुनि दुष्ट दशानन तात ।
हिय महँ धारी अतिभारी रिस मारी दूत हृदय महँ लात ॥
माथ नायकै सो सज्जन चर आयो तुरत रामके पास ।
पग प्रणाम करि कहि भाष्यो पुनि आपनि कथा सकलसहुलास ॥
राम कृपाते गति पायो निज छायो हृदय माहिं मुद आनि ।
शाप पायकै मुनि अगस्त्य को राकस भयो रह्यो मुनि ज्ञानि ॥
बंदि रामपद आनन्दित पुनि आयो तुरत आपने धाम ।
इतै हकीकति अस बीतति भै आगे सुनौ चरित अभिराम ॥
बैठे प्रभुको वहि सागर तट गे जब बीति तीन दिन भाय ।
बिनय न मानी जड़ सागर ने तब रघुनाथ उठे रिसिआय ॥
नीच नम्रता सों मानत नहिं निश्चय भई आज यह बात ।
उन्हैं ताड़नै फल वाजिबहै भय बिन कहुँ न प्रीति दरशात ॥
लाउ लक्ष्मण धनुशायक मम सोखौं सिंधु अग्निशर मारि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

काम नम्रता को नाहीं अब मैं यह मंत्र लीन निर्द्धारि ॥
बिनती करिबो जन मूरुखते धरिबो नेह कुटिल के साथ।
नीति उचरिबो कंजूसनते बिषयी नरहि ज्ञानकी गाथ ॥
बिरति बखानब बहुलोभी से क्रोधिहि शांत होनकी बात।
बीज बवाउब महि ऊसर में निश्चय सकल बृथा ह्वैजात ॥
अस कहि धन्वा संधान्यो प्रभु तान्यो गुनहि जोरि नाराच।
उमड़ी सागर उर औसर त्यहि अति बिकराल ज्वालकी आंच ॥
जीव बसैया जल भीतर के मछरी मगर गोह घरियार।
चिघरन लागे अति ब्याकुल ह्वै जान्यो उदधि रामब्यापार ॥
सुबरण थारा भरि रतनन सों धरिकै हाथ नाथके पास।
आयो चलिकै धरि भूसुरतन जागी हृदय महाभय त्रास ॥

स० चंदन गंधि घिसेही पसारत हारत ज्ञानहिं ते जिमिदंभा।
बंदेहिते सुख सज्जन मानत रंदेहिते सुधियात है खंभा ॥
जानेहिंते रुचि होतहिये महँ छानेहिंते दरशै शुचिअंभा।
डाटेहिते सुधरै तिमि नीच औ काटेहिते सुफरै फिरि रंभा ॥

अंबुधि खंबुधि बहु डर्पतउर परस्यो प्रीति सहित प्रभु पायँ।
करहु क्षमापन मम दूषण यह हे रघुनाथ चराचर सायँ ॥
पानी पावक पबि पवनौ लै बसुधा सहित स्वामि आकाश।
इनकी करणी स्वाभाविक जड़ बेद पुराण करत परकाश ॥
तुम्हरी अज्ञाते मायाने बिरच्यो इन्हैं सृष्टि के हेत।
ज्यहिहित आयसु जस स्वामी तुव सो तस रहैं गहैं चितचेत ॥
मोहिं सिखायो भलकीन्ह्यो प्रभु तुम्हरिहि कीनि मोरि मर्याद।
पशु तिय ढोलक अरु अन्त्यजशठ ताड़ेहि सूधहोत असुराद ॥
तुव प्रतापते रघुनंदन प्रभु याही क्षन सुखाय हम जाब।
उतरि जाइहैं सब सैना तुव मोरि नशाय जायहै आब ॥
राउर अज्ञा अति अपेल जग भाषत भलीभांति श्रुतिचारि।
मनमें आवै सो करिये प्रभु हमको सब प्रकार स्वीकार ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखि नम्रता इमि बारिधिकी बोले रामचन्द्र मुसकाय ।
ज्यहिबिधि उतरै कपिसैना यह तात सो युक्ति देहु बतलाय ॥
नाथ नील नल्ल कपि भाई द्वउ बालक बिश्वकर्म के जानु ।
इनकी माताको दीन्ह्यो यह इनके बाप सुभग बरदानु ॥
पुत्र तुम्हारे अति कारीगर ह्वै हैं हम समान गुणवान ।
इनके परसे ते पानी महँ तरिहैं अति बिशाल पाषान ॥
सेतु बाँधिहैं ये सहजे महँ ह्वै हैं बे प्रयास सब काम ।
हमहूं प्रभुता धरि हिरदै तुव बलसम होब सहायक राम ॥
यहि बिधि बंधन बँधवावो प्रभु सुंदर सुयश जाय जग छाय ।
कायम रहिहै मर्यादा मम ज्यादा कहौं काह अब गाय ॥
नागर सागरकी बाणी सुनि बोले सुयश उजागर राम ।
तुम्हरे शोषनहित धायो हम जो यह सफल बाण मतिधाम ॥
कौन ठामपर त्यहि छोड़ैं हम सो तुव बेगि देउ बतलाय ।
सुनि यहबानी धनुपानी की सागर कहन लाग समुझाय ॥
बिदितलोक महँ जसराघव तुम अतिशय पुण्यवान गुणवान ।
तैसे उत्तरदिशि जाहिर यक शुचि द्रुमकुल्य नाम अस्थान ॥
तहँ दुखदायक दुष्कर्मी खल बहु आभीर करत हैं बास ।
तिनपर छोड़ो यहि बाणहि प्रभु औ करिदेव खलन को नास ॥
बचन मनोहर सुनि सागर के तज्यो नराच राम बलधाम ।
पहुँच्यो ज्यहिथल वह शायक त्यहि मरुकान्तार प्रकटभो नाम ॥
प्रबिशि रसातल महँ पहुँच्यो शर तहँते कढ़ी प्रबल जलधार ।
नामकूपब्रण त्यहि भाषत सब जगमहँ अहै प्रकट अधिकार ॥
भयो तुरंतै उन पापिन को शायक लगत नाश खगराय ।
भो आनंदित अति अंबुधि तब प्रभुकहँ किय प्रणाम शिरनाय ॥
बिदामाँगिकै पुनि सागर वह गमन्यो तुरत आपने धाम ।
देखि सफलता निज कारजकी मन मुद लह्यो राम अभिराम ॥
आय पहूँचे पुनि सैना महँ लागे होन मंगलाचार ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यह सुखदायक यश राघवको बरण्यो बंदि बुद्धि अनुसार ॥
कलिमलनाशक परकाशक बल बिद्या बुधि बिबेक बिज्ञान ।
सुनैं सुनावैं अरु गावैं जे तिनकर करैं राम कल्यान ॥
यहि भवसागर के तरिबे कहँ नाहिंन अन्य पदारथ सार ।
मंगलदायक अघ घायक यह जस श्री रामचरित आधार ॥
छंदप्रबंधित करि भाष्यो यहि जस कछु रही चित्तकी साध ।
दोष न लावैं कछु सज्जन जन करिकै क्षमाबंधि अपराध ॥
प्रागनरायणकी अज्ञा लहि यह शुचि ग्रंथ कीन परकास ।
श्री रघुराया की दायाते पूरण भयो चौथ उल्लास ॥

इति श्रीभार्गववंशावतंसश्रीमान्मुंशीनवलकिशोरस्यात्मजश्रीमुंशीप्रयाग-
नारायणस्याज्ञाभिगामीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितबंदीदीनदीक्षितनिर्मितेश्रीविजयराघवखण्डे
सुन्दरकाण्डे चतुर्थोल्लासः ॥
समाप्तोयं सुन्दरकाण्डः
इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विजयराघवखण्ड आल्हा

अर्थात्

आल्हाछन्द में सम्पूर्ण रामायण।

कविवर पं० बन्दीदीनजी दीक्षित कृत। एक पन्थ दो काज। गाना का गाना और ईश्वर का नाम। आजकल साधारण मनुष्य आल्हाछन्द के ग्रन्थ अधिकतर पसन्द करते हैं—यही सोचकर उक्त पण्डितजी से तुलसी-कृत रामायण को आल्हाछन्द में तैयार कराया है। इसमें रामायण के सातों काण्डों की सम्पूर्ण कथा अति मनोहर, सुललित, सरल पद्य-भाषा में वर्णन की गई है। कविता इतनी सरल है कि प्रत्येक मनुष्य अनायास ही इसे समझ सकता है। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, शृङ्गार एवं वीर-रस से भरा हुआ ऐसा उत्तम ग्रन्थ प्रत्येक मनुष्य के पढ़ने-योग्य है। विशेषकर आल्हारसिकों को यह रामायण अवश्य ख़रीदनी चाहिए। प्रायः ६०० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल २॥) रक्खा गया है।

पुस्तक मिलने का पताः—

मुंशी विष्णुनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor